इकाई 17

स्वप्नवासवदत्तम् नाटक का पर्यावलोकन

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य

हम एम० ए०उत्तरार्द्ध के पाठ्यक्रम कोड MASA-06 (नाटक तथा नाट्यशास्त्र) के अन्तर्गत स्वप्नवासवदत्तम् नाटक का पर्यावलोकन नामक इकाई का अध्ययन करने जा रहे हैं। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद हम निम्नलिखित तथ्यों का ज्ञान कर पायेंगें –

- भास के 13 नाटक किस प्रकार अस्तित्व में आये ?
- भास के काल निर्णय सम्बन्धी मत कौन कौन से है ?
- भास की रचनाओं के सामान्य परिचय का ज्ञान।
- भास की भाषा शैली कैसी है ?
- स्वप्नवासवदत्तम् नामक नाटक का नामकरण, समीक्षा, चरित्र चित्रण एवं पात्रों के परिचय का ज्ञान।

17.1 प्रस्तावना

साहित्य के सभी प्रकारों में रूपक या नाट्य श्रेष्ठ माना गया है। इसकी रचना को कवित्व की अन्तिम सीमा कहा जाता है- नाटकान्तं कवित्वम्। वामन ने काव्यालंकारसूत्र में (1/3/30) कहा है- सन्दर्भेषु दशरूपकं श्रेयः। कारण यह है कि यह चित्रपट के समान अनेक विशिष्टताओं से युक्त है। इतनी

विशिष्टताएँ अन्य काव्यभेदों में नहीं होती। रूपक में गद्य-पद्य दोनों का मिश्रण तो रहता ही है, इसे सुनने के अरिक्त देखा भी जाता है। श्रव्य की अपेक्षा 'दृश्य' का अधिक सघन प्रभाव होता है। संस्कृत नाट्य साहित्य का विकास क्रमशः वैदिककाल से ही प्रारंभ हो गया था। वेदों के पश्चात् रामायण एवं महाभारत में भी नाटक के संकेत प्राप्त होते हैं। पतञ्जलि ने ''महाभाष्य'' में ''कंसवध'' तथा ''बलिवध'' दो नाटकों का नामोल्लेख किया है। महाभाष्य में ''रसिको नटः'' पद सिद्ध करता है कि पतंजलि के समय रस सिद्धान्त का पूर्ण ज्ञान था। परन्तु वर्तमान में उपलब्ध जो रूपक हैं, उनमें नाटककार भास विरचित रूपक सबसे प्राचीन हैं-ऐसी अधिकांश विद्वानों की मान्यता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि भास संस्कृत नाट्य साहित्य के आद्य नाटककार हैं। स्वप्नवासवदत्तम् (वासवदत्ता का स्वप्न), महाकवि भास का प्रसिद्ध संस्कृत नाटक है। इसमें छः अंक हैं। भास के नाटकों में यह सबसे उत्कृष्ट है। क्षेमेन्द्र के बृहत्कथामंजरी तथा सोमदेव के कथासरित्सागर पर आधारित यह नाटक समग्र संस्कृतवांमयके दृश्यकाव्यों में आदर्श कृति माना जाता है।भास विरचित रूपकों में यह सर्वश्रेष्ठ है। वस्तुतः यह भास की नाट्यकला का चूडान्त निदर्शन है। यह छः अंकों का नाटक है। इसमें प्रतिज्ञायौगन्धारायण से आगे की कथा का वर्णन है। इस नाटक का नामकरण राजा उदयन के द्वारा इइस्वप्न में वासवदत्ता के दर्शन पर आधारित है। स्वप्न वाला दृश्य संस्कृत नाट्य साहित्य में अपना विषेष स्थान रखता है।यह नाटक नाट्यकला की सर्वोत्तम परिणिति है। वस्तु, नेता एवं रस - तीनों ही दृष्टि से यह उत्तम कोटि का है। नाटकीय संविधान, कथोपकथन, चरित्र-चित्रण, प्रकृति वर्णन तथा रसों का सुन्दर सामन्जस्य इस नाटक में पूर्ण परिपाक को प्राप्त हुये हैं। मानव हृदय की सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावदशाओं का चित्रण इस नाटक में सर्वत्र देखा जा सकता है। नाटक का प्रधान रस श्रृंगार है तथा हास्य की भी सुन्दर उद्भावना हुई है। इस इकाई में हम स्वप्नवासवदत्तम् नामक नाटक का सामान्य अध्ययन करने जा रहे है।

17.2 भास-नाटक चक्र

महामहोपाध्याय टी. गणपति शास्त्री को सन्1909 ई. में दक्षिण के पद्मनाभपुरम के समीप मानलिक्कर माथम में प्राची ताड़पत्र पर लिखित नाटक की कुछ पाण्डुलिपियां प्राप्त हुई है। इनके नाम थे -

1. स्वप्नवासवदत्तम नाटक
2. प्रतिज्ञा नाटिका
3. पंचरात्रम्
4. चारूदत्तम्
5. दूत घटोत्कचम्
6. अविरामकम्
7. बालचरित्रम्
8. मध्यम व्यायोग
9. कर्णभारम्
10. उरूभंगम् और
11. एक नाम रहित रूपकम् - जिसका आरंभ तो हुआ था। कुछ समय के बाद दो और वैसे ही नाटक
12. अभिषेकनाटकम् तथा

13. प्रतिमानाटकम् भी प्राप्त हुए। ये 13 नाटक मलयालम् लिपि में लिखे हुए थे। प्रत्येक नाटक के अन्त में लिख गया था कि ''अमुक नाटक समाप्त हुआ '' जैसे इति स्वप्न नाटकम् समाप्तम्। तत्पश्चात् स्वप्नवासवदत्तम् की तीन और प्रतियाँ तथा प्रतिज्ञा यौगन्धरायणम् की दो प्रतियां विभिन्न प्रकार से प्राप्त हुई। स्वप्नवासवदत्तम की इन तीन हस्तलिखित प्रतियों में से एक के अन्त में स्वप्नवासदत्ता सामाप्ता और प्रतिज्ञा नाटिका की हस्तलिखित प्रति के अन्त में पूरा नाम 'प्रतिज्ञा' यौगन्धरायणम्'' लिखा हुआ है।

नाटकों में समानता - जब त्रिवेन्द्रम् से प्राप्त इन नाटकों को आलोचनात्मक परीक्षण किया गया तो यह देखकर आश्चर्य हुआ कि रचनात्मक, शाब्दिक और कहीं कहीं तो भावात्मक दृष्टि से बहुत बड़ी समता है, जैसे ये सभी नाटक ''नान्द्यते ततः प्रविशति सूत्रधारः'' से प्रारंभ होते हैं । इनमें ''प्रस्तावना'' के स्थान पर ''स्थापना'' शब्द का प्रयोग किया गया है। इन नाटकों की प्रस्तावना या स्थापना में नाटक अथवा नाटककार में से किसी का भी उल्लेख नहीं है। इन सभी नाटकों के भरत-वाक्यम् अर्थात् अन्तिम श्लोक में निश्चित रूप से प्रार्थना का प्रयोग हुआ है, जिनमें राजसिंहः प्रशास्तु नः'' आया है। अधिकांश नाटकों के प्रारंभ में ''मुद्रा अलंकार'' है, जिससे उस नाटक में आये प्रधान पात्रों का नामोल्लेख प्राप्त हो जाता है। इन नाटकों में कई वाक्य मुहावरे (शब्द समूह) तथा सेवक - सेविकाओं आदि पात्रों के नाम एक जैसे मिलते हैं।

कुछ दृश्य जैसे मृत्यु, शयन, भोजन, हत्या, वृष आदि रंगमंच पर नहीं दिखाए जाने चाहिए। किन्तु इन नाटकों में ये दिखाए गए हैं और इनमे द्वारा नाट्य शास्त्र के नियमों का उल्लघंन हुआ है।

सभी नाटकों का एक रचनाकार - इन विशेषताओं के साथ - साथ इन सभी नाटकों में सरलता, स्पष्टता, कोमलता और शैली की सुन्दरता प्राप्त होती है। ये सभी प्रमाण सिद्ध करते हैं कि ये सभी एक ही कुशल कलाकार की लेखनी की रचनाएं है। सातवीं सदी ईस्वी के महाकवि बाणभट्ट ने अपनी रचना ''हर्षचरित'' की प्रस्तावना में यह श्लोक लिखा है -

''सूत्रधारकृतारम्भैर्नाटकैर्बहुभमिकैः।
सपताको यशो लेभे भासो देवकुलैरिव।।''

अर्थात्''भास ने सूत्र'' (नाटक का मैनेजर तथा कारीगर) से आरंभ किए गए भूमिका (पार्ट और आंगन) वाले तथा पताका (नाटक की मुख्य अवान्तर घटता एवं ध्वजा) से सुशोभित मन्दिरों के समान अपने नाटकों से प्रशंसा प्राप्त की।

इस उल्लेख से सिद्ध होता है कि भास ने नाटकों को चक्र अर्थात् समूह में लिखा था। उनके नाटक सूत्रधार के द्वारा प्रारंभ होते थे। उनमें पात्रों की संख्या अधिक थीं। और उनमें पताका का प्रयोग था। ये सब विशेषताएं इन त्रिवेन्द्रम् नाटकों में प्राप्त होने से प्रमाणित होता है कि ये भास के ही हैं। नवीं सदी ईस्वी के राजशेखर ने लिखा है कि -

''भासनाटक-चकेऽपिच्छेकैः क्षिप्ते परीक्षितुम्
स्वप्नवासवदत्तस्य दग्हकोऽभून्ने पावके।''

अर्थात्''आलोचकों ने इन नाटकों की विशेषताओं की परीक्षा के लिए भास के इन नाटकों की आलोचना की अग्नि में तपाया, किन्तु उनका वासवदत्त नामक नाटक उस अग्नि में जल न सका, अर्थात्परीक्षा में श्रेष्ठ सिद्ध हुआ।

इससे संकेत मिलता है कि भास ने अनेक नाटकों की रचना की थी। जैसा कि बाण ने निर्देश किया है। उनमें से एक वासवदत्त नामक महान् कवि भास की लेखनी की सृष्टि है और यह 13 नाटकों का समूह एक ही लेखक का है।

17.3 भास का काल निर्णय

महाकवि कालिदास ने अपने नाटक ''मालविकाग्निमित्रम्'' की प्रस्तावना में भास का आदरपूर्वक उल्लेख किया है। वे कहते है कि - ''भास सौमिल्लवककविपुत्रादीनां प्रबन्धानतिक्रम्य कथम्वर्तमानस्य कवेः कालिदासस्य कृतौ बहुमानः। अर्थात्''प्रख्यात कीर्तिवाले भास, सौमिल्ल, कविपुत्र आदि कवियों के प्रबंधों को छोड़कर कालिदास की कृति का इतना अधिक आदर क्यों हो रहा है? यह कथन उक्त नाटक की प्रस्तावना का सूत्रधार का है। इससे ज्ञात होता है कि भास का काल कालिदास ई.पू. 384 से पूर्व में विद्यमान था। चन्द्रगुप्त मौर्य के समय छोटे छोटे गणतंत्र विलीन होकर बृहत्तर भारत में मिल गए थे। फलतः भास द्वारा उल्लिखित राज्यों के आधार पर उनका ई.पू. चौथी सदी माना जा सकता है। भास की रचनाओं में भरत मुनि के नाट्य शास्त्र के नियमों का विरोध पाया जाता है। जैसे भरत ने प्रस्तावना मे नान्दी पाठ के अनन्तर काव्य के नाम - निर्देश का निरूपण किया है, जो भास के ग्रंथों में नहीं मिलता।

नाट्यशास्त्र के अनुसार प्रतिज्ञा योगन्धराण 4 अंकों का होने से तथा दिव्यस्त्री कारणोपगण होने से ईहामृग होना चाहिए। किन्तु नाटककार ने स्वयं ही इस नाटक के प्रारंभ में इसे प्रकरण कहा है। भरत ने मंच पर युद्ध, वध, आक्रमण, रूदन का निषेध किया है। पर 'बालचरित्र' में दामोदर द्वारा अरिष्ठषर्भ मुष्टिका वध, 'उरूभंग' में दुर्योधन - भीम युद्ध तथा अभिषेक में राम-रावण युद्ध वर्णित है। 'प्रतिमा' में दशरथकी मृत्यु, 'अभिषेक' में बाली की मृत्यु तथा विभिन्न स्थानों में शयन आदि का वर्णन आया है। इससे स्पष्ट है कि भास ने नाट्यशास्त्र के नियमों का अनुसरण किया है। अतः भास को भरतमुनि से पूर्व का स्वीकारना न्योयोचित है। भास वात्स्यायन के कामसूत्र से अपरिचित हैं। इनकी रचनाओं में आये प्रेम संदर्भो ने वाभ्रव्य का अनुकरण किया है। उसने (वाभ्रव्य) ने मंदिर, गमन, भ्रमण, उद्यान-विहार, जलक्रीड़ा, विवाह, उत्सव, पर्व, दुर्घटना, अग्निकाण्ड, चोरी, दृश्य-दर्शन हेतु गमन आदि द्वारा प्रेमोद्भव का कथन किया है। ये चारूदत्त, अविमारक प्रतिज्ञा स्वप्न वासदत्त आदि में मिलते हैं। वात्स्यायन का समय 200 ईस्वी के आसपास का है। अतः भास को इनसे पूर्ववर्ती होना चाहिए। भास ने वैदिक धार्मिक आदर्श प्रस्तुत किए हैं। उनके रूपकों में कहीं भी जैन या बौद्ध धर्म के प्रति किसी भी प्रकार की सद्भावना नहीं है। यह सच है कि भास क्रांतिकारी जैन एवं बौद्ध धर्म से परिचित थे तथा उन्होंने बौद्ध धर्म व जैन श्रवणों का उपहास भी किया है।

भास के कई नाटकों के भरत वाक्य में राजसिंह शब्द आया है। विद्धानों का मत है कि मौर्य राजा स्वयं राजसिंह (राजाओं में सिंह के समान अर्थात् शक्तिशाली एवं श्रेष्ठ सम्राट्) कहलाते थे। संभवत् यहां चन्द्रगुप्त को ही राजसिंह कहा गया है। वहीं हिमालय से लेकर विन्ध्य पर्वत पर्यन्त समुद्र वाली पृथ्वी का एकच्छत्र भोग करने वाला था। यही वह सम्राट् था जिसने प्रथम बार समस्त उत्तर भारत को संगठित करके अपने शासन के अधीन किया था। एक अन्य विद्वान् का अनुमान है कि भास के समय महापद्म नन्द का राज्यकाल होना चाहिए, क्योंकि यह पहला शासक था, जिसने समूचे उत्तर भारत को अपने नियंत्रण में किया था। भास के भरत वाक्य में जिस राज्य के सीमा का निर्देश आया है, वह राज्य सीमा महापद्म नन्द की है। भास ने नागवान, वेणुवन, राजगृह एवं पाटलिपुत्र का उल्लेख किया है। ये सभी स्थान वृद्ध के पश्चात् मानना समुचित है। भास ने मानवीय धर्मशास्त्र, माहेश्वर योगशास्त्र,

बार्हस्पत्य अर्थशास्त्र, प्राचेतस श्राद्धकल्प, मेघातिथि न्यायशास्त्र आदि का उल्लेख किया है। इनमें से कोई भी ईस्वी पूर्व चतुर्थ पंचम शताब्दी के बाद का नहीं है।

शूद्रक के मृच्छकटिकम्' को चारूदत्त का ही विकसित रूप मानते हैं। स्मिथ महोदय ने शुद्रक का शासनकाल ई.पू. 220-197 माना है। अतः भास का समय इससे पूर्व ही होना चाहिए। भास की रचनाओं की भाषा में पाणिनी से यत्र-तत्र भिन्नता उपलब्ध है। जैसे - संधि के नियमों का अतिक्रमण, आत्मनेप्रद के स्थान पर परस्मैपद का प्रयोग अकर्मक धातुओं का सकर्मक के समान प्रयोग, अनियमित समास या प्रत्यय आदि अतएव भास का समय पाणिनि से पूर्व अथवा उसके समकालीन होना चाहिए। उपर्युक्त इन सबके आधार पर भास का काल ईस्वी पूर्व चतुर्थ पूर्व चतुर्थ सदी माना जा सकता है।

17.4 भास की रचनाएं

भास ने 13 नाटक लिखे हैं, जिन को वग्र्य विषय की दृष्टि से 4 वर्गों में बांटा जा सकता है – 1. रामायण से संबंद्ध नाटक- इसमें दो नाटक है - 'अभिषेक और प्रतिमा' 2. महाभारत से नाटक - ये 7 हैं - बालचरित्र, दूत घटोत्कच, दूतवाक्य, कर्णभार, मध्यम व्यायोग, पंत्ररात्र और उरूभंग।3. उदयन **कथा से संबंद्ध अथवा ऐतिहासिक नाटक -** ये दो हैं - प्रतिज्ञा यौगन्धरायण' तथा 'स्वप्नवासवदत्तम्। 4. काल्पनिक अथवा लोक कथा वाले नाटक - ये भी दो हैं - चारूदत्त एवं अविमारक।

इन रूपकों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है -

1. **अभिषेक -** रामकथा पर आश्रित इस नाटक में छः अंक है। इनमें रामायण के किष्किंधा काण्ड से युद्ध काण्ड की समाप्ति तक की कथा अर्थात् बालिवध से राज्याभिषेक तक की कथा वर्णित हैं।
2. **प्रतिमा -** सात अंकों वाले इस रूपक में राम के वन गमन से लेकर रावण वध तक की घटनाओं का वर्णन है। इसमें अयोध्या के मृत राजाओं की प्रतिमा बनाई जाकर उन्हें अयोध्या के बाहर किसी मंदिर में स्थापित किए जाने का उल्लेख है।
3. **बालचरित्र -** इसमें पांच अंक हैं तथा हरिवंश पुराण' के आधार पर श्रीकृष्ण के बाल्यकाल के चरित्र का वर्णन है, अर्थात् इसमें कृष्ण - जन्म से लेकर कंस वध तक की घटनाएं दी गई है।
4. **दूतघटोत्कच -** महाभारत के कथानक वाला यह एकांकी रूपक है। इसमें अर्जुन द्वारा जयद्रथ के वध की प्रतिज्ञा करने पर, श्रीकृष्ण के आदेश से हिडिम्बा का पुत्र घटोत्कच धृतराष्ट्र के पास दूत बनकर जाता है। तथ युद्ध के भयंकर दुष्परि णाम की ओर उनका ध्यान आकर्षित करता है।
5. **दूतवाक्य -** यह भी 'एक अंक' का व्यायोग है इसमें महाभारत के विनाशकारी युद्ध से बचने के लिए पाण्डवों द्वारा कृष्ण को अपना दूत बनाकर दुर्योधन के पास भेजने का वर्णन है।
6. **कर्णभार -** इसका कथानक भी महाभारत से लिया गया है तथा एक अंक का है। इसमें देवराज इन्द्र सेनापति कर्ण के पास ब्राह्मण के रूप में जाते हैं और उससे भिक्षा के रूप में सूर्य प्रदत्त कवच तथा कुण्डल मांग लेते हैं।
7. **मध्यम व्यायोग -** यह भी 'एकांकी' है, जिसमें महाभारत के आधार पर एक ब्राह्मण की कथा अपनी कल्पना के अनुसार वर्णित है। इसमें मध्यम पाण्डव भीम अपने पुत्र घटोत्कच द्वारा अपनी पत्नी हिडिंम्बा तक पहुंच जाता है।

8. **पंचरात्र -** तीन अंकों वाले इस रूपक की कथा महाभारत के विराट्पर्व में विद्यमान है। इसमें राजसूय यज्ञ करने वाले दुर्योधन द्रोणाचार्य को दक्षिणा के रूप में प्रतिज्ञा करता है कि पांच रात्रियों में पाण्डवों का पता लग जाए तो मैं उन्हें भाषा राज्य दे दूंगा।
9. **उरूभंग -** इसमें भीम द्वारा दुर्योधन की जंघा को विदीर्ण करने की कथा है। नाटक की विशिष्टता इसके दुःखान्त होने के कारण है। इसमें एक ही अंक है और समय तथा स्थान की अन्विति का पूर्ण रूप से पालन किया गया है।
10. **प्रतिज्ञा यौगन्धरायण -** छः अंकों के इस नाटक में अमात्य यौगन्धराण अपने स्वामी वत्सराज उदयन को शत्रु के बन्दीगृह से छुड़ा लाने की प्रतिज्ञा करता है तथा उनके विघ्नों के उपस्थित होने पर भी उसे पूर्ण कर बताया है।
11. **स्वप्नवासवदत्तम्-** छः अंकों का यह नाटक राजा उदयन और वासवदत्ता की विभिन्न किन्तु रोमांचक कथा से भरपूर है। कौशाम्बी-नरेश उदयन की कथा पर अधारित यह रूपक भास की नाट्य कुशलता का चूडांत निदर्शन है।
12. **चारूदत्त -** चार अंकों में विभक्त इस नाटक में दरिद्र चारूदत्त एव वैश्या वसन्तसेना की प्रणय कथा का वर्णन है। इसकी सहसा समाप्ति लेखक के असामयिक निधन का व्यक्त करती है। इस रूपक को शूद्रक ने अपने मृच्छकटिक का आधार बनाया है।
13. **अविमारक -** यह छः अंकों का नाटक है। इसमें राजकुमार अविमारक तथा राजा कुन्ति भोज की पुत्री कुरंगी के प्रेस की कहानी है। इसकी कथा कवि कल्पित है।

17.5 भास की भाषा शैली

भास को मानव जीवन के नाना क्षेत्रों को देखने तथा उन्हें नाटकों में अंकित करने का अवसर मिला है। इसलिए अनेक रूपकों में विविधता तथा बहुमुखिता विशेष रूप से दृष्टिगोचर होती है। भास की इस प्रतिज्ञा को निम्नांकित बिन्दुओं में अभिव्यक्त किया जा सकता है -

1. **सशक्तता -** भास के नाटकों में कल्पना, भावना तथा कवित्व का प्राचुर्य है, जिसके कारण भाषा में काव्यात्मकता की प्रधानता हो गई है। इनकी भाषा शैली पात्रों के भावों और विचारों के अनुरूप है। शैली की विशेषता के कारण ही इनके संवादों में प्रभावात्मकता आ गई है। सूक्ति वाक्यों के प्रयोगों ने इनकी भाषा शैली को सशक्त बनाया है।
2. **प्रभावोत्पादकता -** भास की भाषा प्रभावोत्पादक तथा मुहावरेदार है। इसमें सर्वत्र स्वभावोक्ति का प्राचुर्य मिलता है। लम्बे लम्बे समासान्त पदों के प्रयोग भास को अच्छे नहीं लगते। नाट्यकला के लिए भाषा की सरलता, सरसता, स्फुटता, प्रसन्नता, गंभीरता, मधुरता एवं मनोरंजकता अपेक्षित है। कथोपकथन एवं कवित्व की दृष्टि से भी इनके रूपक संस्कृत साहित्य के किसी भी सम्मानित कवि या नाट्यकार से कम नहीं है। निस्संदेह भास की कृतियों में ओज, प्रसाद और माधुर्य का यथोचित रूप में समावेश हुआ है।
3. **सरलता एवं स्वाभाविकता -** अपनी रचनाओं में भास ने अलंकार विहिन सरल भाषा का प्रयोग किया है। इनकी प्रवाहयुक्त सरल भाषा भावों की अभिव्यक्ति में पूर्ण समर्थ है। इनके संवादों में शैली की स्वच्छता स्पष्ट दिखाई देती है। पात्र कथोपकथनों में अत्यन्त विदग्ध हैं। नाटको में तर्क वितर्क का महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि इन्हीं के द्वारा घटनाचक्र और कथानक आगे बढ़ता है। भास के नाटकों में उक्ति-प्रयुक्तियों का संतुलित प्रयोग हुआ है। ये सीधी स्वाभाविक तथा प्रभावोत्पादक है।

4. **पात्रानुकूल भाषा -** भास के रूपकों की सफलता का श्रेय जहां एक ओर अनेक चरित्र-चित्रणों में निपुण होने की है, वहीं दूसरी ओर उन पात्रों के अनुकूल भाषा के प्रयोग में भी है। रूपकों का प्राण प्रसाद गुण है। यह स्वीकार करने में कोई अतियशोक्ति नहीं है क्योंकि रूपक गतिशील होता है। जिस गति से वह चलता है, उसी गति से यदि भाषा सामाजिक की समझ में नहीं आती तो रूपक का समस्त आनन्द ही समाप्त हो जाता है। अतः रूपक को गतिशील बनाये रखने के लिए उसमे प्रसाद गुण की सर्वाधिक आवश्यकता है।
5. **छन्द अलंकारों का सफल प्रयोग -** नाटककार ने पात्रों की उक्ति प्रत्युक्तियों में छंदों का प्रयोग सफलतापूर्वक किया है। यही कारण है कि कई स्थानो पर एक ही छन्द दो भागों में बंट गया है। जिसमें पूर्वार्ध का प्रयोग एक पात्र करता है तो उत्तरार्ध का कोई दूसरा पात्र। इस प्रक्रिया द्वारा पात्रों में प्रत्युत्पन्नमतित्व समाविष्ट हो गया है। इसी प्रकार भास ने अलंकारों का भी बलपूर्वक प्रयोग नहीं किया है। क्योंकि जब कल्पना की दुरूहता और अलंकारों के बोझ से भाषा की सहज माधुरी दब जाती है, तब रसोद्रेक में क्षीणता उत्पन्न होती है।
6. **वर्णन का सूक्ष्म व स्पष्ट होना -** वर्णन की सूक्ष्मता भास की शैली गत विशेषता है। किसी भी विषय या दृश्य का वर्णन करते समय उसके सूक्ष्मातिसूक्ष्म अंश को भी वे उपस्थित कर देते है। भास की शैली में संक्षिप्तता के साथ स्पष्टता का गुण भी निहित है। वे दृश्य - वर्णन प्रसंग में इतने स्पष्ट रहते है कि पाठक या दर्शक बिम्ब ग्रहण करने में समर्थ होता है। यही कारण है कि भास को सन्ध्या वर्णन, मध्यरात्रि वर्णन, वन वर्णन, मध्याह्न वर्णन, तारूण्य वर्णन आदि मे पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।
7. **दृश्य चित्रण में पटु -** भास की वर्णन कला प्रौढ़ तथा अपने ढंग की अनोखी है। शैली सशक्त बनाने के लिए इन्होंने:आम्' बाढम्यदि चेत् तथा कुशल प्रश्न के लिए 'सुखामार्यस्य' का प्रयोग किया है। इसमें ज्ञात होता है कि नाटककार दृश्यों के वर्णन में अत्यन्त पटु है। इस प्रकार के वर्णनों के आधार पर चित्रांकन किया जा सकता है। शैली की संक्षिप्तता के कारण छोटे छोटे वाक्यों में गंभीर तथा रसपेशल भावों की व्यंजना प्रस्तुत की गई है।
8. **अद्धितीय शैली -** वस्तुतः भास सरल शैली के जनक हैं। प्रसाद गुण के साथ रसपेशलता, भावों की सम्यक् अभिव्यक्ति, मनोरंजकता, गंभीरता, औचित्य, ओजस्विता और माधुर्य आदि गुण भी इनकी शैली में समाहित है। शैली में प्रवहणशीलता पूर्व रूप में पाई जाती है। इन्होंने उद्दाम भावनाओं का बड़ा ही सशक्त वर्णन किया है।
   विपत्तियों के चित्रण में भास सिद्धहस्त है। भास की शैली का गुण मौन भाषण भी है। अल्प शब्दों के द्वारा अधिकाधिक भावों की व्यंजना के अतिरिक्त मौन से भी अर्थबोध कराया गया है। ये मौन शब्दों से कही अधिक प्रभावशाली हुए हैं एवं रस तथा भाव की प्रतीति में सहायक हुए हैं। इसी कारण समीक्षकों ने उन्हें मौन के आचार्य विशेषण से विभूषित किया है।
9. **वाग्विस्तार का परिहार -** भास के पात्रों ने शैली की विशेषता के कारण कम से कम शब्दों में अधिक भावों की अभिव्यंजना की है। इनमें व्यर्थ का विसंवाद कहीं भी प्राप्त नहीं होता है। संक्षिप्त शब्दों में मनोगत भावों को प्रकट करना भास की विशेषता है। कौन पात्र किस परिस्थिति में किस प्रकार की भावदशा के अधीन रहेगा, इसका चित्रण भास ने कुशलतापूर्वक किया है। वाग्विस्तार का परिहार का परिहार इनकी प्रमुख विशेषता है। वार्तालापों के आश्रय

से ही सारे दृश्य उपस्थित हो गए हैं। पृथक्-पृथक् अवस्था में विभिन्न भावों और विषयों के सूक्ष्म वर्णन में भास सिद्धहस्त है।

10. **नाटकत्व व काव्यत्व का संतुलन -** भास की शैली में सरल शब्दों, स्वाभाविक पद-विन्यास और भाव सौष्ठव पाया जाता है। रूपक, उपमा और उत्प्रेक्षा जैसे सरल तथा इन्होंने सर्वत्र प्रकृति के नैसर्सिक रूप सौन्दर्य का चित्रण किया है। भास की शैली में कृत्रिमता का अभाव होने से शब्द और अर्थें का सामंजस्य सुन्दर रूप से घटित हुआ है। नाटकीयता का सन्निवेश सुरूचिपूर्ण ढंग से किया गया है। भास का काव्यतत्व नाटकतत्व का पूरक है। इनके पात्रों के संवाद संक्षिप्त, उचित, अवसारनुकूल तथा कथावस्तु के परिब्रंहाण में सहायक है। नाटकीय कुतुहल सर्वत्र पाया जाता है। भाषा में अपूर्व प्रवाह और सरलता विद्यमान है। गागर में सागर भरने वाली उक्ति इनकी रचनाओं में चरितार्थ है। इनका कथन क्षणभर में गुहातम गुत्थियों का समाधान मानसिक भावनाओं की सुख में परिणति तथा विचारों का संक्षिप्त रूप में रखते हुए भाव की स्पष्टता को करने वाला है।

संक्षेप में भास की इन विशेषताओं को हम इस प्रकार बद्ध कर सकते हैं -

1. स्वच्छता और संक्षिप्तता
2. प्रभावोत्पादकता व व्यंजकता का मणि-कांचन योग
3. अल्प समास या समासहीनवाक्य संघटना
4. सरलता तथा सहज बोधगम्यता
5. औचित्य एवं पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग
6. लोकोक्तियों और सूक्तियों का प्रचुर प्रयोग
7. घटनाओं का आकस्मिक वितरण
8. स्वल्प शब्दों द्वारा अधिक भाव व्यंजना
9. अकृत्रिमता और स्वाभाविकता का समावेश
10. काव्यत्व की अपेक्षा अभिनेयता का प्रामुख्य।

17.6 स्वप्न नाटक की कथावस्तु

प्रथम अंक

राजा उदयन का प्रधानमंत्री यौगन्धरायण अपने स्वामी के शत्रु राजा आरूणि द्वारा अपहृत प्रदेशों को पुनः हस्तगत करने के लिए अतीव चिन्तित है। अतः इस राजनीतिक उद्देश्य से तत्कालीन शक्तिशाली मगध नरेश के साथ वैवाहिक सम्बन्ध जोडना आवश्यक था। प्रधानमंत्री चाहता है कि राजा उदयन मगधराज की बहिन से विवाह कर ले। किन्तु उदयन का अपनी प्रथम पत्नी वासवदत्ता के प्रति दृढ़ अनुराग है। वर चतुर मंत्री एक योजना बनाता है और वासवदत्ता को उदयन को खोये हुए राज्य की पुनः प्राप्ति में सहायता प्रदान करने के लिए प्रेरित करता है। वह सहमत हो जाती है। राज्य की पश्चिमी सीमा के समीप लावाणक नामक ग्राम में राजकीय पड़ाव पर जाता है। एक दिन जब राजा शिकार के लिए बाहर गया था, उस कुशल मंत्री ने गांव में आग लगवा दी और यह जनश्रुति फैला दी कि महारानी वासुवदत्ता उस ग्राम के भंयकर अग्निकाण्ड में जल गई है तथा प्रधानमंत्री भी उनकी रक्षा के प्रवास में जलकर मर गया है।

यहीं से 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक का प्रथम अंक प्रारंभ होता है। तब यौगन्धरायण और वासवदत्ता सन्यासी और आवन्तिका (अवन्ती या उज्जयिनी की महिला) प्रच्छन्न वेश में उस ग्राम की छोड़ देते

हैं। वे मगधराज की तत्कालीन राजधानी राजगृह के निकटवर्ती आश्रम में पहुंचते हैं। वहां दैवयोग से मगध राजकुमारी पद्मावती आ जातीहै ।जो अपनी जननी के, जो उस समय तपोवन में निवास कर रही थी, दर्शन कर उसी मार्ग से राजधानी राजगृह को लौट रही थी। पद्मावती आश्रम में किसी भी याचक को मनोवांछित दान देने की घोषणा करती है। यौगन्धरायण आगे आता है और अपनी भगिनी अवन्तिका (वासवदत्ता) को पद्मावती से न्यास के रूप में अपने साथ रख लेने की याचना करता है, जिसका कि पति अधिक काल से विदेश गया है और वह स्वयं भी उसी को ढूंढने जा रहा है।

वासवदत्ता 'आवन्तिका' के कृत्रिम नाम से पद्मावती के साथ रहने लगती है। घटना क्रम से पद्मावती के विवाह की चर्चा छिड़ जाती है, जो कि उस चर्चा को भी व्यक्त कर देती है, जो महासेन के पुत्र के साथ विवाह संबंध विषय में चल रही थी। उसी समय एक छात्र वहां विश्राम के लिए रूक जाता है, जो लावणक गांव से लौट रहा था। लावाणक के विषय में पूछने पर वह उस स्थान के नवीनतम समाचार का वर्णन करता है। वह कहता है कि महारानी वासवदत्ता और यौगन्धरायण के ग्रामदाह में जल मरने का समाचार मिलता है। शिकार से लौटने पर जब राजा को यह दुःखद समाचार मिलता है, तब वह अपनी पत्नी के लिए बहुत ही रोता बिलखता है। मंत्री रूमण्वान् बड़ी तत्परता से राजा की प्राणरक्षा में संलग्न है और प्रत्येक संभव उपायों से उसको प्रकृतिस्थ करने का प्रयत्न कर रहा है।

राजा उदयन बहुत विलाप करता है। वासुवदत्ता के अधजले आभूषणों को अपनी छाती से लगाकर बार-बार मूर्छित हो जाता है। चेतना आने पर वह भी आग में कूदकर आत्महत्या करने का प्रयास करता है। परन्तु उसका विश्वास पात्र मंत्री उसको ऐसा करने से रोकता है। अन्त में वे उसको उस स्थान से हटा ले जाते है कि कहीं ऐसा न हो कि अपनी पत्नी के शोक में वह अपने प्राण त्याग कर दे। राजा के सन्ताप का सजीव वर्णन सुनकर तथा अपने पति का अपने प्रति आदर्श प्रेम देखकर वासवदत्ता को बड़ा ही संतोष होता है। उसी क्षम पद्मावती के हृदय में , जो कि यह सुनकर बड़ी प्रभावित थी, राजा के प्रति प्रेम का अंकुर उत्पन्न हो जाता है। वह उदयन से प्रेम करने लगती है। सभी उस स्थान से चले जाते है।

द्वितीय अंक

इस अंक का प्रारंभ राजगृह में होता है ।वहां के अन्तः पुर में राजकुमारी पद्मावती वासुवदत्ता के साथ गेंद खेल रही है। वह अब राजकुमारी से बहुत हिली मिली सी जान पड़ती है। वासुवदत्ता बड़ी कुशलता से उसके विवाह के विषय में बडी ही मधुर और सजीव चर्चा का सूत्रपात करती है, जिससे सेविका इस रहस्य को प्रकट करती है कि पद्मावती महासेनप परिवार में अपना विवाह करना नहीं चाहती किन्तु वह उदयन को चाहती है। ठीक उसी समय दूसरी दासी उनको सूचित करती है कि पद्मावती का वाग्दान उसके भाई ने किसी कारणवश उदयन से कर दिया है। यद्यपि उदयन उसके लिए उत्सुक नहीं है। तीसरी सेविका सूचना देती है कि विवाहोत्सव आज ही सम्पन्न होने को है।

तृतीय अंक

विवाह का यह दृश्य वासवदत्ता के लिए दुःखद हो जाता है। वह राजप्रासाद से बाहर निकलकर प्रमदवन (उद्यान) में चली जाती है ताकि वह अ पने पति को दूसरी स्त्री से विवाहित होते हुए न देख सके । मगधरानी अपनी सेविका को कहकर आवन्तिका की खोज करवाती है ताकि वह विवाह माला को गूंथ दे। वासवदत्ता उस माला में अविधावाकरण औषध तो गूंथ देती है परन्तु सपत्नी मर्दन औषध को नहीं गूथती। वह अपने पति का पद्मावती के साथ विवाह के विषय में सोचकर बहुत ही व्यथित होती है। अन्त में उसे नींद आकर सान्वना प्रदान करती है।

चतुर्थ अंक -

प्रमदवन में पद्मावती, वासदत्ता और सेविका है। वहां उदयन और विदूषक वसन्तक भी आ जाते है। पद्मावती वासुवदत्ता का लिहाजकर अपने पति से मिला नहीं चाहती। इसलिए ये सभी एक लताकुंज में चले जाते हैं। राजा और विदूषक शरत्कालीन सूर्य की धूप से व्याकुल होकर उसी लताकुंज में आश्रय पाने के लिए प्रवेश करना चाहते है परन्तु सेविका भ्रमरों वाली अवलम्बन लता को हिलाकर रोक देती है। वे लतामंडप के बाहरी भाग मैं बैठ जाते है। वहां विदूषक विश्वस्त रूप में राजा से पूछता है कि ''आप उस वासवदत्ता को अधिक प्यार करते हैं या इस समय की पद्मावती को? राजा कहता है कि मैं पद्मावती को प्यार करता हूं, किन्तु यह वासवदत्ता में अनुरक्त मेरे मन को खींच नहीं पा रही है। वासुवदत्ता अपने प्रति प्रकट किए गए अपने पति के इन विचारों को सुनकर अपने प्रच्छन्न जीवन की सार्थकता पर अपने को धन्य समझती है। राजा अन्तश्चेता के मन होकर अपने हृदय के अन्तरतम में विश्वास कर लेता है कि उसकी प्रियतमा आसवदत्ता अभी जीवित है।

उसका यह धुंधला विश्वास एक आश्चर्यजनक दृश्य के द्वारा दृढ़ विश्वास बन जाता है, जो कि इस नाटक का प्रधान आधार है। विदूषक दबाव वश जब अपना पक्षपात पद्मावती के प्रति व्यक्त करता है तो इस परस्पर आलाप से राजा की आंखों में आंसू भर आते हैं। विदूषक राजा का मुख धोने के लिए जल लाने को बाहर जाता है। जब वह लौटता है तो पद्मावती को राजा के समीप देखता है। परन्तु वह बहुत चतुर है। वह पदमावती से अश्रुपात के विषय मे स्पष्ट करता है कि आंखों में काश पुष्प के परागकणों के पड़ जाने से आंसू आ गए और स्मरण दिलाकर उनको प्रणय संकट से बचा लेता है कि उनको तो मगधराज के सम्मानार्थ एक प्रति उत्सव में सम्मिलित होना है । इसलिए वे अवश्य चले जाएं। राजा उस स्थान से प्रस्थान कर देता है।

पंचम अंक

पद्मावती शिरोव्यथा से पीडित है। राजा को इसकी सूचना मिलती है और साथ ही साथ वासवदत्ता को भी। राजा अपनी रोगपीडिता पत्नी के औषधोपचार के लिए शीघ्रता से समुद्रगृह में जाते हैं, किन्तु वहां रोग शय्या को रिक्त पाते हैं। वे उस पर लेट जाते हैं। विदूषक राजा को एक कहानी सुनाते लगता है और राजा सो जाते हैं। विदूषक शीत से बचने के लिए कम्बल लाने से बाहर चला जाता है। इसी बीच वासवदत्ता उस कक्ष में आ जाती है, वहां दीपक टिम टिमा रहा था। वहां बिछौने पर उसके दूसरी और के खाली भाग में स्वयं लेट जाती है। वह वहां लेटते ही एक विचित्र प्रकार के आनन्दोल्लास का अनुभव करती है। उधर राजा स्वप्न में वासववदत्ता को देखता है और बड़बड़ाता है। वह यथार्थ स्थिति को समक्ष जाती है और स्वप्न में पड़े राजा के प्रश्नों का उत्तर देती है।

तदुपरान्त वह राजा की लटकती हुई भुजा को बिस्तर पर ठीक से रखकर बाहर चली जाती है। उसक हस्तस्पर्श से राजा की नींद टूट जाती है। वह उसे पकड़ने के लिए पीछे दौड़ता है। परन्तु दरवाजे से टक्कर खाकर गिर पड़ता है। इतने में विदूषक लौटता है। राजा उससे कहता है कि उसकी पत्नी वासवदत्ता जीवित है। विदूषक इसे मस्तिष्क का विभ्रम बताता है। अन्त में मगधराज का प्रतिहारी यह संदेश लाता है कि सेनापति रूमण्वान्मगधराज की सैन्य सहायता से शत्रु आरूणि पर चढ़ाई करने जा रहा है। इस प्रकार राजा उदयन शीघ्र ही रण में भाग लेने के लिए अपने को शस्त्र सज्जित करता है और बाहर प्रस्थान कर देता है।

पष्ठ अंक

'घोषवती' वासवदत्ता की अत्यन्त प्रिय वीणा थी। उसे पा जाने पर राजा का उदयन का शोक पुनः नवीन हो जाता है। उसी समय उज्जयिनी के राजा और रानी धात्री (धाय) के साथ, शत्रु के ऊपर पूर्ण रूप से विजय पाने के उपलक्ष्य में बधाई देने के लिए उद्यन के पास आता है। वे दोनों उदयन को उनके विवाह के समय का वासवदत्ता के साथ लिया गया उनका चित्र अर्पित करते है, जिसे उनके श्वसुर और सास ने भेजा था। पद्मावती उस चित्र में अंकित महिला को पहचानती है, जिसकी आकृति उस ब्रह्माणी आवन्तिका से मिलती जुलती है। जिसको उसके सन्यासी भाई ने उसकी संरक्षकता में बहिन कहकर रख छोड़ा था। ठीक उसी समय यौगन्धरायण अपनी बहिन को लौटा देने की मांग करता है। उसे अपनी धरोहर (न्यास) को ले जाने का आदेश रानी से मिल जाता है। वह धरोहर ब्राह्मणी लौटा देने के लिए लाई जाती है।

वहां वासुवदत्ता की उपमाता (धायी -धाय) भी उपस्थित है, जिसने बचपन मे उसका पालन पोषण किया था। वह शीघ्र ही राजकुमारी वासवदत्ता को पहचान जाती है। वह विलक्षण मंत्री यौगन्धरायण पहले तो उसे अपनी बहिन घोषित करता है। किन्तु अन्त में राजा का जयघोष करता है। वासुवदत्ता भी उसके स्वर में स्वर मिलाती है। इस प्रकार पति पत्नि का सानन्द मिलन होता है और यौगन्धरायण अपनी योजना का उद्देश्य प्रकट करता है कि क्यों और किस प्रकार उसने अपने स्वामी के कल्याण की दृष्टि से ऐसी योजना बनाई थी।

17.7 कथावस्तु का उपजीव्य

'स्वप्नवासवदत्म् नाटक की कथावस्तु का आधार राजा उदयन और वासवदत्ता की प्रेम कथा है। यह आख्यान गुणाढ्य की बहुत्कथा में प्राप्त है, जो मूलतः पैशाची में लिखी गई थी। यद्यपि अब यह रचना उपलब्ध नहीं है, तथापि इसके 3 संकलन प्राप्त हैं -

1. बुधस्वामी का बृहत्कथा श्लोक संग्रह
2. क्षेमेन्द्र की बृहत्कथा मंजरी और
3. सेमदेव का कथा सरित्सागर

इन तीनों में उदयन की कथा अनेक स्थलों पर परस्पर भिन्न रूपों में पाई जाती है। भास वर्णित उदयन की कथा के अत्यन्त सन्निकट कथा सरित्सागर की कहानी से पहुंचती है। इसक कथामुख नामक द्वितीय लम्बक में उदयन का आख्यान अंकित है। इस अंश में बहुत से ऐसे छन्द है, जो भास के स्वप्नवासवदत्तम् के वर्णन से मिलते जुलते हैं। वस्तुतः भास ने बहुत्कथा की कहानी का सर्वांश में अनुकरण नहीं किया है जैसा कि कथा सरित्सागर में किया गया है। इसके लेखक सोमदेव ने घोषणा की है कि कथा सरित्सागर गुणाढ्य की पैशाची प्राकृत में लिखी गई । बृहत्कथा का ठोस रूपान्तर है। इसमें मूल पुस्तक का थोड़ा सा भी अतिक्रमण नहीं किया गया है।

कथावस्तु में परिवर्तन -

भास ने अपने नाटकीय प्रभाव में तीव्रता लाने के लिए 'स्वप्नवासवदत्तम्' के कथानक में अनेक परिवर्तन कर दिए हैं, जो इस प्रकार से हैं -

1. 'कथा सरित्सागर' के अनुसार प्रद्योत मगधराज्य का शासक कहा गया है, किन्तु भास के मत से दर्शक मगध का राजा है।
2. कथा सरित्सागर में पद्मावती को प्रद्योत की कन्या बताया गया है। जबकि स्वप्नवासवदतम् में भास ने उसे दर्शक की बहिन माना है।

3. वासवदत्ता भास के मत से अपहृत राज्य की पुनः प्राप्ति के लिए छिपाई गई थी, जबकि कथा सरित्सागर में इसका उद्देश्य नये राज्य की प्राप्ति था।
4. 'कथा सरित्सागर' के अनुसार वासवदत्ता का भाई गोपालक इस कूट प्रबंध में सहायक था, किन्तु भास के नाटक में ऐसा नहीं है।
5. कथा सरित्सागर में वासवदत्ता यौगन्धरायण की पुत्री मानी गई है, जबकि स्वप्नवासवदतम् में भास ने उसे यौगन्धरायण की भगिनी के रूप में चित्रित किया है।
6. 'कथा सरित्सागर' में मगधराज प्रद्योत को उसके गुप्तचर उदयन की विजय के विषय में सूचना देते है, जबकि यहां ऐसा नहीं है।
7. 'कथा सरित्सागर' में राजा उदयन अपने को इस विचार से ढांढस बंधाते हैं कि वासवदत्ता मृत नहीं हैं, क्योंकि ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की है कि उनको विद्याधर नाम का एक पुत्र वासवदत्ता के गर्भ से होगा, जबकि यहां ऐसा नहीं है।

भास के अध्येताओं की एक मान्यता यह भी है कि वे दो वर्णन, जिस रूप में 'कथा सरित्सागर' और भास के स्वप्नवासवदत्तम् नाटक में वर्णित हैं, इतने भिन्न हैं कि भास के इस नाटक को वृहत्कथा पर आधारित नहीं मानी जा सकती है। अतएव भास गुणाढ्य की बहुत्कथा की ऋणी नहीं थे। साथ ही कोई भी ऐसे अन्तः या बाह्य साक्ष्य नहीं है। जो इनको बहुत्कथा का ऋणी सिद्ध करने में समर्थ हो। इसलिए भास ने अवश्य ही बृहत्कथा का आश्रय लेने के बदले जन समाज में प्रचलित उन दन्तकथाओं और मौखिक परम्पराओं का उपयोग किया है, जो गुणाढ्य की बृहत्कथा मूल आधार है। कालिदास ने मेघदूत में पुरूष उदयन राजा की कथाओं से अच्छी तरह परिचित है। के द्वारा अवन्ती देश के गांव गांव जनज न के मुख से सुनी जाने वाली उदयन की कथा का निर्देश कर इस सत्य को और अधिक प्रमाणित कर दिया है।

संभवतः भास अवन्ती के जन-जन के कण्ठ से निकली हुई उदयन कथा को ही नाटकीय रूप दे दिया, ऐसा जान पड़ता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि या तो बृहत्कथा या मौखिक परम्परा से प्राप्त लोक कथा ही भास के स्वप्नवासवदत्तम् नाटक का मूल आधार थी।

17.8 नाटक का नामकरण

भरत मुनि के नाट्य शास्त्र के अनुसार नाटक का नामकरण उस नाटक के प्रधान चरित्र अथवा उसमें व्याप्त प्रधान घटना के आधार पर ही होना चाहिए। इस नाटक का नामकरण पांचवे अंक के 'स्वप्न दृश्य' के आधार पर हुआ है। वह स्वप्न-दृश्य अत्यन्त नाटकीय तथा भाव-विभोर कर देने वाला है। यहां राजा उदयन वासवदत्ता के प्रथम प्रेम के चिन्तन में मग्न है। इतने में उसे नींद आ जाती है और वासवदत्ता, जिसके विषय में वह स्वप्न देख रहा है, प्रत्यक्ष रूप में आकर उसके प्रश्नों का उत्तर देती हैं। भास अपने इस दृश्य से इतने प्रसन्न हैं कि इसी के आधार पर नाटक का नाम रख देते हैं। इस रूपक का यह स्वप्न दृश्य नाटक के कार्य में अत्यन्त महत्व का है, क्योंकि उसी क्षण से राजा सोचने लगता है कि उसकी पहली पत्नी जीवित है। साथ ही उसको यह आशा बंध जाती है कि कुछ समय बाद वह मिल जाएगी।

इसके अतिरिक्त इस स्पप्न के कारण राजा उदयन के हृदय में उत्पन्न आशा नाटक के अन्त में होने वाले पति-पत्नि के निश्चित और अन्तिम सहमिलन के आधार पर 'स्वप्नवासदत्तम्' नाम का अत्यन्त समीचीन है।

17.9 नाटक की समीक्षा

इस नाटक की समीक्षा निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर की जा रही है -

1. **भास की सर्वोत्तम कृति -**'स्वप्नवासदत्तम्' भास की सर्वोत्तम कृति है। वह उनकी प्रौढ़ प्रतिभा का परिणाम है। नवीं सदी ईस्वी के राजशेखर ने 'स्वप्नवासवदत्तस्य दाहकोऽभून्न पाठके' कहकर इसकी उचित प्रशंसा की है। इस नाटक की अनेक टीकाएं हुई है। वामन् रामचन्द्र, अभिनवगुप्त तथा अन्य अनेक अलंकार शास्त्र के आचार्यों ने उसके पद्यों का अपनी पुस्तकों में उद्धरण दिये हैं।
2. **नाटक का मुख्य विषय -** यह रचना भास के प्रतिज्ञा यौगन्धरायणम्'' का शेष भाग है। इस नाटक का मुख्य राजा 'राजा' उदयन का अपनी भार्या वासवदत्ता के लिए शोक है, जो ग्रामदाह से दग्ध मान ली गई थी। प्रथम अंक में एक छात्र ने दर्शकों को वासवदत्ता की सूचित-मृत्यु और उसके अनुरागी पति के हृदय पर पड़े हुए प्रभाव से परिचित कराने के लिए बड़ी स्पष्टता से इसका वर्णन प्रस्तुत किया है। साथ ही वासवदत्ता को ब्रह्मचारी के मुख से यह सुनकर कि रूमण्वान राजा की प्राणरक्षा के लिए प्रत्येक संभव प्रयत्नों को कर रहा है और अब उसके प्राण संकट का कोई भय नहीं हैं। एक शान्ति का अनुभव होता है।
3. **पंचम अंक का महत्त्व-** पंचम अंक में घटनाओं को बड़ी कुशलता से सुप्त राजा और जाग्रत रानी को एक स्थान पर दिखाकर गुम्फित किया गया है। वह स्थिति, जिसमें वासवदत्ता सोये हुए उदयन को पद्मावती समझने की भूल करती है बड़े स्वभाविक ढंग से दर्शकों के सामने व्यक्त की गई है। रोगों के कक्ष में मंद प्रकाश है। विदूषक सुप्त नृपति के शरीर को ढकने के लिए कम्बल लाने को बाहर गया है। शय्या का एक भाग रिक्त है। वासवदत्ता रोगग्रस्त पद्मावती को छोड़ना नहीं चाहती है, जो उसकी दृष्टि से प्रगाढ़ निद्रा में मग्न थी और पहले की अपेक्षा कुछ स्वस्थ थी। वासवदत्ता की वह छाया जो स्वप्न में राजा को दिखाई देती देती हैं वह मस्तिष्क में दिनरात उसी के चिन्तन और उसके अग्नि में जल मरने के कारण व्यथापूर्ण विचारों के मन्थन का स्वाभाविक परिणाम है।
4. **नाटककार की कुशलता -** छठे अंक में घोषवती वीणा के आविर्भाव से राजा उदयन का शोक अन्तिम सीमा पर पहुंच जाता है। नाटक का दुःखान्त सामने आ जाता है। नाटक की प्रत्येक घटना दुःखान्त से साक्षात् संबंध रखती है। नाटक में उद्देश्य की सुचिन्तित एकता सर्वत्र पाई जाती है, जो सभी अंगभूत भागों को एकत्र संगठित करती है।
5. **चरित्रों का विकास -** नाटक में चरित्रों का विकास बड़ा ही रूचिकर है। नायक उदयन का चरित्र बड़ा उच्च है। वह विश्वस्त एवं पत्नीव्रत पति है। वासवदत्ता निःस्वार्थ, पतिव्रता और अपने पति के निमित्त सर्वस्व त्याग करने वाली आदर्श पत्नी है। पद्मावती उच्चशय कुमारी है। वह नारी जगत का श्रृंगार है। नाटक का रस विप्रलम्भ श्रृंगार है, जो करूणा समन्वित है। उदयन का अपने खोये राज्य को पाने के लिए पद्मावती के साथ विवाह करना, इस रस का अंभीगूत है। स्वप्न नाटक के मस्तिष्क की सर्वोत्तम कृति है।
6. **कथा का मुख्य विषय -** यह नाटक दाम्पत्य प्रेम को आदर्श रूप से चित्रित करता है। यह वस्तुतः इस युग के लिए एक रक्षित आदर्श परम्परा है। नाटककार का मुख्य उद्देश्य है, एक ओर तो उस आदर्श रानी के पूर्व आत्मत्याग को रूपांकित करना है, दूसरी ओर उसके पति का चित्र खींचना है, जो हृदय से तो अपने प्रेम (पत्नि प्रेम) के प्रति निष्ठावान है परन्तु अनचाहे

राज-जीवन की आवश्यक मांगों के प्रति आत्मार्पण कर देता है। कहानी का मुख्य विषय है - अटल, दृढ़ और अमर प्रेम की विजय, जिसके लिए किसी भी प्रकार का महान् बलिदान साधारण है।

7. **नाटक का चमत्कार -** 'स्वप्न'नाटक में भास की कला की चरम परिणति दिखाई देती है। नाटकीय संविधान, चरित्रांकन, संवाद, प्रकृति चित्रण तथा रसोन्मेष - सभी तत्वों का इस नाटक में पूर्ण परिपाक हुआ है। यों तो इसके सभी दृश्य आकर्षक हैं पर स्वप्न वाला दृश्य अधिक महत्वपूर्ण है। इसे देखकर दर्शक विशेष रूप से अभिभूत हो जाते हैं। धीर ललित नायक उदयन की कला प्रियता जहां एक ओर दर्शकों का आवर्जन करती है, वहीं कूटनीतिज्ञ यौगन्धरायण की बुद्धि कौशल उन्हें चमत्कृत कर देता है।पद्मावती एवं वासवदत्ता के विनोद में शिष्ट हास्य की झलक है तथा विदूषक के वचनों से हास्य की सृष्टि की गई है।

8. **उदयन का संक्षिप्त परिचय -** वत्सराज उदयन सुप्रसिद्ध पाण्डव वंश का एक ख्यातनामा वंशज था। वह शंशाक का पुत्र और सहस्रांक का पौत्र था। पुराणो के मत से वह अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु की वंश परम्परा क्रम में पच्चीसवीं पीढ़ी में पड़ता है। इसलिए अर्जुन से 26 पीढ़ी नीचे है। भागवत अनुसार अर्जुन की छब्बीसवीं पीढ़ी में दुर्दमनः का नाम आता है। दुर्दमन को द्वितीयशतानीक का पुत्र और सुदामा का पौत्र कहा गया है। यही दुर्दमन हमारा उदयमन हो सकता है। भास ने उसको अत्यन्त सुन्दर तथा महान् पाण्डवों से उत्तराधिकार में प्राप्त वंश श्रेष्ठता का अभिमान करने वाला कहा है। पहले उसने अभिमान के साथ वासदत्ता की विवाह - याचना को अस्वीकार कर दिया था। इसलिए उसको काष्ठमय हस्ती के कूटोपाय से जीवित पकड़ लेने का षड्यंत्र रख गया।

17.10 चरित्र चित्रण

1. उदयन-

स्वप्नवासवदत्तम् नाटक के नायम का नाम वत्सराज उदयन है। शास्त्रीय दृष्टि से वह धीरललित कोटि का नायक है - निश्चिन्तो मृदुरनिशं कलापरो धीरललितः स्यात्।।*(साहित्यदर्पण - 3/34)* वह कला प्रेमी विलासी तथा रूपवान् एवं वीणा वादन की कला में दक्ष है। जब वह आखेट के लिए जाता है, जो तभी लावाणक में अग्निदाह की घटना घटती है। उदयन युवक, वीर, सुशील और अत्यन्त गंभीर है। वह एक विश्वासपात्र तथा पत्नीव्रती पति है। अपनी प्रियतमा वासवदत्ता की अग्नि में जल मरने की सूचना पाकर वह इतना व्यथित होता है कि उसी अग्नि में अपने को भी भस्म करने का उद्यत हो जाता है। लावाणक से लौटने वाला ब्रह्मचारी उसके स्त्री के लिए विलाप को संसार मे अनुपम बताता है-

"नैवेदानी तादृशाश्चक्रवाका
नैवाप्यन्ये स्त्री विशेषैर्वियुक्ताः।
धन्या सा स्त्री यां तथा वेत्ति भर्ता
भर्तृस्नेहात्सा हि दग्धाप्यदग्धा।।"

वह बहुपत्नीक होते हुए भी दक्षिण्य गुण से युक्त है। एक पत्नी के रहने पर वह जानबूझकर दूसरा विवाह नहीं करता, अपितु परिस्थितिवश वैसा करने को प्रस्तुत करता है। वासवदत्ता के प्रति उसका प्रगाढ़ प्रेम हैं और पद्मावती से परिणय होने पर भी वासवदत्ता की स्मृति उसे बनी रहती है। पद्मावती से विवाह करने के पश्चात जब विदूषक उससे वासवदत्ता के संबंध में

पूछता है तो वह उत्तर देता है कि पद्मावती वासवदत्ता की भांति उनके मन को आकृष्ट नहीं करती।

वासवदत्ता की मृत्यु हो जाने के बाद भी उसका प्रेम उदयन के हृदय में विद्यमान रहता है। वह वासवदत्ता के प्रति अगाढ़ प्रेम का भाव रखते हुए भी पदमावती के वियोग में अश्रु सिक्त नेत्र होने वह पदमावती से अश्रुपूर्ण पेत्र होने के कारण पुष्पों का पराग नेत्रों में पड़ जाने को कहता है।

उदयन में दाक्षिण्य अर्थात् उदारता का गुण कूट कूटकर भरा हुआ है और वह वासवदत्ता के प्रति अपने प्रेम को पदमावती पर प्रकट नहीं होने देता। राजा अत्यधिक कला परायण है और मृदु होने के कारण उसमें क्रोध का अभाव है। पर इसमें शौर्य की कमी नहीं है। पंचम अंक में आरूणि पर रूमण्वान् द्वारा आक्रमण की बात सुनकर वह युद्ध के लिए उद्यत हो जाता है। उदयन में गुरूजनों के प्रति सम्मान की भावना है। महासेन तथा अंगारवती के यहां से आए हुए ब्राह्मण का संदेश सुनने के लिए वह आसन से उठ जाता है। जब उसकी घोषवती वीणा मिल जाती है। वह उसे घोषवती की स्वामिनी के प्रति कृतघ्नता के लिए उपालम्भ देता है। वह खुले हृदय से प्रद्योत के कंचुकी के सामने शपथ लेता है।

'कथं सा न मया शक्या स्मर्तुं देहान्तरेष्वपि।'

वह अपनी वासवदत्ता को जन्मान्तर में भी नहीं भूल सकता। स्वप्न में वासवदता की प्रतिमूर्ति का दर्शन वासवदता की काल्पनिक मृत्यु के कारण सतत आकुल चिन्तन से भ्रान्त मस्तिष्क की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। वह अपहृत राज्य की पुनः प्राप्ति पर भी सुखी नहीं है, क्योंकि उसकी प्राणप्रिया वासवदत्ता मर गई है। वह लोक व्यक्त को जानता है। वह कहता है -

"यात्रात्वेषा यद्विचुच्येह वाष्पं
प्राप्तानृण्या याति बुद्धि प्रसादम्।।"

पुनः जब पद्मावती महासेन के दूतों के सामने उसके साथ बैठने से उसको करती है तो वह इंगित करता है कि स्त्री दर्शन के अधिकारी व्यक्ति की स्त्री दर्शन रोक देने पर अनेक दोष उत्पन्न हो जाते है। यद्यपि युवावस्था में वह कुछ उतावला था, परन्तु अपने इस उतावेलपन के लिए सर्वदा पश्चाताप करता है। उदयन युवा वीर और श्रेष्ठ व्यक्ति था। परन्तु अभिमानी और इतना अधिक विलासी था कि वासुवदत्ता के प्रति अधिक आसक्त होने के कारण वह अपने राज्य को भी खो बैठा। वह कुछ हद तक एक दुर्बल राजा था। सौभाग्य से उसे यौगन्धरायण जैसा विश्वस्त एवं स्वामि भक्त अमात्य प्राप्त हो गया, अन्यथा उसकी दुदर्शा निश्चित थी।

2. वासवदत्ता

वासवदत्ता त्याग की प्रतिमूर्ति एवं रूपयौवनवती पति प्राण रमणी है। वह स्वामी के हितके लिए अपना सर्वस्व त्याग देने में भी नहीं हिचकती तभी उसका उससे परिचय हुआ था और अन्ततः यह परिचय प्रगाढ़ प्रेम के रूप परिणत हो गया। वासवदत्ता एक पतिव्रता और निःस्वार्थ पत्नी है, जो अपने पति के लिए अपने सर्वस्व का बलिदान कर देती है। वह अत्यन्त बुद्धिमती एवं कर्तव्य पर है। वह यौगन्धरायण की योजना को तत्काल स्वीकार लेती है। यद्यपि आगे चलकर उसको महान् कष्ट और सन्ताप उठाना पड़ता है। उसका आत्मत्याग तथा आत्म बलिदान वर्णनातीत और प्रशंसा से परे है। प्रथम अंक में वह बहुत ही संवेदनशील, आत्मसयम से युक्त महिला ज्ञात होती है। जब पद्मावती के सेवन तपोवन के निवासियों को रहे

थे, तब वह यौगन्धरायण से पूछती है कि क्या मैं भी यहां से हटाई जाऊंगी (अहमपि नाम उत्सारयितव्या भवामि) और वह वह इस उत्सारणा-जन्य अपमान को अधिक अनुभव करती है।

अदृष्ट के परिहास से वह अपनी भावी सपत्नी की संरक्षता में रख है। उसकी नारी सुलभ ईर्ष्या कभी कभी प्रकट हो जाती है। वह यह सोचकर कि पति अब दूसरी स्त्री का पति हो गया ।(आर्यपुत्रो5पि परकीयः संवृतः) बहुत व्यथित है। वह पद्मावती की वैवाहिक माला में सपत्नी मर्दन नाम की जड़ी नहीं गूंथती उसका पति दूसरी स्त्री से विवाह विधि सम्पन्न करें, इसको वह देखने में असमर्थ इसलिए पद्मावती के विवाह संस्कार के समय अपने को प्रमदवन के कुंज में लेती है। वह अपने प्रच्छन्न जीवन काल में सदा अपने में प्रशंसनीय आत्म संयम हैऔर सदा सचेष्ट रहती है कि कहीं यौगन्धरायण की योजना निष्फल न हो वह काफी चतुर है तथा किसी भी स्थिति में अपनी मृत्यु के रहस्य को नहीं खोलती। माधवी निकुंज से अपने पति के मुख से प्रेमाभिव्यंजना को कि

"वासवदत्ता बद्धं तु न तावन्मे मनो हरति।"

चुपके से सुनकर वह अलौकिक आनन्द का अनुभव करती है और कह उठती है कि- दंत वेतनमस्य परिखेदस्य अहो! अज्ञातवासो5पि अत्र बहुगुणः सम्पद्यते।' वासवदत्ता अत्यन्त कोमलाहृदया है और पद्मावती के प्रति बड़ा स्नेहपूर्ण व्यवहार करती है। पद्मावती की अवस्थता को सुनकर वह अत्यधिक क्लेश का अनुभव करती है, क्योंकि उसका पति, जो कि उसक वियोग के कारण शोकातुर है, अपने इस एकमात्र मनोविनोद के साधन के अभाव में अधिक दुःखी होगा -

आर्यपुत्रस्य विश्रामस्थानभूता इयमपि नाम पद्मावती अवस्था जाता।"

(अंक 5, पद्य 6 के बाद)

वह स्वप्न दृश्य में दीर्घकाल के अनन्तर अपने पति को आँख भर देख पाती है। उसका कर्तव्य परायण मस्तिष्क उसको शीघ्र ही पृथक हो जाने का आदेश देता है परन्तु उसका कर्तव्य परायण भावना की विजय होती है और वह अपने को वहां से हटाती है, किन्तु अपने पति की लटकती हुई भुजा को बिस्तर पर यथा स्थान रखे बिना नहीं जाती। कभी-कभी पति पक्षपात के कारण वह शिष्टता की सीमा को भी अतिक्रान्त करने लगती थी। (आर्यपुत्र पक्षपातेन अतिक्रान्तः समुदाचारः) फिर भी उसका प्रत्युत्पन्न मतित्व उसको उसकी .त्रुटियों को दूर करने में सहायता देने लगता था। संक्षेप में वह विधाता की एक सुन्दर सृष्टि है या नारी के सहज गुण दोषों से युक्त परन्तु आदर्श नारी है।

3. पद्मावती –

पद्मावती मगध नरेश दर्शक की भगिनी थी। इसलिए वह मगध के राजा आजतशत्रु के कन्या थी। वह बहुत ही धर्मप्रिया, प्रतिज्ञापालिनी एवं उदारहृदयी राजकुमारी है-

"धर्मप्रिया नृपसुता न कि धर्मपीडा-
मिच्छेत् तपस्विषु कुलव्रतमेदतस्याः।। (1.6)

वह सुन्दर, उच्चाशय, परोपकारी और सहानुभूतिशीला है। वह दान की घोषणा करती है और जब उसका प्रतिहारी, यौगन्धरायण की अपनी बहिन को न्याय रूप में राजकुमारी की संरक्षकता में रखने की याचना को स्वीकार कर लेने से हिचकता है, जब प्रतिहारी को उसकी

याचना अस्वीकार कर लेने के लिए आदेश दे देती है, क्योंकि अपनी प्रतिज्ञा को घोषित कर उसके पालने से विमुख होना उसकी दृष्टि से उचित न हो।

राजकुमारी पद्मावती उच्च विचार की थी, द्वेष तो उसे छू तक नहीं सकता। वह माधवी निकुंज से अपने - अपने की गोपनीय वार्ताओं को चुपके से सुन लेता है कि वह उसकी अपेक्षा वासंवदत्ता को अब भी अधिक प्यार करता है, तथापि वह अपने मन में रंचमात्र भी बुरा नहीं मानती। यही नहीं, जब उसकी दासी उसके पति के कथन पर आक्षेप करती है, तो वह उसकी क्षुद्रता पर उसे फटकाती है। वह कहती है कि

"हला मामैवम्। सदाक्षिण्य एव आर्यपुत्रः य इदानीमपि टार्यायाः गुणान्स्मरति।" (अंक 4, पद्य 4 के बाद)

जब वासवदत्ता के पिता के दूत उदयन को बधाई देने आते हैं, वह पति से कहती है कि

"आयुपुत्र प्रियं में ज्ञातिकुलस्य कुशलवृत्तान्तं श्रोतम्।"

(अंक 6, पद्य 3 के बाद)

ये सभी गुण उसकी कुलीनता के अनुरूप ही है। विदूषक के शब्दों में ?

"तत्र भवती पद्मावती तरूणी दर्शनीया अकोपना अनहं मधुरवाक् सदाक्षिण्या अयं चापरो महान् गुणः स्निग्धेन भोजनेन मां प्रत्युद्गच्छति।

(अंक 4, पद्य 4 के बाद)

जब पद्मावती राजा को समर्पित किए गए चित्र फलक को देखती है, तो वासवदत्ता के चित्र को प्रणाम करती है। जब आवन्तिका यथार्थ (वासवदत्ता के) रूप प्रकट करती है। ये सभी उसकी प्रशंसनीय प्रकृति का परिचय देते हैं। उसने आवन्तिका प्रति सदा प्रिय सुखी का व्यवहार किया, न कि अपने आश्रितजन या अनुचर का। चरित्र निष्कलुष है। इस शताब्दी के नारी जगत् कदाचित् ही कोई उसकी समता कर सके।

4. यौगन्धरायण –

यौगन्धरायण का दर्शन केवल प्रथम और पष्ठ अंक में है, तथापि वह नाटक का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पात्र है। सारी घटनाओं का केन्द्र बिन्दु है। वह अपनी समर्थ भुजाओं पर सारे घटना-चक्रों को उठाए हुए है। राजा षष्ठ अंक में उसकी योग्यता के अनुरूप ही उसकी प्रशंसा की है -

"यौगन्धरायणो ननु भवान्
मिथ्योन्मादैश्च खलु वयं मज्जमानाः समुद्धृताः ॥

भवद्यत्नैः खलु वयं मज्जमानाः समुद्धृताः (6. 8)

यह यौगन्धरायण ही था, जिसने अपहृत राज्य को पुनः हस्तगत करने महत्वपूर्ण योजना बनाई। वह महान् कूटनीतिज्ञ था। वह सजग होकर योजना की प्रस्तुत करता था और दृढ़ता से उसको कार्यान्वित करता था। वह बहुत ही विचारशील और बुद्धिमान है। वह बड़ी ही बुद्धिमत्ता से वासवदत्ता को आश्वासन देता है-

"एवमनिर्ज्ञातानि दैवतानि अपि अवधूयन्ते। (अंक 1, पद्य 3 के बाद)

वह ज्योतिषियों की भविष्यवाणी में अटल विश्वास करता था। उसके की यह विलक्षणता आज के युग में खटकने वाली है। वह बहुत ही वीर, विश्वास तथा अपने स्वामी के प्रति राजभक्त था। यह यौगन्धरायण के चरित्र का सबसे बडा गुण है। वह स्वामी के हित में अपना

हित समझता है और उसके सुख दुःख को अपना सुख दुःख मानता है। उसकी स्पष्ट मान्यता है कि -

"स्वामि भाग्यानामनुगन्तारो वयम् (अंक 6, पद्य 18 के बाद)

इसके मन में वत्सराज उदयन के प्रति बहुत प्रेम और आदर है। इसका स्वभाव इतना निर्मल है कि राजा के भावी संबंधियों को भी यह आत्मीय समझता है। प्रथम अंक के तपोवन में राजकुमारी पद्मावती को देखकर वह कहता है कि -

"प्रद्वेषों बहुमानो वा संकल्पादुपजायते।
भर्तदाराभिलाषित्वादस्यां में महती स्वता।।" (1.7)

राजा का कल्याण ही उसके मस्तिष्क में चक्कर काटता रहता था। राजा का इतना अधिक हितैषी तथा उपकार करने वाला होने पर भी यौगन्धरायण के मन में अहंकार या अनुचित धृष्टता का लेश नहीं है। वह नम्रता की मूर्ति है। अपने प्रत्यन्त में कल होने पर भी वह वासवदत्ता को छिपाकर रखने के कारण राजा के समक्ष जाने में किचकिचाता है कि पता नहीं, मेरे इस कार्य के विषय में क्या कहेंगे -

"प्रच्छाद्य राजमहिषीं नृपतेर्हितार्थ
कामं मया कृतमिदं हितमित्यवेक्ष्य।
सिद्धेऽपि नाम मम कर्मणि पार्थिवोऽसौ
कि वक्ष्यतीती हृदयं परिशंकितं मे।।" (6.15)

वह एक ब्राह्मण मंत्री का यथार्थ अतिरूप, युद्धकाल का वीर सेनापति, शान्तिकाल का कुशल शासन प्रबंधकर्ता और आपत्ति काल राजा को उचित परामर्श देने वाला दृढ़ सचिव था। उसमे एक प्राधानामात्य के निम्नलिखित गुणों का विकास दिखाई देता है -

1. कुशल राजनीति तथा गुप्तचर व्यवस्था का पूर्ण पण्डित
2. प्रत्युत्पन्न मतित्व
3. पराक्रमशीलता
4. आत्मविश्वास की पराकाष्ठा
5. बुद्धिमता के साथ आवश्यकता पड़ने पर शस्त्र व्यवहार की पटुता
6. स्वामिभक्ति के साथ कर्तव्य परायणता
7. त्याग एवं कर्मठता तथा
8. अहर्निश कार्य करने की अपूर्व क्षमता

5. **विदूषक वसन्तक -** नाटकों में विदूषक का प्रयोग हास्यरस के लिए किया जाता है। विदूषक विकृत अंग वाला होना चाहिए। या तो वह बहुत लम्बा होता है अथवा बहुत ठिगना। वह सिर में खल्वाट अर्थात् गंजा होना चाहिए। वह दन्तुर होता है यानि उसके दाँत बाहर निकले रहते हैं। उसके हाथ मे एक टेढा डण्डा होता है।

उसकी वेशभूषा इस प्रकार की होती है कि उसे देखकर दर्शकों को बरबस हंसी जाए। विदूषक जाति से ब्राह्मण होता है। वह राजा का अभिन्न मित्र तथा नर्स सचिव होता है। विदूषक का नाम किसी पुष्प या ऋतु पर आधारित होना चाहिए।

स्वप्नवासवदत्तम् के विदूषक का नाम वसन्तक' है । नाटक मे इसका आगमन चतुर्थ अंक में होता है। वहां वह राजा उदयन का पद्मावती के साथ विवाह हो जाने के कारण अपनी प्रसन्नता

को व्यक्त करता है। वासवदत्ता के जल मरने के बाद राजा विरही था। उसने खाना पीना भी छोड़ दिया था। उसके शरीर पर वस्त्राभूषण भी मलिन थे। ऐसी दशा मे यह स्वाभाविक था कि विदूषक भी उसी परिस्थति में रहता। इससे विदूषक के जीवन मे सारा उत्साह व आनन्द समाप्त हो गया था। किन्तु राजा द्वारा पद्मावती के साथ विवाह करने के उपरान्त समय ने फिर पलटा खाया और विदूषक के जीवन में परिवर्तन का आगमन हुआ। अपनी इस बदली हुई स्थिति में वह बड़ा प्रसन्न था, जैसा कि वह कहता है -

''इदानीं प्रसादेषूष्यते, अन्तः पुरदीर्घिकासु स्नायते प्रकृतिमधुरसुकुमाराणि मोदक-खाद्यनि खाद्यन्ते।'' (अंक 4)

अपनी भोजनप्रिय प्रकृति के अनुसार वसन्तक वहां भी मोदक खाद्य उल्लेख करना नहीं भूलता। इसके तुरन्त बाद वह बेचारा कहता है कि यहां एक भारी दोष है। मेरा भोजन भली भांति नहीं पचता है। इसके बाद जब वह चेटी मिलता है तो उससे भी यही शिकायत करता है और कहता है कि

- ''आप देवि, भोज्य पदार्थ को छोड़कर और सब कुछ ले आइए, क्योंकि कोकिला की आँख के परिवर्तन के समान भाग्यहीन मेरे भी पेट में परिवर्तन (मरोड़) हो गया है स्पष्ट है कि विदूषक को अधिक खाने से अपच का रोग हो गया है और अब मन में रूचि रखते हुए भी ज्यादा भक्षण नहीं कर सकता है। यह इस पेटू ब्राह्मण को भोजन के प्रति अधिक रूचि का परिचालक है। अनेक अवसरों पर अपनी चतुराई और प्रत्युत्पन्नमतित्व का परिचय देता है। वह पद्मावती से राजा के नेत्रों से आंसू बहने के कारण बड़े कौशल से 'काश पुष्पों' के परागण का आंखों में पड़ जाना बता देता है।

पुनः यही विदूषक राजा को प्रणय संकट से बचा लेता है। जब राजा वासुवदत्ता के प्रति प्रगाढ़ अनुराग के कारण रो रहा था और वहां पद्मावती एकाएक आ जाती है, उस समय वह राजा को स्मरण दिलाकर कि ''आपको यहां से शीघ्र चलना चाहिए क्योंकि अपराह्न में आपको राजा का स्वागत करना है'' वहां से हटा देता है।

राजा शिरोवेदना से पीड़ित पद्मावती से मिलने विदूषक के साथ समुद्र गृह मे जाता है, पर वहां उसे न पाकर विदूषक से कोई कहानी सुनाने को कहता है। पर विदूषक अपनी मूर्खतापूर्ण मनोरंजकता का परिचय देते हुए कहता है -

''अस्ति नगरं ब्रहादत्त ना। तत्र किल राजा काम्पिल्यों नाम (अंक 5, श्लोक 6 के बाद)

यहां विदूषक 'राजा' के स्थान पर नगर का नाम तथा नगर के स्थान पर राजा का नाम ले लेता है। इससे पाठकों, श्रोताओं या दर्शकों को बरबस हंसी आ जाती है। राजा के द्वारा इसे ठीक कर दिए जाने पर वह बार-बार उसका उच्चारण करता है, ताकि उसे याद हो जाए। इस प्रकार राजा का वसन्तक मन बहलाव भी करता है। इस प्रकार 'स्वप्न' नाटक का विदूषक बहुत ही राजभक्त, देशकालभिज्ञ और यथार्थ मानव है। ऐसा विदूषक अन्य नाटकों में नहीं पाया जाता।

17.11 नाटक के पद्यों की अनुक्रमणिका

भास के इस महत्वपूर्ण नाटक से कुल 6 अंक तथा 58 पद्य है। भास मूलतः नाटककार है, जिन पर उनका कवि रूप हावी नहीं हुआ है। यहीं कारण है कि प्रस्तुत नाटक के दूसरे व तीसरे अंक में एक भी पद्य नहीं है। फिर भी कथावस्तु की रोचकता उत्सुकता में कमी नहीं होने पाई है। उनके अविशिष्ट चारों अंकों में पद्य संख्या क्रमशः 16, 10, 13 एवं 19 है। वर्णमालानुसार इनका विवरण इस प्रकार है।

	पद्य के प्रारंभिक शब्द	अंक	पद्य संख्या
1.	अनाहारे तुल्यः प्रततरूदितक्षामवदनः	1	14
2.	अनेक परिहासेन व्याक्षिप्तं मे मनः	4	6
3.	अस्य स्निग्धस्य वर्णस्य विपत्ति	6	13
4.	अहमवजितः पूर्व तावत् सुतैः	6	8
5.	इमां सागरपर्यन्तां हिमवद्विन्ध्य	6	19
6.	इयम् बाला नवोद्वाहा सत्यं श्रुत्वा	4	9
7.	उदययनवेन्दुसवर्णा-वासवदत्ताबलौ	1	1
8.	उपेत्य नागेन्द्र - तुरंग - तीर्णे तमारूणिं	5	13
9.	ऋज्वायतां च विरलां च नतोन्नतां	4	2
10.	ऋज्वायतां हि मुखतोरणलोलमालां	5	3
11.	कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले	6	10
12.	कस्या5र्थ कलशेन को मृगयते	1	8
13.	कातरा ये5प्यशक्ता वा नोत्साहस्तेषु	6	7
14.	कामेनोज्जयिनी गते मयि तदा	4	1
15.	कार्य नैवार्थैर्नापि भोगैर्न वस्त्रैः	1	9
16.	किन्तु सत्यमिदं स्वप्नः सा भूया	6	17
17.	किं वक्ष्यतीति हृदयं परिशंक्तिं में	6	4
18.	खंगा वासोपताः सलिलमवगाहो	1	1
19.	गुणानां वा विशालानां सत्काराणां	4	9
20.	चिरप्रसुप्तः कामो मे वीणया	6	17
21.	तीर्थोदकानि समिधः कुसुमानि	1	4
22.	दुःख त्युक्तं बद्धमूलो 5नुरागः	4	16
23.	धीरस्याश्रमसंश्रितस्य वसतस्तुष्टस्य	1	3
24.	निष्क्रामन् सम्भ्रमेणाहं द्वारपक्षेण	5	6
25.	नैवेदानीं ताद्देशाश्चक्रवाकाः	1	7
26.	पद्मावती नरपतेर्महिषी भवित्री	1	3
27.	पद्मावती बहुमता मम यद्यपि	4	7
28.	परिहरतु भवान् नृपापवादं न परूष	1	13
29.	पादाक्रान्तानि पुष्पाणि सोष्म चेदं	4	11
30.	पूर्व त्वयाप्यभिमतं गतमेवमासीत्	1	5
31.	पृथिव्यां राजवंश्यानामुदयास्त	6	5
32.	प्रच्छाद्य राजमहिषीं नृपतेहितार्थम्	6	4
33.	प्रद्वेषों बहुमानो वा संकल्पादुपजायते	1	4
34.	बहुशो5प्युपदेशेषु यया ममीक्षणाणया	5	6
35.	भारतानां कुले जातो विनीतो	6	15
36.	भिन्नास्ते रिपवो भवद्गुणरताः पौराः	5	7

37.	मृत्यैर्मगधराजस्य स्निग्धैः कन्याः	1	6
38.	मधुमदकला मधुकरा मदनात्र्ताभिः	4	16
39.	महासेनस्य दुहिता शिष्या देवी च मे	6	12
40.	मिथ्योन्मादैश्च युद्धैश्च शास्त्रदृष्टैश्च	6	2
41.	यदि मावदयं स्वप्नो धन्यमप्रतिबोधनम्	5	3
42.	यदि विप्रस्य भगिनी व्यक्तमन्या	6	11
43.	यो5यं संत्रतस्या देव्या तया बाहुः	5	18
44.	रूपश्रिया समुदितां गुणतश्च	5	19
45.	वाक्यमेतत् प्रियतरं राज्यलाभशतादपि	6	14
46.	विस्त्रब्धं हरिणाश्चरन्त्यचकिता	1	11
47.	शय्यायामवसुप्तं मां बोधयित्वा	5	2
48.	शरच्छशांकगौरेण वाताविद्धेन भमिनि	6	12
49.	श्रुतिसुखनिनदे कथं नु देव्याः	4	12
50.	श्रोणीसमुद्वहन्-पाश्र्व - निपीडितानि	6	4
51.	श्लाघ्नामवन्तिनृपतेः सदृशीं तनूजां	6	8
52.	षोडशन्तः पुरज्येष्ठा पुण्या नगरदेवता	5	8
53.	सम्बन्धिराज्यमिदमेत्य महान् प्रहर्षः	6	1
54.	सविश्रमो ह्यंय भारः प्रसक्तस्तस्य	6	2
55.	सुखमर्थो भवेद् दातुं सुखं प्राणाः	1	9
56.	स्मराम्यवन्त्याधिपतेः सुतायाः	1	5
57.	स्वप्नस्यान्ते विबुद्धेन नेत्रविप्रो	5	15

17.12 पात्र - परिचय –

1. पुरूष पात्र

1. सूत्रधार - नाटक का प्रारंभकर्त्ता, रंगमंच का अध्यक्ष
2. भटौ - पद्मावती के दो सेवक
3. यौगन्धरायण - उदयन का प्रधानमंत्री
4. कांचुकीय - अन्तःपुर का वृद्ध सेवक मगध का अधिकारी)
5. कांचुकीय - अन्तः पुर का वृद्ध सेवक (उज्जयिनी का अधिकारी)
6. ब्रह्मचारी - लाणाणक ग्राम में वेदाध्ययन करने वाला एक विद्यार्थी
7. राजा - वत्सदेश का शासक, राजा उदयन (नायक)
8. विदूषक - उदयन का सेवक एवं मित्र वसन्तक

2. स्त्री पात्र

1. वासवदत्ता - उज्जयिनी - नरेश प्रद्योत की पुत्री, राजा उदयन की प्रथम पत्नी (पटरानी) आवन्तिका।
2. पद्मावती - मगध नरेश दर्शक की बहिन, राजा उदयन की द्वितीय पत्नी
3. तापसी - मगध राज्य के तपोवन में रहने वाली एक तपस्विनी।
4. चेटी - पद्मावती की सेविका

5. मधुकरिका - पद्मावती की सेविका
6. धात्री - पद्मावती की धाय (उपमाता)
7. धात्री - पद्मावती की वसुन्धरा नाम की धाय
8. विजया - वत्सराज उदयन की द्वारपालिका।
3. केवल कथा प्रसंग में आने वाले पात्रों का परिचय
1. दर्शक - पद्मावती का भाई, मगध देश का शासक
2. प्रद्योत - उज्जयिनी का राजा महासेन, वासवदत्ता का पिता
3. रूमण्वान्- वत्सराज का मंत्री और सेनापति
4. व्रहादत्त - काम्पिल्य देश का शासक
5. आरूणि - उदयन का राज्य अपहरण करने वाला शत्रु
6. गोनालक - प्रद्योत का पुत्र
7. पालक - प्रद्योत का दूसरा पुत्र
8. पुष्पक और भद्रक - भविष्यवाणी करने वाले दो सिद्ध
9. महादेवी - पद्मावती की माता
10. अवन्तिसुन्दरी - एक यक्षी
11. अंगारवती - प्रद्योत महासेन की रानी, वासवदत्ता की माता
12. कुंजरिका - पद्मावती की सेविका
13. विरचिका - उदयन की एक प्रेमिका

17.13 पारिभाषिक शब्दावली

नाटक –काव्य की वह विधा जिसमें चार प्रकार के अभिनयों द्वारा काव्य में उपनिबद्ध पात्रों की अवस्थाओं का अनुकरण किया जाता है – अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्।

सूत्रधार -कथा के सूत्र पकडने वालों को नाटक में सूत्रधार कहा गया-'सूत्रं धारयति इति सूत्रधारः''।

वस्तु – कथावस्तु को वस्तु कहा जाता है।यह आधिकारिक तथा प्रासंगिक दो प्रकार की होती है।

नेता – कथा का नायक नेता कहलाता है जो चार प्रकार है – १ धीरोदात्त २. धीरललित ३. धीरोद्धत ४. धीरप्रशान्त।

रस – रस्यते आस्वाद्यते इति रसः जिसका आस्वादन सहृदयों द्वारा किया जाता है वह रस कहलाता है।

वसन्तक - स्वप्नवासवदत्तम् के विदूषक का नाम वसन्तक' है।

धीरललित - निश्चिन्तो मृदुरनिशं कलापरो धीरललितः स्यात्॥(साहित्यदर्पण - *3/34*) ऐसा नायक जो कलासक्त तथा मृदु स्वभाव हो वह धीरललित कहलाता है।

17.14 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. नाटक किसे कहते है ?
2. भासनाट्क चक्र किसे कहते है ?
3. भास द्वारा स्वप्नवासवदत्तम् की कथावस्तु में किये गये परिवर्तनों का वर्णन किजिए ?
4. भास के काल निर्णय पर एक संक्षिप्त टिपण्णी लिखिए ?
5. स्वप्नवासवदत्तम् के आधार पर उदयन अथवा वासवदत्ता का चरित्र चित्रण किजिए ?
6. स्वप्नवासवदत्तम् के आधार पर भास की नाट्यकला पर एक निबन्ध लिखिए?

17.15 सारांश

इस प्रकार इस इकाई में हमने स्वप्नवासवदत्तम् नामक नाटक का सांगोपांग अध्ययन किया ।इस इकाई मे हमने भास का काल निर्णय, स्वप्नवासवदत्तम नाटक के नामकरण, पात्र योजना ,कथावस्तु, भाषा शैली इत्यादि का विशद अध्ययन किया ।उक्त अध्ययन के आधार यह जाना कि स्वप्नवासदत्तम् नाटक यद्यपि संस्कृत साहित्य का आरम्भिक नाटक है तथापि यह नाटक अन्य सभी कवियों के नाटकों की कसौटी बन गया।

17.16 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, शेषराज, स्वप्नवासवदत्तम्, चौखम्भा संस्कृत प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014.
2. प्रसाद कृष्णदेव, स्वप्नवासवदत्तम्, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008.
3. उपाध्याय चन्द्रशेखर, भास के नाटक, नाग पब्लिशर्स,दिल्ली, 2001.
4. उपाध्याय,बलदेव (सम्पा०), भासनाटकचक्रम्, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 1962.
5. M.R ,Kale (edi.) Svapnavasavadattam (Sixth Edition),Bharatiya Vidya Prakashan, new delhi, 1988.

इकाई 18

स्वप्नवासवदत्तम् (भास)
(प्रथम अङ्क, द्वितीय अङ्क एवं तृतीय अङ्क)

इकाई की रूपरेखा

18.0 उद्देश्य

हम एम० ए० उत्तरार्द्ध संस्कृत के प्रश्नपत्र नाटक तथा नाट्यशास्त्र (MASA-06) के अन्तर्गत महाकवि भास कृत स्वप्नवासवदत्तम् नामक नाटक का अध्ययन करने जा रहे है। हम यहाँ नाटक के कतिपय महत्वपूर्ण विषयों के साथ साथ व्याकरण सम्बन्धी तथ्यों का अवबोध कर सकेगें –

- नाटक में प्रस्तुत श्लोकों का सन्दर्भ एवं प्रसङ्गसहित अनुवाद कर पायेंगे।
- अङ्कों में प्रस्तुत श्लोकों के माध्यम से नाट्यशास्त्र के अङ्गों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- श्लोकों के पदों में आने वाले व्याकरणिक तथ्य यथा प्रकृति-प्रत्यय, सन्धि, समास इत्यादि का अवबोध कर सकेंगे।
- श्लोकों के अन्तर्गत प्राप्त छन्द, अलङ्कारों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे

18.1 प्रस्तावना

दृश्य काव्यों में नाटकों का सर्वोत्तम स्थान है और भासकृत 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक दृश्य काव्य का श्रेष्ठ उदाहरण है। प्रस्तुत नाटक में ६ अङ्क हैं और यह भास द्वारा रचित नाटक 'प्रतिज्ञा-यौगन्धरायण' का ही उत्तरार्द्ध है। इस नाटक का नाम 'स्वप्नवासवदत्तम्', राजा उदयन के द्वारा स्वप्न में वासवदत्ता के दर्शन होने के आधार पर रखा गया है। प्रस्तावित नाटक में मन्त्री यौगन्धरायण द्वारा झूठी सूचना फैला दी जाती है कि वासवदत्ता अग्नि में जल गयी है। इसके पश्चात् अपनी योजना के अनुसार उदयन और पद्मावती का विवाह करवा देता है ताकि राजा दर्शक उदयन की आरूणि को परास्त करने में सहायता कर सके और उदयन को पुनः अपना खोया हुआ राज्य प्राप्त हो सके।
इस नाटक का मुख्य नायक वत्सराज उदयन और नायिका वासवदत्ता है। अङ्गी रस शृंगार है। नाटक में कुल ५७ पद्य हैं। इनमें अनुष्टुप्, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, वसन्ततिलका इत्यादि छन्दों का प्रयोग हुआ है।

18.2 स्वप्नवासवदत्तम् के प्रथम अङ्क के श्लोकों की अन्वय सहित व्याख्या

नान्द्यन्ते ततः प्रविशति सूत्रधारः

सूत्रधारः-

उदयनवेन्दुसवर्णावासवदत्ताबलौ बलस्य त्वाम्।
पद्मावतीर्णपूर्णौ वसन्तकम्रौ भुजौ पाताम् ।।१।।

सन्दर्भः- प्रस्तुत मङ्गलाचरण महाकवि भासकृत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के प्रथम अङ्क से लिया गया है।

प्रसङ्गः- प्रस्तुत श्लोक में भास के द्वारा बलराम की बलिष्ठभुजाओं से पाठकों की रक्षा की कामनाकी गयी है।

अनुवादः- उदयकालीन नूतन चन्द्रमा की भांति उज्ज्वल वर्णवाली, मदिरापान के कारण वृद्धि को प्राप्त होने वाली अथवा प्रियतमा रेवती को मदिरापान करवाने वाली श्री (लक्ष्मी एवं सौन्दर्य) से युक्त तथा बसन्त ऋतु के तुल्य सौन्दर्यशाली बलराम की दोनों भुजायें आप दर्शकों अथवा पाठकों की रक्षा करें।

विशेषः- नाटक के प्रारम्भ में नान्दी पाठ किया जाता है अतएव कहा गया है- रंगविघ्नोपशान्त्यर्थं नान्दीमादौ प्रयोजयेत्।

'नान्दी' शब्द की व्युत्पत्ति - नन्दति देवा अस्यामिति नान्दी अथवा नन्दयति देवद्विजनृपादीनाम् इति नान्दी।

नान्दी का एक अन्य लक्षण आचार्य विश्वनाथ के द्वारा दिया गया है -

आशीर्वचन संयुक्तास्तुतिर्यस्मात् प्रयुज्यते।
देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता।।

नाटक की निर्विघ्न समाप्ति के लिये देवता, द्विज, राजा इत्यादि की आर्शीवादात्मक स्तुति नान्दी के द्वारा की जाती है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी –

नान्दी → नन्द् धातु, अच् प्रत्यय = नन्दः तत्पश्चात् अण् प्रत्यय तथा ङीप्।

अवतीर्णम् →अव्+तृ+क्त प्रत्यय

पाताम् →पा 'रक्षणे',लोट्लकारः, प्र0 पु0 ए0 व0

पद्मावतीर्णपूर्णौ → पद्माया लक्ष्म्या अवतीर्णेन अवतारेण पूर्णौ सम्पन्नौ (तृ0 तत्पुरुष)

बसन्तकम्रौ → बसन्त इव कम्रौ बसन्तकम्रौ - उपमित समास

अलङ्कार – अनुप्रास तथा मुद्रालंकार

छन्द - आर्या छन्द

विशेष – प्रस्तुत पद्य में आशीर्वादात्मक मङ्गलाचरण है जिसमें महाकवि भास के द्वारा बलराम की भुजाओं से रक्षा करने की प्रार्थना की है। इसके साथ ही यहाँ वस्तुनिर्देशत्मक मङ्गलाचरण भी है क्योंकि इस मङ्गलाचरण में नाटक के मुख्य पात्रों - उदयन, वासवदत्ता, पद्मावती और वसन्तक के माध्यम से कथावस्तु का निर्देश भी किया गया है।

भृत्यैर्मगधराजस्य स्निग्धैः कन्यानुगामिभिः ।
धृष्टमुत्सार्यते सर्वस्तपोवनगतो जनः ॥२॥

अन्वय: - मगधराजस्य स्निग्धैः कन्यानुगामिभिः भृत्यैः सर्वस्तपोवनगतो जनः धृष्टम् उत्सार्यते ।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पद्य भासोहासः द्वारा प्रणीत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के प्रथम अङ्क से अवतरित है।

प्रसङ्ग : - सूत्रधार यहाँ इस श्लोक में तपोवनवासियों को हटाये जाने की सूचना देते हुये कहता है –

अनुवाद – मगधाराज के स्नेही, कन्या का अनुगमन करने वाले सेवकों के द्वारा सभी तपोवनवासी धृष्टतापूर्वक हटाये जा रहे हैं ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

मगधराजस्य – मगधानां राजा इति मगधराजः तस्य (षष्ठी तत्पुरुष)

स्निग्धैः – स्निह्+क्त

छन्द – अनुष्टुप् छन्द

धीरस्याश्रमसंश्रितस्य वसतस्तुष्टस्य वन्यैः फलैः।
मार्नाहस्य जनस्य वल्कलवतस्त्रासः समुत्पाद्यते।
उत्सिक्तो विनयादपेतपुरुषो भाग्यैश्चलैर्विस्मितः।
कोऽयं भो निभृतं तपोवनमिदं ग्रामीकरोत्याज्ञया ॥३॥

अन्वय:- भोः धीरस्य, आश्रमसंस्थितस्य, वन्यैः फलैः तुष्टस्य, मानार्हस्य वल्कलवतः वसतः जनस्य त्रासःसमुत्पाद्यते। अयं कः उत्सिक्तः विनयात् अपेतः, चलैः भाग्यैः विस्मितः पुरुषः इदं निभृतं तपोवनम् आज्ञया ग्रामीकरोति।

सन्दर्भ:- यह श्लोक 'स्वप्नवासवदत्तम्' के प्रथम अङ्क से उद्धृत है।

प्रसङ्ग:- प्रस्तुत श्लोक में मगध नरेश दर्शक की बहिन राजकुमारी पद्मावती का अनुगमन करने वाले भृत्यों के द्वारा आश्रमवासियों को हटाये जाने का वर्णन किया है । संन्यासी के वेश में यौगन्धरायण तथा अवन्तिका के वेश में आश्रम में वासवदत्ता प्रवेश करते हैं । यौगन्धरायण कहता है :-

अनुवाद :- धैर्यवान्, आश्रमनिवासी, वन में ही उत्पन्न होने वाले कन्द मूल इत्यादि से सन्तुष्ट हो जाने वाले, सम्माननीय एवं वल्कल वस्त्रधारी वनवासी मुनिजनों के लिये भी त्रास उत्पन्न कर रहा है। अरे सिपाहियो ! मर्यादाविहीन एवं नम्रतारहित यह कौन व्यक्ति है, जो चञ्चल भाग्य के अभिमानवश इस शान्त तपोवन को राजाज्ञा से गाँव के समान (अशान्त) बना रहा है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी :-

आश्रमसंस्थितस्य – आश्रमे संस्थितः आश्रितःतस्य सप्तमी तत्पुरुष

मार्नाहस्य – मानमर्हत्यसौ मानार्हस्तस्य

विनयोदपेतपुरुषः – विनयादपेतः दूरीभूतः चासौ पुरुषः (कर्मधारय)

तपोवनम् - तपसे वनम् - चतुर्थी तत्पुरुष

संश्रितस्य – सम्+श्रि+क्त (षष्ठी)

वसतः - वस्+ शतृ (षष्ठी)

तुष्टस्य – तुष्+क्त (षष्ठी)

उत्सिक्तः – उत्+सि+क्त

ग्रामीकरोति - न ग्रामः इति अग्रामः, अग्रामं ग्रामं करोति इति ग्रामीकरोति "अभूततद्भावे इति वक्तव्यम्" इत्यनेन 'च्वि' प्रत्ययः ।

अलङ्कार - आक्षेप अलङ्कार

छन्द - शार्दूलविक्रीडितम् छन्द

पूर्वं त्वयाप्यभिमतं गतमेवमासी-
च्छलाघ्यं गमिष्यसि पुनर्विजयेन भर्तुः।
कालक्रमेण जगतः परिवर्तमाना।
चक्रारपङ्क्तिरिव गच्छति भाग्यपङ्क्तिः ।।४।।

अन्वयः- पूर्वं त्वया अपि एवम् अभिमतं गतम् आसीत्। पुनः भर्त्तुः विजयेन श्लाघ्यं गमिष्यसि। जगतः भाग्यपङ्क्तिः चक्रारपङ्क्तिः इव कालक्रमेण परिवर्तमाना गच्छति।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पद्य भासोहासः द्वारा प्रणीत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के प्रथम अङ्क से अवतरित है।

प्रसङ्ग :- उपर्युक्त पद्य में वासवदत्ता द्वारा यह कहने पर कि श्रम के कारण वैसी व्यथा नहीं होती जैसी तिरस्कार से होती है, यौगन्धरायण कहते हैं महारानी मानो आप के द्वारा इस विषय का पूर्व में भोग करके त्याग कर दिया गया है। अतः आप इस विषय में चिन्ता करनी व्यर्थ है।

अनुवाद :- पूर्व में तुम्हारे द्वारा भी इसी प्रकार अपने अभीष्ट को प्राप्त किया था अर्थात् अपनी इच्छानुसार ही कार्य करती थी। पुनः पति की विजय के द्वारा प्रशंसा को प्राप्त करोगी। संसार की भाग्य रेखा पहिये के अरों की रेखाओं की भांति ही समान समय के क्रम से परिवर्तित होती रहती है।

व्याकरणात्मक टिप्पणीः-

चक्रारपङ्क्तिः – चक्रस्य अराणाम् पङ्क्तिः - (षष्ठी तत्पुरुष)

भाग्यपङ्क्तिः - भाग्यस्य पङ्क्तिः - (षष्ठी तत्पुरुष)

कालक्रमेणः- कालस्य क्रमस्तेन (षष्ठी तत्पुरुष)

अभिमतम् – अभि+मन्+क्त

गतम् – गम्+क्त

श्लाघ्यम् – श्लाघ्+यत्

परिवर्तमाना – परि+वृत्+मुक्+शानच्

अलङ्कार - अर्थान्तरन्यास अलङ्कार

काव्यप्रकाश में अर्थान्तरन्यास अलङ्कार का लक्षण दिया गया है -

"सामान्यं विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते।
यत्र सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणेतरेण वा॥ "

छन्द - वसन्ततिलका छन्द

वसन्ततिलका छन्द का लक्षण – "उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः"

प्रस्तुत श्लोक में मन्त्री यौगन्धरायण वासवदत्ता को आश्वासन दिलाता है कि अपने स्वामी उदयन की विजय के पश्चात् तुम भी प्रशंसनीय राजकीय सम्मान प्राप्त करोगी। कोई भी परिस्थिति सदैव एक जैसी नहीं रहती। समय के परिवर्तित होते ही तुम्हारी परिस्थिति भी बदलेगी और तुम्हारा भी भाग्योदय होगा।

काञ्चुकीयः – सम्भषक ! न खलु न खलूत्सारणा कार्या। पश्य,

परिहरतु भवान् नृपापवादं
न परूषमाश्रमवासिषु प्रयोज्यम्।
नगरपरिभवान् विमोक्तुमेते,

वनमभिगम्य मनस्विनो वसन्ति।।५।।

अन्वयः - भवान् नृपापवादं परहरतु, आश्रमवासिषु परूषं न प्रयोज्यम्। एते मनस्विनः नगरपरिभवान् विमोक्तुम् वनम् अभिगम्य निवसन्ति।

अनुवादः- राजा के अपयश को आप दूर कीजिये। तपोवन के प्रति निष्ठुर, कटु वचन नहीं बोलने चाहिए। ये मनस्वी मुनिजन नगर के अनादर से दूर रहने के लिए ही वन में आकर रहते हैं।

विशेषः- प्रस्तुत पद्य में कञ्चुकी भृत्यों को उनके असभ्य व्यवहार के लिए डांटता है। यहाँ नृपापवाद का तात्पर्य अपयश से है जो सेवकों के अशिष्ट व्यवहार के कारण राजा को प्राप्त होता है क्योंकि स्वभावतः प्रजा इस व्यवहार को राजा का आदेश मानेगी।

व्याकरणात्मक टिप्पणीः-

नृपापवादम् - नृपस्य अपवादम् - षष्ठी तत्पुरुष

प्रयोज्यम् – प्र+युज्+ण्यत्

विमोक्तुम् – वि+मुच्+तुमुन्

अधिगम्य – अधि+गम्+ल्यप्

छन्द – पुष्पिताग्रा

तीर्थोदकानि समिधः कुसुमानि दर्भान्
स्वैरं वनादुपनयन्तु तपोधनानि।
धर्मप्रिया नृपसुता न हि धर्मपीडा-
मिच्छेत् तपस्विषु कुलव्रतमेतदस्याः।।६।।

अन्वयः- तपोधनानि तीर्थोदकानि समिधः कुसुमानि दर्भान् च वनात् स्वैरम् उपनयन्तु। हि धर्मप्रिया नृपसृता तपस्विषु धर्मपीडां न इच्छेत्। एतत् अस्याः कुलव्रतम्।

सन्दर्भः- प्रस्तुत श्लोक 'स्वप्नवासवदत्तम्' के प्रथम अङ्क से अवतरित है।

प्रसङ्ग - प्रस्तुत श्लोक में कंचुकी कहता है कि राजा दर्शक की बहिन महारानी पद्मावती की आज आश्रम में रहने की इच्छा है। अतः उनके लिए जल, समिधाएँ, कुश, पुष्पादि को वन से लाने की व्यवस्था करें।

अनुवाद - तपस्या की साधनभूत सामग्री तीर्थस्थलों का पवित्र जल, समिधाएँ, पुष्प, कुश इत्यादि स्वतन्त्रतापूर्वक वन से लायें क्योंकि धर्मप्रिय राजकुमारी तपस्वियों के नित्य धर्माचरण में बाधा पहुँचाना नहीं चाहती। यह इनका कुलव्रत है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी –

तपोधनानि – तपसः धनानि सम्पादकानि साधनानि (षष्ठी तत्पुरुष)

तीर्थोदकानि - तीर्थस्य उदकानि तीर्थोदकानि (षष्ठी तत्पुरुष)

तीर्थ -'तरति पापादिकं यस्मात् सः तीर्थः तृ+थक्

धर्मप्रिया - धर्मः प्रियाः यस्याः सा (बहुब्रीहि)

अलङ्कार – काव्यलिङ्ग अलङ्कार

छन्द - वसन्ततिलका छन्द

प्रद्वेषो बहुमानो वा संकल्पादुपजायते।
भर्तृदाराभिलाषित्वादस्यां मे महती स्वता।।७।।

अन्वयः- प्रद्वेषः वा बहुमानः, संकल्पात् उपजायते। भर्तृदाराभिलाषित्वात् अस्यां मे महती स्वता (अस्ति)।

सन्दर्भः- प्रस्तुत श्लोक भास द्वारा रचित 'स्वप्नवासवदत्तम्' के प्रथम अङ्क से उद्धृत है।

प्रसङ्ग – उपर्युक्त पद्य में यौगन्धरायण कहता है कि मगधराज की सुपुत्री पद्मावती के विषय में पुष्पकभद्रादि ज्योतिषियों ने स्वामी की पत्नी होने की भविष्यवाणी की थी। अतएव -

अनुवाद – अत्यधिक शत्रुता अथवा अत्यधिक सम्मान, मन के संकल्प अथवा भावना से ही उत्पन्न होते हैं। इसलिए यह स्वामी उदयन की पत्नी बने इसी अभिलाषा के कारण ही इस पद्मावती में मेरी अत्यधिक आत्मीयता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी –

प्रद्वेषः- प्रकृष्टेन द्वेषः इति प्रद्वेषः (प्रादि समास)

संकल्पात् – सम्+क्लृप+घञ्

दारा – 'दार' शब्दः पुंसि बहुवचने च केवलम्

स्वता – स्व+तल्

अलङ्कार - अर्थान्तरन्यास तथा काव्यलिङ्ग अलङ्कार

छन्द - अनुष्टुप् छन्द

कस्यार्थः कलशेन को मृगयते वासो यथानिश्चितं
दीक्षां पारितवान् किमिच्छति पुनर्देयं गुरोर्यद्भवेत्।
आत्मानुग्रहमिच्छतीह नृपजा धर्माभिरामप्रिया
यद् यस्यास्ति समीप्सितं वदतु तत् कस्याद्य किं दीयताम्।।८।।

अन्वयः- कस्य कलशेन अर्थ?कः वासः मृगयते?यथा निश्चितं दीक्षां पारितवान् (स्नातकः) पुनः किं इच्दति यत् गुरोः देयं भवेत्?धर्माभिरामप्रिया नृपजा इह आत्मानुग्रहं इच्छिति। यस्य यत् समीप्सितम् तत् वदतु, अद्य कस्य किं दीयताम्?

सन्दर्भः- यह पद्य 'स्वप्नवासवदत्तम्' के प्रथम अङ्क से अवतरित है।

प्रसङ्ग – इस श्लोक में कञ्चुकी आश्रमवासियों के लिये घोषणा करता है कि आश्रम में रहने वाले तपस्वियों को मगधराजपुत्री पद्मावती धर्माचरण की अभिलाषा से वस्तु का दान देने हेतु आमन्त्रित कर रही है।

अनुवाद - किसे कमण्डलु की आवश्यकता है ?कौन वस्त्र की इच्छा करता है? विधिपूर्वक (वेदाध्ययनादि) व्रत को पूर्ण करने वाला किस वस्तु की कामना करता है जो गुरु को गुरुदक्षिणा में प्रदान करना चाहता है? धर्माचरण करने वाले तपस्वियों से अनुराग रखने वाली राजकुमारी यहाँ स्वयं पर आप लोगों का अनुग्रह चाहती है। अतएव जिसको जो भी इच्छित हो, वह बतलाये, किसे आज क्या दिया जाये।

व्याकरणात्मक टिप्पणी –

यथानिश्चितम् - निश्चयं अनतिक्रम्य इति (अव्ययीभावः)

धर्माभिरामप्रिया - धर्मे अभिरामः अभिरतिः रुचिः यस्यै सा प्रिया धर्माभिरामप्रिया - बहुव्रीहि

देयम् – दा+यत्

समीप्सित् – सम्+आप्+सन्+क्त

अलङ्कार - स्वभावोक्ति तथा अनुप्रास अलङ्कार

छन्द - शार्दूलविक्रीडितम् छन्द

कार्यं नैवार्थैर्नापि भोगैर्न वस्त्रै-
र्नाहं काषायं वृत्तिहेतोः प्रपन्नः।
धीरा कन्येयं दृष्टधर्मप्रचारा
शक्ता चारित्र्यम् रक्षितुं मे भगिन्याः।।९।।

अन्वयः- (मम) न एव अर्थैः, न अपि भोगैः न(च) वस्त्रैः कार्यम् (अस्ति)। न अहं वृत्तिहेतोः काषायं प्रपन्नः। इयं कन्या धीरा दृष्टधर्मप्रचारा (अस्ति) अतएव मे भगिन्याः चारित्र्यं रक्षितुं शक्ता (अस्ति)।

सन्दर्भ – उपर्युक्त पद्य भासकृत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के प्रथम अङ्क से उद्धृत है।

प्रसङ्ग - प्रस्तुत श्लोक में यौगन्धरायण पद्मावती से वासवदत्ता को इंगित करके कहते हैं कि यह मेरी बहन है। इसको आपके पास कुछ समय के लिए संरक्षण में रखना चाहता हूँ क्योंकि इसके पति परदेश गये हुये हैं।

अनुवाद - न मुझे धन से कोई काम है, न मुझे सांसारिक भोगो से और वस्त्रों से कोई प्रयोजन है। मैंने ये काषायवस्त्र भी आजीविका के लिए धारण नहीं किये हैं। धैर्य से युक्त और धर्माचरण को समझने वाली यह कन्या ही मेरी बहिन के चरित्र की रक्षा करने में समर्थ है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी –

दृष्टधर्मप्रचारा – दृष्टः अवगतः धर्मस्य प्रचारो यया सा (बहुव्रीहि समास)

अलङ्कार – अनुप्रास अलङ्कार

छन्द :- वैश्वदेवी छन्द

सुखमर्थो भवेद् दातुं सुखं प्राणाः सुखं तपः।
सुखमन्यद् भवेत् सर्वं दुःखं न्यासस्य रक्षणम्।।१०।।

अन्वयः- (हे देवि!) अर्थः दातुं सुखं भवेत् प्राणाः तपः दातुं सुखं, (भवेत्) अन्यतः सर्वम् सुखं (दातुं भवेत्) न्यासस्य रक्षणं दुःखम्।

सन्दर्भः- प्रस्तुत श्लोक 'स्वप्नवासवदत्तम्' के प्रथम अङ्क से समुद्धृत किया गया है।

प्रसङ्ग - उपर्युक्त श्लोक में काञ्चुकीय पद्मावती से कहती है कि इस तपस्वी की भगिनी को धरोहर के रूप में रखने की प्रार्थना अत्यन्त कठिन है। इसके लिये कैसे स्वीकृति दी जाये क्योंकि -

अनुवाद - हे देवि ! धन देना सरल है, प्राण देना भी सरल है तथा तपजन्य फल का दान भी सम्भव है, अन्य सभी कुछ देना सरल है परन्तु न्यास (धरोहर) की रक्षा का कार्य अत्यन्त कठिन है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी –

दातुम् – दा+तुमुन्

रक्षणम्- रक्ष+ल्युट्

अलङ्कार - अर्थान्तरन्यास अलङ्कार

छन्द - अनुष्टुप् छन्द

पद्मावती नरपतेर्महिषी भवित्री
दृष्टा विपत्तिरथ यैः प्रथमं प्रदिष्टा।
तत्प्रत्ययात् कृतमिदं न हि सिद्धवाक्या-
न्युत्क्रम्य गच्छति विधिः सुपरीक्षितानि।।११।।

अन्वयः- यैः प्रथमं विपत्तिः प्रदिष्टा दृष्टा (तैः) अथ पद्मावती नरपतेः महिषी भवित्री तत्प्रत्ययात् इदं कृतम्। हि विधिः सुपरीक्षितानि सिद्धवाक्यानि उत्क्रम्य न गच्छति।

सन्दर्भ - प्रस्तुत श्लोक महाकवि भास द्वारा लिखित 'स्वप्नवासवदत्तम्' के प्रथम अङ्क से अवतरित है।

प्रसङ्ग - यौगन्धरायण अपने मन ही मन में कहता है कि स्वामी उदयन के विजयी होने पर वासवदत्ता को महाराज के पास ले जाने पर मेरे लिए यह मगधराजपुत्री ही इस विषय की साक्षी होगी क्योंकि -

अनुवाद - सिद्धपुरुष ज्योतिषियों के द्वारा पूर्व में भविष्यवाणी की गयी पराजय रूपी विपत्ति देखी है उनके द्वारा ही इसके पश्चात् पद्मावती महाराजा उदयन की पत्नी होगी, (ऐसी भविष्यवाणी की गयी है) उसी विश्वास से यह कार्य (वासवदत्ता को न्यास रूप में रखना) किया है। निश्चय ही भाग्य भी भली प्रकार से परीक्षित सिद्ध पुरुष के वचनों का अतिक्रमण करके नहीं चलता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी –

सिद्धवाक्यानि – सिद्धानां दैवज्ञानां वाक्यानि (ष.त.पु.) सुपरीक्षितानि - सुष्ठु परीक्षितानि तानि (बहुब्रीहि)

दृष्टा – दृश+क्त+टाप्

विपत्ति – वि+पद्+क्तिन्

प्रदिष्टा – प्र+दिश्+क्त+टाप्

कृतम् – कृ+क्त

उत्क्रम्य – उद्+क्रम+ल्यप्

अलङ्कार – अर्थान्तरन्यास एवं काव्यलिङ्ग अलङ्कार

छन्द - बसन्ततिलका छन्द

विस्रब्धं हरिणाश्चरन्त्यचकिता देशागतप्रत्यया
वृक्षाः पुष्पफलैः समृद्धविटपाः सर्वे दयारक्षिताः।
भूयिष्ठं कपिलानि गोकुलधनानयक्षेत्रवत्यो दिशो
निःसंदिग्धमिदं तपोवनमयं धूमो हि बह्वाश्रयः।।१२।।

अन्वयः- अत्र देशागतप्रत्ययाः हरिणाः अचकिताः (सन्तः) विश्रब्धं चरन्ति, सर्वे वृक्षा दयारक्षिताः पुष्पफलैः समृद्धविटपाः (सन्ति) कपिलानि गोकुलधनानि भूयिष्ठं (सन्ति)। दिशः अक्षेत्रवत्यः। अयं बह्वाश्रयः धूमः (प्रसरति)। अतः निःसन्दिग्धम् इदम् तपोवनम् (अस्ति)।

सन्दर्भ - प्रस्तुत श्लोक महाकवि भासकृत 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक के प्रथम अङ्क से लिया गया है।

प्रसङ्ग - ब्रह्मचारी तपोवन के समीप जाकर यह अनुभव करता है कि निश्चय ही यह तपोवन होना चाहिये क्योंकि -

अनुवाद - यहाँ के सभी स्थलों में विश्वास उत्पन्न हो जाने के कारण हरिण भय त्याग कर विश्वासपूर्वक भ्रमण कर रहे हैं। सभी वृक्ष फूलों एवं फलों से समृद्ध हैं। तथा सभी को दया-अनुकम्पा से संरक्षण प्राप्त है। कपिल वर्ण वाली गायें बहुतायत से है। दिशायें भी खेतों वाली नहीं है। निश्चय ही यह तपोवन है, यहाँ धुँआ भी अनेक आश्रय वाला है अर्थात् सभी मुनिजनों की कुटिया से यज्ञीय अग्नि का धूम उत्पन्न हो रहा है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी –

अचकिताः – अ+चक्+क्त (प्रथमा विभक्ति)

गोकुलधनानि – गवां धेनूनां कुलानि यूथानि तानि धनानीव ("उपमितं व्याघ्रादिभिः" से उपमित समास)

भूयिष्ठम् – (बहु [भू]+यिट्+इष्ठन्)

अलङ्कार – स्वाभावोक्ति तथा काव्यलिंग अलङ्कार

छन्द - शार्दूलविक्रीडितम् छन्द

विशेष:- आश्रम का नैसर्गिक एवं मनोरम चित्रण प्रस्तुत किया है। तपोवन का वातावरण शान्त, सुखद एवं पवित्र है।

नैवदानीं तादृशाश्चक्रवाका नैवाप्यन्ये स्त्रीविशेषैर्वियुक्ताः।
धन्या सा स्त्री यां तथा वेत्ति भर्ता भर्तृस्नेहात् सा हि दग्धाप्यदग्धा ॥१३॥

अन्वय:- इदानीं तादृशाः चक्रवाकाः न एव (सन्ति), स्त्रीविशेषैः वियुक्ताः अन्ये अपि तादृशा न एव (सन्ति) सा स्त्री धन्या यां भर्ता तथा वेत्ति। हि सा दग्धा अपि भर्तृस्नेहात् अदग्धा (वर्तते)।

सन्दर्भ - प्रस्तुत श्लोक भास प्रणीत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के प्रथम अङ्क से अवतरित है।

प्रसङ्ग - इस पद्य में राजा उदयन के वासवदत्ता को स्मरण करते हुए अचेत हो जाने का वृतान्त है। ब्रह्मचारी कहता है कि भूतल पर लौटने से धूल से सने हुये शरीर वाले राजा उदयन ने अचानक उठकर कहा कि हाय वासवदत्ते ! हाय अवन्तिराजपुत्री ! अरे प्रिया ! हाय प्रिया शिष्या ! ऐसा कहकर अत्यधिक विलाप किया और अधिक क्या कहूँ-

अनुवाद - इस परिस्थिति में वैसे चकवे भी नहीं है, न ही स्त्रियों से वियुक्त कोई और है। वह स्त्री धन्य है जिसे पति इस प्रकार से मानता है अथवा याद करता है। पति के स्नेह के कारण निश्चित रूप से वह जलकर भी जली नहीं है अर्थात् जीवित है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

भर्तृस्नेहात् – भर्तुःस्नेह, भर्तृस्नेहः तस्मात् भर्तृस्नेहात् (षष्ठी तत्पुरुष)

स्त्रीविशेषैः - स्त्रीणां विशेषाः स्त्रीविशेषाः तैः (षष्ठी तत्पपुरुष समास)

वाका - (वच्+घञ्) चक्र इति संज्ञया उच्यते इति चक्रवाकः अथवा चक्र इति वाक् यस्य

वियुक्ताः – वि+युज्+क्त

भर्ता – भृ+तृच्

दग्धा – दह्+क्त+टाप्

नैवेदानीम् – न+एव+इदानीम्

नैवाप्यन्ये – न+एव+अपि+अन्ये

अदग्धा - न दग्धा इति (नञ् समास)

अलङ्कार – विरोधाभास

छन्द - शालिनी छन्द। इसका लक्षण "मातौ गौ चेच्छालिनी वेदलोकैः"।

विशेष - इसमें आदर्श दाम्पत्य प्रेम का उदाहरण उपस्थित किया गया है। साथ ही वासवदत्ता के वियोग में उदयन की विरह व्यथा की सशक्त व्यञ्जना हुई है।

अनाहारे तुल्यः प्रततरूदितक्षामवदनः
शरीरे संस्कारं नृपतिसमदुःखंपरिवहन्।

दिवा वा रात्रौ वा परिचरति यत्नैर्नरपतिं
नृपः प्राणान् सद्यस्त्यजति यदि तस्याप्युपरमः।।१४।।

अन्वयः- (हि सः) अनाहारे तुल्यः, प्रततरूदितक्षामवदनः नृपतिसमदुःखं शरीरे संस्कारं परिवहन् दिवा वा रात्रौ वा यत्नैः नरपतिं परिचरति। यदि नृपः सद्यः प्राणान् त्यजति (तर्हि) तस्य अपि उपरमः निश्चितः।

सन्दर्भ - प्रस्तुत पद्य भासप्रणीत 'स्वप्नवासवदत्तम्' से अवतरित है।

प्रसङ्ग - राजा उदयन वासवदत्ता का स्मरण करते हुए शोक से व्याकु भूमि पर लोटने लगते थे। सहसा उठकर राजा वासवदत्ता को पुकारने लगते हैं तब यौगन्धरायण पूछते हैं कि राजा को सान्त्वना देने का क्या किसी मन्त्री ने प्रयत्न नहीं किया तब ब्रह्मचारी बतलाता है कि रुमण्वान् नामक मन्त्री ने महाराज को स्थिर करने का भरसक प्रयास किया -

अनुवाद - वह मन्त्री रूमण्वान् भोजन न करने में महाराज के तुल्य ही है अर्थात् राजा उदयन के भोजन न करने पर स्वयं भी भोजन नहीं करता। निरन्तर ही रोने के कारण (राजा के समान) उसका चेहरा भी निष्प्रभ हो गया है। राजा की भाँति ही वह दुःखपूर्वक शरीर के नित्य संस्कार (नित्य-कर्म स्नानादि) करता हुआ दिन और रात अत्यधिक प्रयत्नपूर्वक राजा की सेवा करता है । यदि (इस परिस्थिति में) राजा प्राण त्याग दे तो उसकी भी तुरन्त मृत्यु हो जाये।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

अनाहारे - न आहारः अनाहारः तस्मिन् अनाहारे (नञ् समास)

प्रततरुदितम् - प्रततं च तद्रुदितं (कर्मधारय समास)

रुदितम् – रुद् + क्त प्रत्यय

नृपतिसमदुःखम्– नृपतिना राज्ञा समं दुःखं यस्मिन् कर्मणि तत् नृपतिसमदुःखम् (बहुब्रीहि समास)

संस्कार – सम्+कृ+घञ्

परिचरति – परि+चर् (लट् लकार प्र.पु., एक व.)

त्यजति – त्यज् (लट् लकार प्र.पु.,एक व.)

अलङ्कार – काव्यलिङ्ग अलङ्कार

छन्द - शिखरिणी छन्द । इसका लक्षण है –

"रसैरुद्रैश्छिन्ना यमन सभलागः शिखरिणी"

सविश्रमो ह्ययं भारः प्रसक्तस्तस्य तु श्रमः।
तस्मिन् सर्वमधीनं हि यत्राधीनो नराधिपः।।१५।।

अन्वयः- हि अयं (मदीयः) भारः सविश्रमः, तु तस्य श्रमः प्रसक्तः। हि नराधिपः यत्राधीनः सर्वं तस्मिन् अधीनम्।

सन्दर्भ - प्रस्तुत श्लोक नाटककार भास द्वारा रचित 'स्वप्नवासवदत्तम्' के प्रथम अङ्क से समुद्धृत है।

प्रसङ्ग - वासवदत्ता कहती है कि आर्य पुत्र अब उत्तम संरक्षण में है तब यौगन्धरायण मन में कहता है कि अरे मन्त्री रुमण्वान् अत्यधिक भार उठा रहा है यतोहि -

अनुवाद - निश्चय ही यह मेरा भार विश्राम युक्त है परन्तु उस रुमण्वान् का तो निरन्तर परिश्रम है क्योंकि राजा जिस पर आश्रित है सभी कुछ उसी पर आश्रित होता है।

सविश्रमः – विश्रमेण विश्रान्त्या सहितः सविश्रमः (तत्पुरुष समास)

नराधिपः – नराणाम् अधिपः (तत्पुरुष षष्ठी)

भार – भृ+अच्

प्रसक्त – प्र+सज्+क्त

अलङ्कार – अर्थान्तरन्यास अलङ्कार

छन्द - अनुष्टुप् छन्द

विशेष– इस पद्य में यह बतलाया गया है कि राज्य का सम्पूर्ण दायित्व राजा का ही होता है और अब यही दायित्व रुमण्वान् पर आ गया है तो निश्चय ही राज्य का पूर्ण भार भी उसी को वहन करना है।

खगा वासोपेताः सलिलमवगाढो मुनिजनः
प्रदीप्तोऽग्निर्भाति प्रविचरित धूमो मुनिवनम्।
परिभ्रष्टो दूराद्रविरपि च संक्षिप्तकिरणो
रथं व्यावर्त्यासौ प्रविशति शनैरस्तशिखरम्।।१६।।

अन्वयः- खगाः वासोपेताः मुनिजनः, सलिलमवगाढः, प्रदीप्तः अग्निःभाति, धूमः मुनिवनं प्रविचरति। अपि च दूरात् परिभ्रष्टः रविः संक्षिप्तकिरणः सन्, रथं व्यावर्त्य शनैः अस्तशिखरं प्रविशति।

सन्दर्भ - प्रस्तुत श्लोक संस्कृत के प्रथम नाटककार भासकृत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के प्रथम अङ्क से समुद्धृत है।

प्रसङ्ग - प्रस्तुत पद्य में काञ्चुकीय कहता है कि हे वासवदत्ता। आइये। आप इधर से चलिये। क्योंकि इस समय -

अनुवाद - पक्षी अपने निवास-स्थान पर चले गये हैं। मुनिजनों ने जल में स्नान प्रारम्भ कर दिया है, यज्ञ की प्रज्वलित अग्नि चमक रही है, आश्रम में (यज्ञ का) धुआँ फैल रहा है। दूर आकाश से गिरा हुआ तथा अपनी किरणों को समेटे हुए सूर्य भी अपने रथ को लौटाकर धीरे-धीरे अस्ताचल की ओर जा रहा है। इससे प्रतीत होता है कि सन्ध्याकाल हो गया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

अवगाढ – अव्+गाह्+क्त

प्रदीप्त – प्र+दीप्+क्त

परिभ्रष्ट – परि+भ्रंश+क्त

व्यावर्त्य – वि+आ+वृत्त+णिच्+ल्यप्

अलङ्कार – अनुमान एवं स्वभावोक्ति अलङ्कार

छन्द - शिखरिणी छन्द

विशेष - प्रस्तुत श्लोक में सूर्यास्त का स्वाभविक तथा सजीव चित्रण करने में कवि का प्रकृति प्रेम दिखलाई पड़ता है।

18.3 स्वप्नवासवदत्तम् के द्वितीय अङ्क के श्लोकों की अन्वय सहित व्याख्या

स्थान - मगधाधिपति दर्शक के प्रसाद का उपवन भाग।

समय - पूर्वाह्न से सायंकाल तक।

(ततः प्रविशति चेटी)

कुञ्जरिके ! कुञ्जरिके ! कुत्र कुत्र भर्तृदारिका पद्मावती। किं भणसि? एषा भर्तृदारिका माधवीलतामण्डपस्य पार्श्वतः कन्दुकेन क्रीडती'ति। यावद् भर्तृदारिकामुपसर्पामि। (परिक्रम्यावलोक्य)

अम्मो इयं भर्तृदारिका उत्कृतकर्णचूलिकेन व्यायामसंजातस्वेदबिन्दुविचित्रितेन रिश्रान्तरमणीयदर्शनेन मुखेन कन्दुकेन क्रीडन्तीत एवागच्छति। यावदुपसर्प्यामि। (निष्क्रान्ता)
(तत्पश्चात् चेटी प्रवेश करती है)
अनुवाद – चेटी - कुञजरिका ! ओ कुञ्जरिका! राजकुमारी पद्मावती कहाँ है? क्या कहती हो? "यह राजकुमारी माधवी लता-कुञ्ज के समीप गेंद से खेल रही है? अच्छा, तो मैं राजकुमारी के पास जाती हूँ। (घूमकर तथा देखकर) ओह, यह कान की बालियों को ऊपर उठाये हुये, परिश्रम से उत्पन्न हुये पसीने की बूंदों से विचित्र शोभा वाली और थकान के कारण सुन्दर दिखाई देते मुख वाली यह राजकुमारी पद्मावती गेंद खेलती हुई इधर ही आ रही है। तो मैं भी इनके पास चलती हूँ। (निकल गई)
विशेष - प्रस्तुत गद्यांश से यह ज्ञात होता है कि भासकालीन समाज में कन्दुक क्रीड़ा कन्याओं में लोकप्रिय थी। कल्हण की राजतरंगिणी में भी इसका चर्चा है।
प्रवेशकः
(ततः प्रविशति कन्दुकेन क्रीडन्ति पद्मावती सपरिवारा वासवदत्ता सह)
वासवदत्ता- हला! एष ते कन्दुकः।
पद्मावती- आर्ये! भवत्विदानीमेतावत्।
वासवदत्ता- हला! अतिचिरं कन्दुकेन क्रीडित्वाधिकसंजातरागौ परकीयाविव ते हस्तौ संवृतौ।
चेटी- क्रीडतु क्रीडतु तावद् भर्तृदारिका ! निवर्तर्त्यतां तावदयं कन्याभावरमणीयः कालः।
पद्मावती - आर्ये ! किमिदानीं मामुपहसितुमिव निध्यायसि।
अनुवाद - (प्रवेशक समाप्त हुआ)
(तत्पश्चात् गेंद खेलती हुई पद्मावती परिजनों तथा वासवदत्ता के साथ प्रवेश करती है।)
वासवदत्ता - सखि! यह तुम्हारी गेंद है।
पद्मावती- आर्ये ! बस अब इतना ही (बहुत है)
वासवदत्ता - सखि! बहुत देर तक गेंद खेलने के कारण तुम्हारे हाथ अधिक लाल होने के कारण पराये के समान हो रहे हैं अर्थात् ऐसा प्रतीत होता है कि यह तुम्हारे हाथ नहीं हैं, बल्कि किसी अन्य व्यक्ति के हैं।
चेटी – खेलो, खेलो राजकुमारी ! कौमार्य अवस्था के काल को इसी प्रकार (आनन्द से) व्यतीत करें।
पद्मावती - आर्ये अब क्या तुम मेरा उपहास उड़ाने के लिए मुझे देख रही हो?
विशेष - "किं भणसि?"यह आकाशभाषित नामक नाट्योक्ति है। स्वगत, प्रकाश, अपवारित, त्रिपताक, पताका, जनान्तिक और आकाशभाषित ये सब नाट्योक्तियाँ कहलाती हैं।
वासवदत्ता- नहि नहि! हला! अधिकमद्य शोभते। अभित इव ते अद्य वरमुखं पश्यामि।
पद्मावती - अपेहि। मेदानीं मामुपहस।
वासवदत्ता - एषास्मि तूष्णीका भविष्यन्महासेनवधू !
पद्मावती - क एष महासेनो नाम।
वासवदत्ता - अस्त्युज्जयिनीयो राजा प्रद्योतो नाम। तस्य बलपरिमाणनिर्वृत्तं नामधेयं महासेन इति।
चेटी - भर्तृदारिका तेन राज्ञा सह सम्बन्धं नेच्छति।
अनुवाद - वासवदत्ता- ऐसा नहीं है। सखि, आज तुम अधिक सुन्दर लग रही हो। मानो आज तुम्हारा वर मुख अर्थात् वर की उपस्थिति में होने वाला रोमाञ्चित सुन्दर मुख दोनों ओर से ही देखती हूँ।
पद्मावती - हटो, अब मेरा उपहास मत करो।

वासवदत्ता - महासेन की होने वाली वधू ! अब मैं चुप हो गयी हूँ।

पद्मावती - यह महासेन कौन है?

वासवदत्ता- उज्जयिनी का प्रद्योत नाम का राजा है। उसकी सेना के विशाल परिमाण के कारण उसे महासेन कहा जाता है।

चेटी - राजकुमारी उस राजा के साथ सम्बन्ध नहीं चाहती है।

(विशेष) - केवल नीच पात्रों के द्वारा दो अंकों के बीच में जो भविष्यकालीन और हो चुके अर्थों की सूचना दी जाती है वही प्रवेशक होता है।

वासवदत्ता - अथ केन खल्विदानीमभिलषति ?

चेटी - अस्ति वत्सराज उदयनो नाम। तस्य गुणान् भर्तृदारिकाभिलषति।

वासवदत्ता - आर्यपुत्रं भर्तारमभिलषति (प्रकाशं) केन कारणेन।

अनुवाद - वासवदत्ता- तो फिर अब किसके साथ सम्बन्ध चाहती है।

चेटी - वत्सदेश का राजा उदयन है। उसके गुणों को राजकुमारी चाहती है।

वासवदत्ता - (स्वगत) आर्यपुत्र को पतिरूप में चाहती है। (प्रकटरूप में) किस कारण से?

(विशेष) - स्वाभाविक सरल, सरस संवाद के द्वारा कवि ने पद्मावती की पसंद की सूचना यहाँ दी है। साथ ही वासवदत्ता की मनःस्थिति का भी चित्रण किया है । इसके साथ ही राजा उदयन की गुणवत्ता और लोकप्रियता की भी सूचना है।

चेटी - सानुक्रोश इति।?

वासवदत्ता – जानामि जानामि। अयमपि जन एवमुन्मादितः।

चेटी – भर्तृदारिके ! यदि स राजा विरूपो भवेत ।

वासवदत्ता - नहि नहि । दर्शनीय एव।

पद्मावती - आर्ये ! कथं त्वं जानासि?

वासवदत्ता – (आत्मगतम्) आर्यपुत्रपक्षपातेनातिक्रान्तः समुदाचारः । किमिदानीं करिष्यामि? (प्रकाशम्) भवतु, दृष्टम् । हला ! एवमुज्जयिनीयो जनो मन्त्रयते।

अनुवाद – चेटी - वह अत्यधिक दयालु है (इसलिए)।

वासवदत्ता - (मन में) जानती हूँ, (भलीभाँति) जानती हूँ। यह भी व्यक्ति इसी प्रकार उन्मत्त किया गया था अर्थात् मैं भी ऐसे ही इसकी विनम्रता पर रीझ गई थी ।

चेटी – राजकुमारी ! यदि वह राजा कुरूप हो, तो !

वासवदत्ता – नहीं ! नहीं ! वे देखने योग्य अर्थात् सुन्दर हैं।

पद्मावती - आर्ये ! तुम कैसे जानती हो?

वासवदत्ता - (स्वगत) आर्यपुत्र के प्रति पक्षपात (प्रेम) के कारण (मेरे द्वारा) औचित्य का उल्लंघन कर दिया गया । अब क्या करूँ ? अच्छा, (देख) समझ लिया। (प्रकट रूप में) सखि ! ऐसा उज्जयिनी के लोग कहते हैं।

विशेष - ''मननात् त्रायते लोकांस्तत् मन्त्रम्" जिसके मनन करने मात्र से लोक का त्राण होता है, वह मन्त्र है। वासवदत्ता ने बड़ी चतुरायी से ''ऐसा लोग कहते है'' (जनो मन्त्रयते) कहकर स्वयं की रक्षा कर ली। इससे उसकी प्रत्युत्पन्नमत का पता चलता है ।

पद्मावती - न खल्वेष उज्जयिनीदुर्लभः सर्वजनमनोभिरामं खलु सौभाग्यं नाम।

(ततः प्रविशति धात्री)

धात्री - जयतु, भर्तृदारिका। भर्तृदारिके! दत्तासि।
वासवदत्ता - आर्ये! कस्मै।
धात्री - वत्सराजायोदयनाय।
वासवदत्ता - अथ कुशली स राजा?
धात्री - कुशली स इहागतः तस्य भर्तृदारिका प्रतीष्टा च।
वासवदत्ता - अत्याहितम्।
धात्री - किमत्रात्याहितम्।
अनुवाद - पद्मावती ठीक ही है। निश्चय ही उज्जयिनी के निवासियों के लिये (उदयन को देखना) कठिन नहीं है। सुन्दरता वही है, जो सभी के मन का अच्छा लग जाये।
(तत्पश्चात् धाय प्रवेश करती है)
धाय - राजकुमारी की जय हो। राजकुमारी ! तुम दे दी गयी हो।
वासवदत्ता – आर्ये ! किसे?
धाय - वत्सराज उदयन को।
वासवदत्ता - वह राजा सकुशल तो है?
धाय - वे यहाँ सकुशल आये हैं और उन्हें राजकुमारी स्वीकार है।
वासवदत्ता - अनुचित हुआ।
धाय - क्या अनुचित हुआ।
वासवदत्ता - न खलु किञ्चित्। तथा नाम संतप्योदासीनो भवतीति।
धात्री – आर्ये ! आगमप्रधानानि सुलभपर्यवस्थानानि महापुरूषहृदयानि भवन्ति।
वासवदत्ता – आर्ये ! सत्यमेव तेन वरिता।
धात्री - नहि नहि अन्यप्रयोजनेनेहागतस्याभिजनविज्ञानवयोरूपं दृष्ट्वा स्वयमेव महाराजेन दत्ता।
वासवदत्ता - एवम्। अनपराद्ध इदानीमत्रार्यपुत्रः।
अनुवाद - नहीं कुछ नहीं। (पत्नी के वियोग में) उस प्रकार से व्याकुल होकर फिर उदासीन हो जाता है।
धाय – आर्ये ! शास्त्रज्ञान प्रधान महापुरूषों के हृदय सरलता से ही स्वाभाविक अवस्था में आने वाले होते हैं।
वासवदत्ता – आर्य ! क्या स्वयं ही उन्होंने पद्मावती का वरण किया है।
धाय - नहीं, नहीं। दूसरे किसी कार्य से आये हुए (उस राजा के) उनके कुल, ज्ञान, आयु तथा रूप को देखकर महाराज (दर्शक) ने स्वयं उन्हें दे दी।
वासवदत्ता - (मन में) यदि ऐसा है, तो आर्यपुत्र दोषी नहीं है।
विशेष - प्रस्तुत संवाद स्वाभाविक संवाद हैं तथा मन को आकर्षित करने वाले हैं। सहज भाव तथा सुन्दरता से वासवदत्ता की मनःस्थिति का चित्रण भी करते हैं। सूक्तियों व मुहावरों के द्वारा भाषा के सौन्दर्य को उन्नत किया गया है।
(प्रविश्यापरा)
चेटी- त्वरतां त्वरतां तावदार्या। अद्येव किल शोभन- नक्षत्रम्। अद्येव कौतुकमंगलं कर्तव्यमित्यस्माकं भट्टिनी भणति।
वासवदत्ता - यथा यथा त्वरते, तथा तथान्धीकरोति मे हृदयम्।

धात्री - एत्वेतु भर्तृदारिका।
(निष्क्रान्ताः सर्वे)
इति द्वितीयोऽङ्कः ।
(प्रवेश करके दूसरी (चेटी))
अनुवाद – चेटी - आर्या जल्दी करो, जल्दी करो। आज ही शुभ नक्षत्र है। आज ही कौतुक (बन्धन-संस्कार मांगलिक कार्य) करना है (अर्थात् विवाह होना है) ऐसा महारानी ने कहा है।
वासवदत्ता - (मन में) यह जैसे-जैसे जल्दी करता है, वैसे-वैसे ही मेरे हृदय को अन्धा बना रही है।
धाय – आओ राजकुमारी, आओ ।
(सभी निकल जाते हैं)
विशेष - प्रस्तुत अवतरणों में कवि ने जहाँ पद्मावती के विवाह की पूर्वरेखा दी गयी है, वहीं वासवदत्ता की मनःस्थिति का भी स्वाभाविक वर्णन है । अतः संवाद सजीव तथा मनोरञ्जक हैं । वासवदत्ता इस बात से सन्तुष्ट है कि उदयन ने स्वयं वरण नहीं किया।

18.4 स्वप्नवासवदत्तम् के तृतीय अङ्क के श्लोकों की अन्वय सहित व्याख्या

स्थान - दर्शक के राजमहल का स्थान।
अङ्क के प्रारम्भ में ही पद्मावती उदयन के साथ विवाह होना निश्चित हो गया है । इस समाचार से वासवदत्ता को दुःख पहुँचता है और वह कहती है कि पहले तो आर्य से वियोग हुआ और अब पराये भी हो गये। दर्शक के महल में पद्मावती के विवाह उत्सव की रौनक है। इससे दूर रहने के लिये वह एकान्त प्रमद वन में बैठी है। इसी समय दासी, महारानी के आदेशानुसार उससे आकर कहती है कि - अवन्तिका उच्चकुलोत्पन्न तथा निपुण है, अतः महारानी की अभिलाषा है कि विवाह की वरमाला को वे ही अपने हाथ से गूँथे । यह सुनते ही उसकी मनःस्थिति बिगड़ जाती है । वह अपने भविष्य के विषय में सोचने लगती है। तभी दासी, माला को शीघ्र गूंथने के लिए कहती है । इसे सुनकर वह अत्यन्त चिन्तित हो जाती है कि पति से विरह तो ही गया था और दूसरी ओर अन्य स्त्री से विवाह, नारी के लिए असह्यनीय है, परन्तु उसको पति के कल्याण के लिए यह सहना पड़ता है । वह भाग्य को दोष देती हुयी माला को गूंथने लगती है। वासवदत्ता की यही मानसिक संवेदना इस अङ्क का मुख्य आधार है। वह सहनशील होते हुए भी नारी है, नारी स्वभाव को त्याग कैसे कर सकती है ? वह सब कुछ करते हुए भी सपत्नी मर्दन नामक औषधि को माला में गूँथने से मना कर देती है, माला गूँथने के साथ ही अङ्क समाप्ति हो जाती है।

(ततः प्रविशति विचिन्तयन्ती वासवदत्ता)

वासवदत्ता - विवाहामोदसंङ्कुले अन्तःपुरचतुःशाले परित्यज्य पद्मावतीमिहागतास्मि प्रमदवनम् । यावदिदानीं भागधेयनिर्वृतं दुःखं विनोदयामि । (परिक्रम्य) अहो अत्याहितम् । आर्यपुत्रोऽपि नाम परकीयः संवृत्तः। यावदुपविशामि । (उपविश्य) धन्या खलु चक्रवाकवधुः यान्योन्यविरहिता न जीवति। न खल्वहं प्राणान् परिज्यजामि। आर्यपुत्रं पश्यामीत्येतेन मनोरथेन जीवामि मन्दभागा ।
(तत्पश्चात् सोचती हुई वासवदत्ता प्रवेश करती है।)
अनुवाद –
वासवदत्ता - विवाह की आनन्द से घिरे उस अन्तःपुर की चौशाला में पद्मावती को छोड़कर मैं यहाँ प्रमदवन में (अन्तःपुर उद्यान में) आ गयी हूँ । तब तक भाग्य से प्राप्त दुःख को कम करूंगी। (घूमकर)

अरे! बहुत बुरा हुआ। आर्यपुत्र भी अब पराये हो गये । अच्छा, बैठती हूँ। (बैठकर) वह चकवे की पत्नी धन्य है, जो पति से अलग होकर जीवित ही नहीं रहती है। परन्तु मैं (ऐसी अभागी हूँ, जो पति से अलग होकर भी) प्राणत्याग नहीं करती अर्थात् जीवित हूँ। यहाँ आर्यपुत्र को देखूँगी, इसी कामना से अभागिन जी रही हूँ।

(ततः प्रविशति पुष्पाणि गृहीत्वा चेटी)

चेटी- क्व नु खलु गता आर्यावन्तिका (परिक्रम्यावलोक्य च) अम्मो इयं चिन्ताशून्यहृदया नीहारप्रतिहतचन्द्रलेखेवामण्डितभद्रकं वेषं धारयन्ती प्रियङ्गुशिलापट्टके उपविष्टा। यावदुपसर्पामि । (उपसृत्य) आर्ये आवन्तिके! कः कालः, त्वामन्विष्यामि।

वासवदत्ता - किंनिमित्तम्।

चेटी - अस्मांक भट्टिनी भणति महाकुलप्रसूता स्निग्धा निपुणेति। इमां तावत् कौतुकमालिकां गुम्फत्वार्या।

वासवदत्ता - अथ कस्मै किल गुम्फितव्यम्।

चेटी - अस्माकं भर्तृदारिकायै।

(उसके बाद फूल लेकर दासी प्रवेश करती है)

अनुवाद - चेटी- आर्या अवन्तिका भला कहाँ चली गई? (घूमकर तथा देखकर) अरे! चिन्ता से शून्य हृदय वाली, कुहरे से घिरी हुयी चन्द्रलेखा के समान आभूषणरहित सुन्दर वेश धारण किये हुए प्रियंगुलता के नीचे शिलातल पर बैठी हुई है तो उनके समीप जाती हूँ (समीप जाकर) आर्या अवन्तिका ! कितनी देर से तुम्हें ढूंढ रही हूँ।

वासवदत्ता - किस कारण से।

चेटी - हमारी स्वामिनी कहती हैं कि (आप) उच्चकुल में उत्पन्न हैं, प्रिय हैं तथा कुशल हैं, अतः इस विवाहमाला को गूंथ दें ।

वासवदत्ता – अच्छा, किसके लिए गूंथनी है?

चेटी - हमारी राजकुमारी के लिए।

वासवदत्ता – (आत्मगतम्) एतदपि मया कर्त्तव्यमासीत् अहो अकरूणाः खल्वीश्वराः।

चेटी- आर्ये ! मेदानीमन्यच्चिन्तयित्वा । एष जामाता मणिभूम्यां स्नायति। शीघ्रं तावद् गुम्फत्वार्या ।

वासवदत्ता- (आत्मगतम्) न शक्नोम्यन्यच्चिन्तयितुम् (प्रकाशम्) हला किं दृष्टो जामाता।

अनुवाद - वासवदत्ता (मन में) हाय, यह भी मुझे ही करना था अहो ! निश्चय ही देवता कठोर (निर्दय) है।

चेटी – आर्ये ! अब और कुछ मत सोचो। ये जामाता (दामाद) मणिमय भूमि(मणि आदि से निर्मित स्नानवेदी पर) स्नान कर रहे हैं । अतः आर्या जल्दी गूंथिये ।

वासवदत्ता- (मन में) और कुछ सोच भी तो नहीं सकती हूँ। (प्रकट में) सखि, क्या तुमने जामाता को देखा है?

विशेष - वासवदत्ता की मनःस्थिति ठीक नहीं है क्योंकि उसके जीवित रहते हुए उसके ही सामने उसका पति राजा उदयन किसी और से विवाह कर रहा है । इसके साथ ही सुहागमाला गूंथने का कार्य भी उसे ही दिया गया है। यह स्थिति वासवदत्ता के लिये असहनीय है क्योंकि स्वाभाविक ही है कि पत्नी स्वयं के अतिरिक्त किसी अन्य स्त्री की उपस्थिति पति के हृदय में सहन नहीं कर सकती । परन्तु इस समय वह न तो कुछ कह सकती है और न ही कुछ कर सकती है । यही भाग्य की लीला है ।

चेटी - आम् दृष्टो भर्तृदारिकायाः स्नेहेनास्माकं कौतूहलेन च।

वासवदत्ता - कीदृशो जामाता।

चेटी - आर्ये भणामि तावद्, नेदृशो दृष्टपूर्वः।

वासवदत्ता – हला ! भण भण, किं दर्शनीयः।

चेटी - शक्यं भणितुं शरचापहीनः कामदेव इति।

अनुवाद – चेटी - हाँ राजकुमारी के स्नेह से तथा अपने कौतूहल के कारण देखा है।

वासवदत्ता - कैसा है?

चेटी - आर्ये ! बस इतना ही कहती हूँ, पहले ऐसा कभी नहीं देखा।

वासवदत्ता - कहो ! कहो ! क्या वे देखने योग्य (सुन्दर) है?

चेटी - बस, धनुषबाण-रहित कामदेव ही हैं, ऐसा कहा जा सकता है।

विशेष - कवि ने यहाँ वासवदत्ता की दुःखी मानसिक अवस्था का सजीव चित्रण किया है परन्तु इस परिस्थिति के लिये वासवदत्ता अपने भाग्य को दोषी मानती है न कि राजा उदयन को । इसलिये वासवदत्ता कहती है "अहो अकरूणाः खल्वीश्वराः" अर्थात् 'ईश्वर निश्चय ही निर्दयी है । वासवदत्ता भी पति को परमेश्वर का रूप मानकर उसको दोष नहीं देती है ।

वासवदत्ता - भवत्वेतावद्।

चेटी - किंनिमित्तं वारयसि।

वासवदत्ता - अयुक्तं परपुरूषसंकीर्तनं श्रोतुम्।

चेटी - तेन ही गुम्फत्वार्या शीघ्रम् ।

वासवदत्ता - इयं गुम्फामि । आनय तावत्।

चेटी - ग्रह्णात्वार्या ।

वासवदत्ता - (वर्जयित्वा विलोक्य) इदं तावदौषधं किं नाम।

चेटी - अविधावकरणं नाम।

वासवदत्ता – (आत्मगतम्) इदं बहुशो गुम्फितव्यं मम च पद्मावत्याश्च । (प्रकाशम्) इदं तावदौषधं किं नाम।

चेटी - सपत्नीमर्दनं नाम।

अनुवाद – वासवदत्ता - अच्छा बस करो।

चेटी - (आप मुझे) क्यों रोक रही हैं?

वासवदत्ता - पर पुरूष की प्रशंसा सुनना अनुचित है।

चेटी - तो फिर आर्या शीघ्र गूंथे।

वासवदत्ता - यह गूंथती हूँ । लाओ तो।

चेटी - लो आर्या ।

वासवदत्ता - (फूलों को हटाकर देखती है) यह कौनसी ओषधि है?

चेटी - वैधव्य निवारण करने वाली ।

वासवदत्ता - (स्वगत) मेरे लिए तथा पद्मावती के लिए यह बहुत सी गूंथनी चाहिए । (प्रकट में) (दूसरी ओर इशारा करके) और यह औषधि क्या है?

चेटी – सपत्नी (सौत) का तिरस्कार करने वाली (मर्दन करने वाली)।

वासवदत्ता- इदं न गुम्फितव्यम्

चेटी - कस्मात्

वासवदत्ता - उपरता तस्य भार्या, तन्निष्प्रयोजनमिति।

प्रविश्यापरा

चेटी- त्वरतां त्वरतामार्या। एष जामाता, अविधवाभिरभ्यन्तरचतुःशालं प्रवेश्यते।

अनुवाद – वासवदत्ता - इसे नहीं गूंथना चाहिए।

चेटी - किस कारण से?

वासवदत्ता - उस (राजा) की पत्नी की मर चुकी हैं, अतः यह (गूंथना) व्यर्थ है।

(दूसरी प्रवेश करके)

चेटी - आर्या जल्दी करो ! जल्दी करो ! ये दामाद जी सुहागिन स्त्रियों द्वारा चौशाले में प्रवेश के लिये ले जाये जा रहे हैं।

विशेष - सुहागिनों के साथ वर के प्रवेश की सूचना से यह प्रतीत होता है कि प्राचीन काल से ही विवाहादि मंगल कार्यों से विधवाओं को दूर रखा जाता था।

वासवदत्ता – अयि ! वदामि गृहाणैतत्।

चेटी – शोभनम्। आर्ये ! गच्छामि तावदहम्।

(उभे निष्क्रान्ते)

वासवदत्ता - गतैषा। अहो अत्याहितम्। आर्यपुत्रोऽपि नाम परकीयः संवृत्तः। अहमपि शय्यायां मम दुःखं विनोदयामि, यदि निद्रां लभे।

(निष्क्रान्ता)

इति तृतीयः अङ्कः

(अनुवाद) - अरे कहती हूँ, इसे लो।

चेटी - अति सुन्दर, तो आर्ये ! मैं जाती हूँ।

(दोनों निकल जाती हैं)

वासवदत्ता - यह चली गयी। ओह ! यह बहुत बुरा हुआ। आर्यपुत्र भी पराये हो गये। मैं भी शय्या पर यदि नींद आ जाये तो अपने दुःख को हल्का करूँ।

(निकल गई)

तृतीय अङ्क समाप्त हुआ

विशेष - इस तृतीय अङ्क के संवाद सहज व सरल हैं। परिस्थिति एवं मानसिक अवस्था के अनुसार ही महाकवि भास ने सुन्दर सूक्तियों तथा मुहावरों का प्रयोग किया है।

18.5 पारिभाषिक शब्दावली

1. **सूत्रधार –** सूत्रधार के द्वारा नाटक की प्रस्तावना प्रस्तुत की जाती है। यह अन्य पात्रों को अभिनय सम्बन्धी निर्देश देते हुए उनके मध्य सामञ्जस्य बनाये रखता है।
2. **विदूषक –** विदूषक मुख्य नायक का सहायक होता है। यह दर्शकों का मनोविनोद करने में कुशल होता है।
3. **विषकम्भक -** नाटक में अतीत और भविष्य की घटनाओं की सूचना विषकम्भक के द्वारा प्रदान की जाती है।
4. **अङ्कास्य -** अङ्क के अन्त में पात्रों के द्वारा किसी ऐसे तथ्य की सूचना दी जाये जिससे कि अगले अङ्क का आरम्भ होता है।

5. **नान्दी -** नाटक की निर्विघ्न समाप्ति के लिये सर्वप्रथम देव स्तुति की जाती है उसको नान्दी कहा जाता है । इसे मङ्गलाचरण भी कह सकते हैं । यह तीन प्रकार का होता है आशीर्वादात्मक, नमस्कारात्मक एवं वस्तुनिर्देशात्मक ।
6. **प्रवेशक –** प्रवेशक के द्वारा दो अङ्कों के बीच में भूत एवं भविष्य की घटनाओं की सूचना दी जाती है परन्तु प्रवेशक पात्र अधम श्रेणी का होता है। अतएव प्रवेशक का प्रयोग अङ्क के आरम्भ में नहीं किया जाता है।

18.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

लघूत्तरात्मक प्रश्न -

1. महाकवि भास के द्वारा कितने नाटकों की रचना की गई है? नामोल्लेख कीजिये।
2. यौगन्धरायण राजकुमारी से क्या चाहना करता है ?
3. मन्त्री रुमण्वान् राजा उदयन की सेवा किस प्रकार की ?

निबन्धात्मक प्रश्न

1. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के रचयिता भास का काल निर्धारण कीजिये?
2. महाकवि भास की नाट्य-कला का वर्णन कीजिये।
3. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक की समीक्षा कीजिये?
4. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक का नामकरण "स्वप्नवासवदत्तम्" क्यों किया गया है? युक्तिसहित समझाइये।
5. 'स्वप्नवासवदत्तम्' का नायक उदयन की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये?
6. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के आधार पर वासवदत्ता की चारित्रिक विशेषताओं को सोदाहरण समझाइये?
7. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के आधार पर पद्मावती का चरित्र चित्रण कीजिये?
8. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के आधार पर यौगन्धरायण की चारित्रिक विशेषताओं को सोदाहरण समझाइये?
9. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के आधार पर विदूषक वसन्तक का चरित्र चित्रण कीजिये?
10. 'स्वप्नवासवदत्तम्' की कहानी को संक्षेप में प्रस्तुत कीजिये ?

18.7 सारांश

प्रथम अङ्क में राजा उदयन वासवदत्ता के साथ कामक्रीड़ा में अत्यन्त मग्न रहता है जिसके कारण शत्रु आरूणि राज्य पर आक्रमण करने में सफल हो जाता है। मन्त्री यौगन्धरायण खोये हुए राज्य की पुनर्प्राप्ति के लिये वासवदत्ता के सहयोग से मगध राजा दर्शक की सहायता लेते हैं। इस हेतु वह यह प्रवाद फैला देता है कि वासवदत्ता की अग्नि में जलकर मृत्यु हो गयी है और राजा दर्शक की पुत्री पद्मावती से राजा उदयन के विवाह की प्रस्तावना तैयार करते हुए वासवदत्ता को राजा दर्शक के यहाँ धरोहर के रूप में छोड़ आने का वर्णन है।

द्वितीय अङ्क में वासवदत्ता एवं पद्मावती का सख्य भाव दिखलाया गया है। इसी अङ्क में दासी यह रहस्य वासवदत्ता के समक्ष उद्घाटित करती है कि पद्मावती उदयन पर आसक्त है। तभी राजा उदयन के मगध में आगमन तथा उदयन एवं पद्मावती के विवाह के सम्पन्न होने का वर्णन है। तृतीय अङ्क में उदयन एवं पद्मावती के विवाह से दुःखी होकर वासवदत्ता के प्रमदवन में जाने का वर्णन है।

18.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. स्वप्नवासवदत्तम् व्याख्यार- डॉ. जगन्नारायण पाण्डेय, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर ,2000.
2. Svapnavasavadatta of Bhasa – M.R. Kale, MLBD publication, Delhi, 1998.
3. Svapnavasavadattam or Dream Reality of Vasavadatta, Kireet Joshi, Auroville Press, Tamilnadu 2014.
4. Thirteen Plays of Bhasa; translated into English, A. C. Woolner & Lakshman Sarup, MLBD, Delhi ,2015.
5. स्वप्नवासवदत्तम् , डॉ. रामदेव साहू, श्याम प्रकाशन, जयपुर ,1986.
6. स्वप्नवासवदत्तम् , व्याख्या0श्रीकृष्ण ओझा- अभिषेक प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर ,2005.
7. स्वप्नवासवदत्तम्, व्याख्या0 प्रो. सुभाष वेदालंकार, अलंकार प्रकाशन, जयपुर, 2009.
8. भासकृत स्वप्नवासवदत्तम् , व्याख्या0 डॉ. रूपनारायण त्रिपाठी, हंसा प्रकाशन, जयपुर 1996.

इकाई – 19

स्वप्नवासवदत्तम् (भास)

(चतुर्थ अङ्क, पञ्चम अङ्क एवं षष्ठ अङ्क)

इकाई की रूपरेखा

19.0 उद्देश्य

हम एम० ए० उत्तरार्द्ध संस्कृत के प्रश्नपत्र नाटक तथा नाट्यशास्त्र (MASA-06) के अन्तर्गत महाकवि भास कृत स्वप्नवासवदत्तम् नामक नाटक का अध्ययन करने जा रहे है। हम यहाँ नाटक के कतिपय महत्वपूर्ण विषयों के साथ साथ व्याकरण सम्बन्धी तथ्यों का अवबोध कर सकेगें –

- नाटक में प्रस्तुत श्लोकों का सन्दर्भ एवं प्रसङ्ग सहित अनुवाद कर पायेंगे।
- अङ्कों में प्रस्तुत श्लोकों के माध्यम से नाट्यशास्त्र के अङ्गों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- श्लोकों के पदों में आने वाले व्याकरणिक तथ्य यथा प्रकृति-प्रत्यय, सन्धि, समास इत्यादि का अवबोध कर सकेंगे।
- श्लोकों के अन्तर्गत प्राप्त छन्द, अलङ्कारों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

19.1 प्रस्तावना

दृश्य काव्यों में नाटकों का सर्वोत्तम स्थान है और भासकृत 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक दृश्य काव्य का श्रेष्ठ उदाहरण है। प्रस्तुत नाटक में ६ अङ्क हैं और यह भास द्वारा रचित नाटक 'प्रतिज्ञा-यौगन्धरायण' का ही उत्तरार्द्ध है। इस नाटक का नाम 'स्वप्नवासवदत्तम्', राजा उदयन के द्वारा स्वप्न में वासवदत्ता के दर्शन होने के आधार पर रखा गया है। प्रस्तावित नाटक में मन्त्री यौगन्धरायण द्वारा झूठी सूचना फैला दी जाती है कि वासवदत्ता अग्नि में जल गयी है। इसके पश्चात् अपनी योजना के अनुसार उदयन और पद्मावती का विवाह करवा देता है ताकि राजा दर्शक उदयन की आरूणि को परास्त करने में सहायता कर सके और उदयन को पुनः अपना खोया हुआ राज्य प्राप्त हो सके।

इस नाटक का मुख्य नायक वत्सराज उदयन और नायिका वासवदत्ता है। अङ्गी रस शृंगार है। नाटक में कुल ५७ पद्य हैं। इनमें अनुष्टुप्, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, वसन्ततिलका इत्यादि छन्दों का प्रयोग हुआ है।

19.2 स्वप्नवासवदत्तम् के चतुर्थ अङ्क के श्लोकों की अन्वय सहित व्याख्या

कामेनोज्जयिनीं गते मयि तदा कामप्यवस्थां गते
दृष्ट्वा स्वैरमवन्तिराजतनयां पञ्चेषवः पातिताः।
तैरद्यापि सशल्यमेव हृदयं भूयश्च विद्वा वयं
पञ्चेषुर्मदनो यदा कथमयं षष्ठः शरः पातितः।।१।।

अन्वयः- तदा उज्जयिनीं गते अवन्तिराजतनयां स्वैरं दृष्टवा काम् अपि अवस्थां गते मयि कामेन पंच इषवः पातिताः अद्य अपि हृदयं तैः सशल्यं एव (वर्तते), भूयः च वयम् विद्वाः यदा मदन् पंचेषुः (तर्हि) षष्ठः अयं शरः पातितः।

सन्दर्भ - प्रस्तुत श्लोक महाकवि भास कृत `स्वप्नवासवदत्तम्' के चतुर्थ अङ्क से लिया गया है।

प्रसङ्ग– यहाँ इस श्लोक में राजा उदयन अपने मित्र वसन्तक से प्रमद वन की रमणीयता का वर्णन कर रहे हैं और साथ ही वासवदत्ता को स्मरण करते हुए कहते हैं कि-

अनुवाद - उस समय मेरे उज्जयिनी जाने पर अवन्तिराजपुत्री वासवदत्ता को मन भर कर देखने से अनिर्वचनीय (अवर्णनीय) अवस्था को प्राप्त हुए मुझ पर कामदेव ने पाँचों बाण गिरा दिये । उन (बाणों) के द्वारा आज भी मेरा हृदय घाव युक्त ही है और हम पुनः बींध दिये गये हैं। जब कामदेव के पास पाँच ही बाण हैं तो यह छठा बाण कैसे गिराया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

गते – गम्+क्त (सप्तमी एकवचन)
सशल्यम् - शल्यैः सहितम्
विद्धा – विध्+क्त
दृष्टवा – दृश्+क्त्वा
पञ्चेषु – पञ्च इषवः यस्य सः (बहुब्रीहि)
पातितः – पत्+णिच्+क्त
कामेनोज्जयिनीम् – कामेन+उज्जयिनीम् (गुणसन्धि)
कामप्यवस्थाम् – काम्+अपि+अवस्थाम् (यण सन्धि)
तैरद्यापि – तैः+अद्यापि (विसर्ग सन्धि)

अलङ्कार - अनुप्रास अलङ्कार । इसका लक्षण है - "अनुप्रासः शब्द साम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत् ।"

छन्द - शार्दूलविक्रीडितम् छन्द। इसका लक्षण है– "सूर्याश्वैर्मसजस्ततः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम् ।"

प्रस्तुत श्लोक में वासवदत्ता के प्रति उदयन का उत्कट प्रेम प्रदर्शित किया गया है उदयन कामदेव के बाणों से घायल है । कवि परम्परा में प्रेम का देवता कामदेव को स्वीकार किया गया है। कामदेव के पाँच बाण इस प्रकार हैं –

"अरविन्दमशोकं च चूतं च नवमल्लिका।
नीलोत्पलञ्च पञ्चैते पञ्चबाणस्य सायकाः।।"

ऋज्वायतां च विरलां च नतोन्नतां च,
सप्तर्षिवंशकुटिलां च निवर्तनेषु।
निर्मुच्यमानभुजगोदरनिर्मलस्य,

सीमामिवाम्बरतलस्य विभज्यमानाम्।।२।।

अन्वयः- ऋज्वायतां च विरलां च नतोन्नतां च विवर्त्तनेषु सप्तर्षिवंशकुटिलां निर्मुच्यमानभुजगोदरनिर्मलस्य अम्बरतलस्य विभज्यमानां सीमाम् इव (एनां सारसपंक्तिं पश्यामि)

सन्दर्भ - प्रस्तुत श्लोक महाकवि भास कृत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के चतुर्थ अङ्क से अवतरित है।

अनुवाद - सीधी और फैली हुई, पतली, झुकी हुई तथा उठी हुई और मुड़ने में सप्तऋषि तारों जैसी टेढ़ी, साँप की छोड़ी हुई कैंचुली के समान वर्णवाली, आकाश तल की विभाजक रेखा के समान [मैं इस सारस पंक्ति को देखता हूँ।]

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

निवर्तनेषु – नि+वृत्+ल्युट् (सप्तमी विभक्ति, बहुवचन)

निर्मुच्यमानः – निर्+मुञ्च्+शानच्

विभज्यमानाम् – वि+भज्+शानच्+टाप् (द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

अलङ्कार – उपमा, स्वभावोक्ति एवं उत्प्रेक्षा अलङ्कार

छन्द - वसन्ततिलका छन्द

विशेष – प्राचीनकाल में भी ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान विद्यमान था। साधारणतया सभी लोग आकाश में स्थित सप्तर्षिमण्डल से परिचित थे। सप्तऋषि निम्न हैं –

"मरीचिरङ्गिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः।
वशिष्ठश्चेति सप्तैते ज्ञेयश्चित्रशिखण्डिनः।।"

मधुमदकला मधुकरा मदनार्ताभिः प्रियाभिरूपगूढ़ा।
पादन्यासविषण्णा वयमिव कान्तावियुक्ताः स्युः।।३।।

अन्वयः- मधुमदकलाः मदनार्त्ताभिः प्रियाभिः उपगूढ़ाः मधुकराः पादन्यासविषण्णाः वयम् इव कान्तावियुक्ताः स्मः।

सन्दर्भ – यह उपर्युक्त श्लोक महाकवि भास कृत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के चतुर्थ अङ्क से उद्धृत किया गया है।

अनुवाद – मधु (पराग) के मद (नशे) से अस्पष्ट मधुर गुञ्जार वाले कामपीड़ित प्रियाओं के द्वारा आलिङ्गित भौंरे, (हमारे) पैर रखने से अर्थात् लता मण्डप में जाने से हमारे समान ही अपनी पत्नियों से वियुक्त हो जायेंगे अर्थात् प्रिया रहित हो जायेंगे।

व्याकरणाक टिप्पणी-

मधुमदकला	-	मधुनः मदः मधुमदः तेन मधुमदेन कलाः (तत्पुरुष)
उपगूढाः	–	उप+गुह्+क्त (प्र.वि., बहुवचन)
विषण्णाः	–	वि+सद्+क्त (प्र.वि. बहुवचन)
कान्ता	–	कम्+क्त+टाप्

अलङ्कार - अनुप्रास तथा स्वाभावोक्ति अलङ्कार

छन्द - अनुष्टुप् छन्द

विशेष - इस पद्य में विप्रलम्भ शृङ्गार तथा माधुर्य गुण है।

पादाक्रान्तानि पुष्पाणि सोष्म चेदं शिलातलम्।
नूनं काचिदिहासीना मां दृष्ट्वा सहसा गता।।४।।

अन्वयः- पुष्पाणि पादाक्रान्तानि इदं शिलातलं च सोष्मं। नूनं काचित् इह आसीना मां दृष्ट्वा सहसा गता।

सन्दर्भ – यह पद्य महाकवि भास द्वारा रचित 'स्वप्नवासवदत्तम्' के चतुर्थ अङ्क से समुद्धृत किया गया है।

प्रसङ्ग– राजा के वन में प्रवेश करने पर यह अनुभव होता है कि उनके आने से पहले कोई वहाँ था।

अनुवाद - पुष्प पैरों से कुचले हुये हैं तथा यह शिलातल भी गरम है अतः निश्चय ही यहाँ बैठी हुयी कोई मुझे देखकर तुरन्त चली गयी है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

पादाक्रान्तानि	-	पादाभ्याम् आक्रान्तानि (पञ्चमी तत्पुरुष)
दृष्टवा	–	दृश्+क्त्वा
गता	–	गम्+क्त+टाप्
काचिदिहासीना	–	काचित्+इह+आसीना (व्यञ्जन सन्धि एवं दीर्घ सन्धि)
अलङ्कार	–	अनुप्रास तथा विभावना अलङ्कार
छन्द	–	अनुष्टुप् छन्द

पद्मावती बहुमता मम यद्यपि रूपशीलमाधुर्यैः
वासवदत्ताबद्धं न तु तावन्मे मनो हरति॥५॥

अन्वयः- यद्यपि रूप शीलमाधुर्यैः पद्मावती मम बहुमता तथापि (सा) वासवदत्ताबद्धं मे मनः न तु तावत् हरति।

सन्दर्भ - प्रस्तुत श्लोक महाकवि भासप्रणीत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के चतुर्थ अङ्क से अवतरित है।

प्रसङ्ग- इस श्लोक में राजा उदयन पद्मावती के रूप, शील तथा वाणी के माधुर्य से पद्मावती के प्रति आकर्षित है परन्तु उसका मन वासवदत्ता के प्रति ही आसक्त है। इस प्रसंग में महाकवि भास कहते हैं कि -

अनुवाद - यद्यपि रानी पद्मावती अपने रूप, शील (स्वभाव) तथा वाणी की मधुरता से मुझे अत्यधिक प्रिय है फिर भी वह वासवदत्ता से बंधे अर्थात् आसक्त मेरे मन को हर नहीं पाती है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

रूपशीलमाधुर्यैः - रूपं च शीलं च माधुर्यं च रूपशीलमाधुर्याणि तैः (द्वन्द्वसमास)

तावन्मे	–	तावत्+मे
वासवदत्ताबद्धम्	-	वासवदत्तायाम् बद्धम् आसक्तम् (सप्तमी तत्पुरुष)
मता	-	मन्+क्त्+टाप्
बद्धम्	-	बन्ध्+क्त
यद्यपि	-	यदि अपि (यण सन्धि)
अलङ्कार	–	अनुप्रास, विशेषोक्ति तथा काव्यलिङ्ग अलङ्कार
छन्द	-	आर्या छन्द

विशेष - रूप, शील, माधुर्यादि गुणों के कारण बहुमता है। इसलिये कारण- कार्यभाव रूप काव्यलिङ्ग अलङ्कार है। रूपशील आदि गुणों के रहते हुए भी वासवदत्ता में ही उदयन का मन आसक्त है। अतः विशेषोक्ति अलङ्कार है जिसका लक्षण है – "सति हेतौ फलाभावे विशेषोक्ति तथा द्विधा।" अर्थात् जहाँ कारण रहते हुए भी कार्य न हो वहाँ विशेषोक्ति अलङ्कार है।

अनेन परिहासेन व्याक्षिप्तं मे मनस्त्वया।
ततो वाणी तथैवेयं पूर्वाभ्यासेन निस्सृता ।।६।।

अन्वयः- त्वया अनेन परिहासेन मे मनः व्याक्षिप्तम्। ततः इयम् वाणी पूर्वाभ्यासेन, तथा एवं निस्सृता।

सन्दर्भ - प्रस्तुत श्लोक महाकवि भास द्वारा रचित 'स्वप्नवासवदत्तम्' के चतुर्थ अङ्क से ही लिया गया है।

प्रसङ्ग- इस श्लोक में जब राजा उदयन का मित्र वसन्तक याद दिलवाता है कि वासवदत्ता तो बहुत समय पहले ही मर चुकी है तब राजा उदयन दुःख से कहता है कि देवी वासवदत्ता तो मृत्यु को प्राप्त हो चुकी है -

अनुवाद - हे मित्र ! तुमने इस परिहास के द्वारा मेरा मन व्याकुल कर दिया। अतः पहले के अभ्यास से ही यह मेरी वाणी उसी प्रकार निकल गयी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

पूर्वाभ्यासेन	-	पूर्वश्चासौ अभ्यासः तेन (कर्मधारय)
व्याक्षिप्तम्	-	वि+आङ्+क्षिप्+क्त प्रत्यय
निस्सृता	–	नि+सृ+क्त+टाप्
परिहासः	–	परि+हस्+घञ्
अलङ्कार	–	अनुप्रास अलङ्कार
छन्द	-	अनुष्टुप् छन्द

विशेष - इस श्लोक में वियोग, शृंगार, माधुर्य गुण के साथ साथ कैशिकी वृत्ति है । इस पद्य में मनोभावों का स्वाभाविक प्रस्तुतीकरण रस की उत्पत्ति होने की दशा में साधारणीकरण के लिए सहकारी बन जाता है। उत्तम काव्य की यही विशेषता है।

दुःखं त्यक्तुं बद्धमूलोऽनुरागः
स्मृत्वा स्मृत्वा याति दुःखं नवत्वम्।
यात्रा त्वेषा यद् विमुच्येह वाष्पं
प्राप्तानृण्या याति बुद्धिः प्रसादम् ।।७।।

अन्वयः- बद्धमूलः अनुरागः त्यक्तुं दुःखम्, स्मृत्वा स्मृत्वा दुःखं नवत्वं याति। तु यात्रा एषा, यत् इह वाष्पं विमुच्य प्राप्तानृण्या बुद्धिः प्रसादं याति।

सन्दर्भ - प्रस्तुत श्लोक महाकवि भास कृत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के चतुर्थ अङ्क से समुधृत है।

प्रसङ्ग- इस श्लोक में वासवदत्ता के वियोग के कारण व्याकुल राजा उदयन विदूषक को अपनी मनोदशा बताते हुये कहता है कि हे मित्र !

अनुवाद – बद्धमूल प्रेम अर्थात् दृढ़ प्रेम का त्याग करने में दुःख (प्राप्त होता है) है । उसे जैसे जैसे स्मरण किया जाता है वैसे वैसे ही वह दुःख और नवीन होता जाता है, परन्तु यह लोक व्यवहार है कि व्यक्ति (प्रिय को स्मरण करके) आँसू बहाकर ऋणरहित होकर स्वच्छ अर्थात् प्रसन्न बुद्धि वाला हो जाता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

बद्धमूलः	–	बद्धं मूलं यस्य सः (बहुव्रीहि)
आनृण्यम्	-	अविद्यमानं यस्य ऋणं स अनृणः, अनृणस्य भावः आनृण्यम् - (नञ् समास)

आनृण्यम्	–	अनृण+ष्यञ् प्रत्यय
प्राप्तानृण्या	-	प्राप्तम् आनृण्यं यया सा (बहुब्रीहि)
त्यक्तुम्	–	त्यज्+तुमुन्
प्रसादम्	–	प्र+सद्+घञ्
अनुराग	–	अनु+रज्+घञ्
स्मृत्वा	–	स्मृ+क्त्वा
नवत्वम्	–	नव+त्व
बुद्धि	–	बुध्+क्तिन्
अलङ्कार	–	अनुप्रास, रूपक तथा काव्यलिङ्ग अलङ्कार
छन्द	-	शालिनी छन्द। शालिनी छन्द का लक्षण है – "मात्तौ गौ चेच्छालिनी वेदलोकैः।" इसके प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते हैं।
विशेष	–	इस पद्य में विप्रलम्भ शृंगार, माधुर्य गुण तथा कैशिकी वृत्ति है।

शरच्छशांक-गौरेण वाताविद्धेन भामिनि।
काशपुष्पलवेनेदं साश्रुपातं मुखं मम ।।८।।

अन्वयः- हे भामिनि! शरच्छशांकगौरेण, वाताविद्धेन काशपुष्पलवेन इदम् मम मुखम् साश्रुपातम्।

सन्दर्भ - प्रस्तुत श्लोक नाटककार भासप्रणीत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के चतुर्थ अङ्क से अवतरित है।

प्रसङ्ग- इस श्लोक में आर्य पुत्र उदयन पद्मावती को बैठने के लिये कहते हैं। पद्मावती राजा उदयन की आज्ञा से बैठ जाती है तब उदयन कहते हैं कि हे पद्मावती !

अनुवाद - हे सुन्दरी ! हवा द्वारा उड़ाये गये शरद ऋतु के चन्द्रमा के समान श्वेत वर्ण वाले काश पुष्प के पराग आँख में गिर जाने से मेरा मुख आँसुओं से युक्त हो गया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

शरच्छशाङ्कगौरेण	–	शरत्कालीनो यः शशाङ्कः सुधाकरः स इव गौरः शुभ्रस्तेन शरच्छशाङ्कगौरेण
वाताविद्धेन	-	वातेन विद्धम् तेन (तृतीया तत्पुरुष)
काशपुष्पवलेन	-	काशपुष्पस्य लवः तेन (तृतीया तत्पुरुष)
साश्रुपातम्	-	अश्रुपातेन सहितम् इति (अव्ययीभाव)
अलङ्कार	–	काव्यलिङ्ग अलङ्कार
छन्द	-	अनुष्टुप् छन्द

इयं बाला नवोद्वाहा सत्यं श्रुत्वा व्यथां व्रजेत।
कामं धीरस्वाभावेयं स्त्रीस्वभावस्तु कातरः।।९।।

अन्वयः- च इयं नवोद्वाहा बाला (पद्मावती), सत्यं श्रुत्वा व्यथां व्रजेत्। इयं कामं धीरस्वभावा, तु स्त्रीस्वभावः कातरः।

सन्दर्भ - प्रस्तुत श्लोक महाकवि भासकृत `स्वप्नवासवदत्तम्' के चतुर्थ अङ्क से समुधृत है।

प्रसङ्ग- इस श्लोक में राजा उदयन पद्मावती को अश्रुपात का मिथ्या कारण बताने के पश्चात् मन ही मन सोचते हैं कि -

अनुवाद - यह नवविवाहिता कन्या सत्य को सुनकर पीड़ा का अनुभव करेगी, भले ही यह धैर्यशालिनी है परन्तु स्त्री स्वभाव तो भीरु (कायर) होता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

नवोद्वाहा	-	नव उद्वाहः यस्या सा (बहुब्रीहि समास)
नवोद्वाहा	-	नव+उद्वाहा (गुण सन्धि)
धीरस्वभावा	-	धीरः स्वभावो यस्या सा (बहुब्रीहि समास)
स्त्रीस्वभावः	-	स्त्रीणां स्वभावः (षष्ठी तत्पुरुष)
श्रुत्वा	–	श्रु+क्त्वा
अलङ्कार	-	स्वभावोक्ति तथा परिकर अलङ्कार
छन्द	-	अनुष्टुप् छन्द

विशेष – स्त्रियों के स्वभाव के बारे में महाकवि भास ने इस पद्य में बताया है। स्त्रियाँ स्वभाव से ही भीरु है। इस कथन में कवि ने सूक्ति वचन प्रयोग किया है। इसी तरीके से आचार्य भवभूति भी स्त्रियों को कोमल स्वभाव वाला बताते हैं –

''पुरन्ध्रीणां चित्तं कुसुमसुकुमारं भवति।''

गुणानां वा विशालानां सत्काराणां च नित्यशः।
कर्त्तारः सुलभा लोके विज्ञातारस्तु दुर्लभाः।।१०।।

अन्वयः- गुणानां वा विशालानां सत्काराणां च नित्यशः कर्त्तारः सुलभाः लोके, विज्ञातारः तु दुर्लभाः (सन्ति)

सन्दर्भ - प्रस्तुत श्लोक महाकवि भास कृत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के चतुर्थ अङ्क से लिया गया है।

अनुवाद – निरन्तर महान् गुणों वाले अथवा सत्कार करने वाले महापुरुष तो संसार में सुगमता से प्राप्त हो जाते हैं परन्तु (उन सत्कार आदि को) जानने वाले दुर्लभ हैं अर्थात् अत्यधिक कम हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

कर्तारः	–	कृ+तृच्
विज्ञातारः	–	वि+ज्ञा+तृच्
अलङ्कार	-	स्वभावोक्ति अलङ्कार
छन्द	-	अनुष्टुप् छन्द

विशेष - यह पद्य सुभाषित पद्य है। वस्तुतः उदारता, करुणा, सहिष्णुता, परोपकार, दया, दान आदि प्रशंसनीय कार्यों को करने वाले तो बहुत हैं, परन्तु किये हुए उपकार को मानने वाले लोग बहुत ही कम हैं।

(निष्क्रान्ताः सर्वे)

(इति चतुर्थोऽङ्कः)

19.3 स्वप्नवासवदत्तम् के पञ्चम अङ्क के श्लोकों की अन्वय सहित व्याख्या

श्लाघ्यामवन्तिनृपतेः सदृशीं तनूजां,
कालक्रमेण पुनरागतदारभारः।
लावाणके हुतवहेन हृताङ्गयष्टिं
तां पद्मिनी हिमहतामिव चिन्तयामि।।१।।

अन्वयः- कालक्रमेण पुनरागतदारभारः, (अहम्) लावाणके हुतवहेन, हृताङ्गयष्टिं, श्लाघ्यां अवन्तिनृपतेः सदृशीं तनूजां ताम् हिमहताम् पद्मिनीम् इव चिन्तयामि।

सन्दर्भ - प्रस्तुत श्लोक महाकवि भास कृत `स्वप्नवासवदत्तम्' के पञ्चम अङ्क से उद्धृत है।
प्रसङ्ग- इस श्लोक में विदूषक महारानी पद्मावती की शिरपीड़ा की सूचना महाराज उदयन को देता है तत्पश्चात् राजा प्रवेश करता है।
अनुवाद - काल अथवा भाग्य के फेर से जिस पर पुनः पत्नी का भार आ गया है, ऐसा मैं उदयन, लावाणक ग्राम में आग से जली हुयी उस कृशाङ्गी अर्थात् पतले अंगों वाली, सर्वथा प्रशंसानीय, अवन्तिराज के गुणों के समान गुण वाली पाले से मारी गयी कमलिनी के समान उनकी पुत्री वासवदत्ता के बारे में सोचता हूँ।
व्याकरणात्मक टिप्पणी -

पुनरागत	–	पुनः+आगतः
दारभारः	-	दारायाः भारः (षष्ठी तत्पुरुष)
पुनरागतदारभारः	-	पुनरागतः दारायाः भारः यस्मिन् सः (बहुब्रीहि समास)
हतांगयष्टिम्	-	हता अङ्गयष्टिः यस्याः सा ताम् (बहुब्रीहि समास)
हिमहताम्	–	हिमेन हताम्
श्लाघ्याम्	–	श्लाघ्+ण्यत्+टाप् (स्त्री)
कालक्रमेण	–	कालस्य क्रमेण (षष्ठी तत्पुरुष)
हृता	–	हृ+क्त+टाप्
हताम्	-	हन्+क्त+टाप्
अलङ्कार	-	परिकर, पूर्णोपमा एवं विशेषोक्ति अलङ्कार
छन्द	–	वसन्ततिलका छन्द

विशेष - विप्रलम्भ शृंगार रस है, माधुर्य गुण, कैशिकी वृत्ति तथा वैदर्भी रीति है। पुनरागतदारभार - इस वाक्य से यह पता लगता है कि उदयन की पुनर्विवाह की इच्छा नहीं थी अपितु उनके मन्त्रियों इत्यादि के दबाव के कारण उसे पद्मावती से विवाह करना पड़ रहा है इसी कारण वह इसे भार समझता है परन्तु वासवदत्ता को अभी तक नहीं भूल पाया है।

रूपश्रिया समुदितां गुणतश्च युक्तां,
लब्ध्वा प्रियां मम तु मन्द इवाद्य शोकः।
पूर्वाभिघातसरुजोऽप्युनुभूतदुःखः,
पद्मावतीमपि तथैव समर्थयामि।।२।।

अन्वयः- अद्य रूपश्रिया समुदिताम्, गुणतश्च युक्ताम् प्रियाम् तु लब्ध्वा मम शोकः मन्द इव। अनुभूतदुःखः अपि पूर्वाभिघातसरुजः (अहं)। पद्मावतीम् अपि तथा एवं समर्थयामि।
सन्दर्भ - प्रस्तुत श्लोक नाटककार भास प्रणीत `स्वप्नवासवदत्तम्' के पञ्चम अङ्क से समुद्धृत है।
प्रसंग- राजा उदयन पद्मावती की शिर पीड़ा का समाचार विदूषक और पद्मिनिका द्वारा प्राप्त करता है तथा कहता है कि बहुत कष्ट की बात है-
अनुवाद - उत्तम सौन्दर्यशालिनी तथा गुणवती प्रिया (पद्मावती) को पाकर आज मेरा शोक कम सा हो गया था किन्तु पहले वासवदत्ता की मृत्यु रूपी आघात से पीड़ित, दुःख को भोगने वाला मैं (उदयन) पद्मावती को भी (तुषार से आहत कमलिनी के समान वासवदत्ता के समान) उसी भाँति (पीड़ित) मान रहा हूँ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

पूर्वाभिघातसरूजः	–	पूर्वः यः अभिघातः स पूर्वाभिघातः तेन पूर्वाभिघातेन रुजा
सहितः	-	सरुजः (बहुब्रीहि)
अनुभूतदुःखः	-	अनुभूतं दुःखं येन सः (बहुब्रीहि)
लब्धवा	-	लभ्+क्त्वा
समुदिताम्	–	सम्+उत्+क्त
युक्ताम्	–	युज्+क्त+टाप्
अनुभूत	–	अनु+भू+क्त
अलङ्कार	–	काव्यलिङ्ग अलङ्कार
छन्द	–	वसन्ततिलका छन्द

विशेष - वियोग शृंगार एवं विप्रलम्भ शृंगार रस, माधुर्य गुण, कैशिकी वृत्ति तथा वैदर्भी रीति है।

ऋज्वायतां हि मुखतोरणलोलमालां
भ्रष्टां क्षितौ त्वमवगच्छसि मूर्ख ! सर्पम्।
मन्दानिलेन निशि या परिवर्तमाना,
किञ्चित् करोति भुजगस्य विचेष्टितानि।।३।।

अन्वयः- हि मूर्खः! ऋज्वायतां क्षितौ भ्रष्टां मुखतोरणलोलमालां त्वं सर्पमवगच्छसि। या निशि मन्दानिलेन किंचित परिवर्तमाना भुजगस्य विचेष्टितानि करोति।

सन्दर्भ- प्रस्तुत श्लोक भास द्वारा रचित 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक के पञ्चम अङ्क से अवतरित है।

प्रसङ्ग- इस श्लोक में राजा उदयन विदूषक के सर्पज्ञान का उपहास करते हुए कहता है कि -

अनुवाद - हे मूर्ख ! सीधी और लम्बी, मुख्यद्वार पर लटकती हुई पृथ्वी पर गिरी हुई, चञ्चल माला को जो रात्रि में धीमी गति वाली वायु द्वारा हिलाई जाती हुई सांप के समान चेष्टा करती है, उसे तुम सर्प समझ रहे हो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी –

ऋज्वायताम्	-	ऋजुः चासौ आयता च ताम् (कर्मधारय समास)
मुखतोरणलोलमालाम्	-	मुखतोरणस्य लोलामाला इति ताम्
भ्रष्टाम्	–	भ्रस्ज्+क्त+टाप्
क्षितौ	-	क्षि+क्तिन् (सप्तमी विभक्ति,एकवचन)
परिवर्तनमाना	–	परि+वृत+शानच्+टाप्
अलङ्कार	-	अनुप्रास एवं स्वभावोक्ति अलङ्कार
छन्द	-	वसन्ततिलका छन्द

शय्या नावनता तथास्तृतसमा न व्याकुलप्रच्छदा,
न क्लिष्टं हि शिरोपधानममलं शीर्षाभिघातौषधैः।
रोगे दृष्टिविलोभनं जनयितुं शोभा न काचित् कृता,
प्राणी प्राप्य रुजा पुनर्न शयनं शीघ्रं स्वयं मुञ्चति।।४।।

अन्वयः- हि शय्या नावनता तथा आस्तृतसमा न व्याकुलप्रच्छदा, अमलं शिरोपधानम्, शीर्षाभिघातौषधैः न क्लिष्टम् । रोगे दृष्टि-विलोभनं जनयितुं शोभा न काचित् कृता, प्राणी रुजा प्राप्य पुनः शयनं शीघ्र स्वयं न मुञ्चति।

सन्दर्भ - प्रस्तुत श्लोक भासप्रणीत ‘स्वप्नवासवदत्तम्’ के पञ्चम अङ्क से उद्धृत है।

प्रसङ्ग- इस श्लोक में राजा उदयन समुद्रगृह में पद्मावती के विश्राम करने का वर्णन करते हुए कहता है कि -

अनुवाद - यह शय्या किसी के बैठने से दबी नहीं है वैसी ही समतल है और शय्या पर पड़ी चादर बिल्कुल भी सिकुड़ी नहीं है अर्थात् इस चादर में सलवटें भी नहीं पड़ी हैं। शय्या पर तकिया भी न तो शिर पर रखने से कठोर हुआ है और वह स्वच्छ तकिया शिरोवेदना की दवाओं से भी दूषित नहीं हुआ है और न ही मन को आकर्षित करने के लिए किसी प्रकार की सजावट की गई है। रोग से पीड़ित प्राणी कभी शय्या को स्वयं शीघ्र नहीं छोड़ता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी-

व्याकुलप्रच्छदा	–	व्याकुलः प्रच्छदः यस्याः सा (बहुब्रीहि)
अमलम्	-	अविद्यमानं मलम् (नञ् तत्पुरुष)
उपधानम्	–	उप+धा+ल्युट्
रुजा	-	रुज्+टाप्
जनयितुम्	–	जन्+णिच्+तुमुन्
प्राप्य	–	प्र+आप्+ल्यप्
अलङ्कार	-	अनुप्रास अलङ्कार
छन्द	–	शार्दूलविक्रीडितम् छन्द

स्मराम्यवन्त्याधिपतेः सुतायाः
प्रस्थानकाले स्वजनं स्मरन्त्याः
वाष्पं प्रवृत्तं नयनान्तलग्नं,
स्नेहान्ममैवोरसि पातयन्त्याः॥५॥

अन्वयः - प्रस्थानकाले स्नेहात् स्वजनं स्मरन्त्याः प्रवृत्तं नयनान्तलग्नं वाष्पं मम एव उरसि पातयन्त्याः अवन्त्याधिपतेः सुतायाः स्मरामि।

सन्दर्भ - यह पद्य महाकवि भास प्रणीत ‘स्वप्नवासवदत्तम्’ के पञ्चम अङ्क से समुद्धृत है।

प्रसङ्ग- प्रस्तुत पद्य में वसन्तक राजा उदयन को उज्जयिनी की कथा सुनाता है तथा कहता है कि आपको यह कथा अच्छी नहीं लगती है तो दूसरी कहता हूँ। राजा उदयन विदूषक से कहते हैं कि हे मित्र ! यह कथा मुझे रुचिकर नहीं है, ऐसी बात नहीं है परन्तु

अनुवाद- उज्जयिनी से मेरे साथ चलते समय स्नेह के कारण अपने स्वजनों का स्मरण करती हुई, आँखों से आये हुए आँसुओं को नेत्रों की कोरों से मेरे हृदय पर गिराती हुई अवन्तिराज की पुत्री वासवदत्ता का स्मरण करता हूँ अर्थात् विदूषक के द्वारा उज्जयिनी के बारे में चर्चा करने पर राजा उदयन को वासवदत्ता का स्मरण हो आया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

नयनान्तलग्नम्	–	नयनयोः अन्तौ नयनान्तौ तयोः लग्नम् (तत्पुरुष समास)
पातयन्त्याः	-	पत्+णिच्+शतृ (स्त्री) (षष्ठी विभक्ति, एकवचन)
प्रवृत्तम्	–	प्र+वृत्+क्त
स्नेहान्ममैवोरसि	–	स्नेहात्+मम्+एव+उरसि
छन्द	-	उपजाति छन्द

विशेष – यह पद्य ध्वन्यात्मक होने के कारण उत्तम काव्य का उदाहरण है।

बहुशोप्युपदेशेषु यया मामीक्षमाणया।
हस्तेन स्रस्तकोणेन कृतमाकाशवादितम्।।६।।

अन्वयः- बहुशः अपि उपदेशेषु माम् ईक्षमाणया यया स्रस्तकोणेन हस्तेन आकाशवादितं कृतम्।

प्रसङ्ग – राजा उदयन वासवदत्ता को स्मरण करते हुए पुनः कहते हैं -

अनुवाद – वीणा शिक्षण के अवसरों में मुझको (निरन्तर) देखने वाली जिस वासवदत्ता के द्वारा हाथ से वीणा बजाने के साधन विशेष के (मिजराब) गिर जाने से अनेक बार शून्य में वीणा को बजाया गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

ईक्षमाणया	-	ईक्ष्+शानच्+टाप् (तृतीया विभक्ति,एकवचन)
स्रस्तकोणेन	–	स्रस्तः स्खलितः कोणः वीणावादनसाधनविशेषः "कोणो वीणावादनम्" यस्मात् तेन
कृतम्	–	कृ+क्त
बहुशोऽप्युपदेशेषु	–	बहुशः अपि उपदेशेषु
छन्द	-	अनुष्टुप् छन्द

निष्क्रामन् संभ्रमेणाहं द्वारपक्षेण ताडितः।
ततो व्यक्तं न जानामि भूतार्थोऽयं मनोरथः।।७।।

अन्वयः- सम्भ्रमेण निष्क्रामन् अहं द्वारपक्षेण ताडितः। ततः व्यक्तं न जानामि अयं मनोरथः भूतार्थः (वेति)

सन्दर्भ - प्रस्तुत पद्य भास कृत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के पञ्चम अङ्क से लिया गया है।

प्रसङ्ग- इस श्लोक में समुद्रगृह में वासवदत्ता द्वारा उदयन के कर स्पर्श का वर्णन किया गया है।

अनुवाद - शीघ्रता से निकलता हुआ मैं दरवाजे के एक कोने से टकरा गया हूँ। इसी कारण यह (वासवदत्ता का कर स्पर्श अथवा उसका आना) वास्तविक है अथवा मन की अभिलाषा है, मैं स्पष्ट रूप से नहीं जानता हूँ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

निष्क्रामन्	–	निस्+क्रम्+शतृ
भूतार्थः	-	भूतश्चासौ अर्थः (कर्मधारय समास)
सम्भ्रमेण	–	सम्+भ्रम्+घञ् (तृतीया विभक्ति, एकवचन)
ताडितः	–	ताड्+क्त
प्रतिबुद्धः	–	प्रति+बुध्+क्त
उपरता	–	उप्+रम्+क्त+टाप्
द्वारपक्षेण	-	द्वारस्य पक्ष इति तेन (षष्ठी तत्पुरुष)
अलङ्कार	–	स्वभावोक्ति, सन्देह एवं अनुप्रास अलङ्कार
छन्द	-	अनुष्टुप् छन्द

विशेष - राजा उदयन का वासवदत्ता को निकलते हुए अर्द्धजाग्रत अवस्था में देखना तथा उसी अवस्था में दरवाजे से टकराना सजीव नाटकीय चित्रण है। उनके सन्देह ज्ञान में सारी क्रियायें साधक हैं अतः वर्णन स्वाभाविक है।

शय्यायामवसुप्तं मां बोधयित्वा सखे ! गता ।
दग्धेति ब्रुवता पूर्वं वञ्चितोऽस्मि रुमण्वता।।८।।

अन्वयः- सखे! शय्यायाम् अवसुप्तम् माम् बोधयित्वा गता। दग्धा इति ब्रुवता, रुमण्वता पूर्वम् वंचितः अस्मि।

सन्दर्भः- यह पद्य महाकवि भास प्रणीत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के पञ्चम अङ्क से उद्धृत है।

प्रसङ्ग- विदूषक कहते हैं कि वासवदत्ता बहुत समय पूर्व मृत्यु को प्राप्त हो चुकी है तब राजा उदयन कहता है कि मित्र ! नहीं ऐसा मत कहो -

अनुवाद - हे मित्र ! शय्या पर सोये हुए मुझको जगाकर (वह वासवदत्ता) गयी है । 'जल गयी है', ऐसा कहते हुये पहले (जब मैं वासवदत्ता के वियोग में व्याकुल था) रूमण्वान् द्वारा ठगा गया हूँ अर्थात् उसने मुझे असत्य कहा था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

अवसुप्तम्	–	अव+स्वप्+क्त
बोधयित्वा	–	बुध्+णिच्+क्त्वा
गता	–	गम्+क्त+टाप्
वञ्चितः	–	वञ्च्+क्त
दग्धा	–	दह्+क्त+टाप्
अलङ्कार	-	अनुप्रास अलङ्कार
छन्द	–	अनुष्टुप् छन्द

विशेष - विप्रलम्भ शृंगार रस तथा माधुर्य गुण, कैशिकी वृत्ति तथा वैदर्भी रीति है। यहाँ उदयन का वासवदत्ता के प्रति दृढ़ प्रेम दिखाया गया है। यहाँ वासवदत्ता के विषय में संदेह रहना भावी समय में मिलन की पूर्व सूचना है।

यदि तावदयं स्वप्नो धन्यमप्रतिबोधनम्।
अथायं विभ्रमो वा स्याद्विभ्रमो ह्यस्तु मे चिरम्।।९।।

अन्वयः- यदि अयं स्वप्नः तावत् धन्यम् अप्रतिबोधनम्। अथ अयं विभ्रमः वा स्यात्, विभ्रमः हि मे चिरम् अस्तु।

सन्दर्भ – यह पद्य महाकवि भास द्वारा रचित 'स्वप्नवासवदत्तम्' नामक नाटक के पञ्चम अङ्क से लिया गया है।

प्रसङ्ग- जब विदूषक राजा उदयन से कहता है कि वासवदत्ता को आपने स्वप्न में देखा होगा, तब राजा उससे कहते हैं कि -

अनुवाद - यदि यह स्वप्न था तो न जागना ही अच्छा था और यदि यह भ्रांति थी अथवा बुद्धि विभ्रम था, तो निश्चय ही चिरकाल तब यह भ्रांति रहे ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

अप्रतिबोधनम्	-	न प्रति बोधनम् इति (नञ तत्पुरुष)
प्रतिबोधनम्	–	प्रति+बुध्+ल्युट्
विभ्रमः	–	वि+भ्रम्+घञ्
ह्यस्तु	–	हि+अस्तु (यण् संधि)

अलङ्कार	–	अनुकूल अलङ्कार
छन्द	–	अनुष्टुप् छन्द

विशेष - यहाँ राजा उदयन के लिए अप्रतिबोधन और विभ्रम दोनों ही वांछनीय दिखलाये गये है, अतः पद्य में अनुकूलालंकार है।

स्वप्नस्यान्ते विबुद्धेन नेत्रविप्रोषितांजनम्।
चारित्र्यमपि रक्षन्त्या दृष्टं दीर्घालकं मुखम्।।१०।।

अन्वयः- स्वप्नस्य अन्ते विबुद्धेन (मया) चारित्र्यम् अपि रक्षन्त्याः नेत्र विप्रोषितांजनं दीर्घालकं मुखं दृष्टम्।

सन्दर्भ - प्रस्तुत श्लोक महाकवि भास विरचित 'स्वप्नवासवदत्तम्' के पञ्चम अङ्क से अवतरित है।

प्रसङ्ग- विदूषक के यह कहने पर कि आपने स्वप्न में अवन्ति सुन्दरी नामक यक्षिणी को देखा होगा, तब राजा उदयन कहते हैं कि नहीं, नहीं -

अनुवाद - नींद के बाद के जगे हुए (मैंने) चरित्र की रक्षा करने वाली (वासवदत्ता) का आंखों से पौंछे हुए अञ्जन (काजल) वाला, लम्बे बालों वाला मुख (भी) देखा था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

नेत्रविप्रोषिताञ्जनम्	–	नेत्राभ्यां विप्रोषितम् अञ्जनं यस्मिन् तत् (बहुब्रीहि समास)
विप्रोषित	–	वि+प्र+वस्+क्त
दृष्टम्	–	दृश्+क्त
विबुद्धेन	–	वि+बुध्+क्त (तृतीया विभक्ति,एकवचन)
रक्षत्या	–	रक्ष्+शतृ+ङीप् (तृतीया विभक्ति,एकवचन)
दीर्घालकम्	-	दीर्घाः अलकाः यत्र तत्
अलङ्कार	-	अनुप्रास एवं परिकर अलङ्कार
छन्द	-	अनुष्टुप् छन्द

विशेष - वर्णसाम्य से अनुप्रास तथा शब्द का साभिप्राय प्रयोग होने से परिकर अलङ्कार है। विप्रलम्भ शृंगार, माधुर्य गुण, कैशिकी वृत्ति तथा वैदर्भी रीति है।

योऽयं संत्रस्तया देव्या तया बाहुर्निपीडितः।
स्वप्नेऽप्युत्पन्नसंस्पर्शो रोमहर्षं न मुञ्चति।।११।।

अन्वयः - संत्रस्तया तया देव्याः निपीडितः यः अयं बाहुः, निपीडितः (स) स्वप्नेअपि उत्पन्न-संस्पर्शः रोमहर्षं न मुञ्चति।

सन्दर्भ - प्रस्तुत पद्य महाकवि भास द्वारा प्रणीत 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक के पञ्चम अङ्क से अवतरित है।

प्रसङ्ग– राजा उदयन विदूषक से कहता है कि मैंने स्वप्न में किसी अन्य को नहीं अपितु वासवदत्ता को ही देखा था। इसकी पुष्टिकरण के लिए राजा कहता है कि -

अनुवाद – भयभीता उस देवी (वासवदत्ता) के द्वारा दबायी गयी यह भुजा स्वप्न में भी (वासवदत्ता के) स्पर्श से जन्य रोमाञ्च को (अब भी) नहीं छोड़ रही है अर्थात् अभी भी मेरी भुजा वासवदत्ता के स्पर्श से रोमाञ्चित हो रही है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

निपीडितः	–	नि+पीड्+क्त

उत्पन्न	–	उद्+पद्+क्त
रोमहर्षम्	-	रोम्णः हर्षः तम् (षष्ठी तत्पुरुष)
संत्रस्तया	–	सम्+त्रस्+क्त (तृतीया विभक्ति, एकवचन)
अलङ्कार	–	अनुप्रास, परिकर एवं काव्यलिङ्ग अलङ्कार
छन्द	-	अनुष्टुप् छन्द

विशेष – निपीड़न का सार्थक प्रयोग होने से परिकर अलङ्कार है। कवि के द्वारा यहाँ प्रेमीयुगल के हृदस्थ प्रेम का सजीव चित्रण किया गया है। उदयन स्वप्न में भी वासवदत्ता के स्पर्श से उत्पन्न रोमाञ्च को अनुभव करता है।

भिन्नास्ते रिपवो भवद्गुणरताः पौराः समाश्वासिताः
पार्ष्णी यापि भवत्प्रयाणसमये तस्या विधानं कृतम्।
यद्यत् साध्यमरिप्रमाथजननं तत्तन्मयानुष्ठितं
तीर्णा चापि बलैर्नदी त्रिपथगा वत्साश्च हस्ते तव ॥१२॥

अन्वयः- ते रिपवः भिन्नाः, भवद्गुणरताः पौराः समाश्वासिताः, अपि भवत्प्रयाणसमये या पार्ष्णी तस्याः विधानं कृतम्, अरिप्रमाथजननं यत् यत् साध्यं तत् तत् मया अनुष्ठितम्। त्रिपथगा नदी बलैः तीर्णा, वत्साः च तव हस्ते (सन्ति)।

सन्दर्भ - प्रस्तुत पद्य महाकवि भासकृत 'स्वप्नासवदत्तम्' नामक नाटक के पञ्चम अङ्क से लिया गया है।

प्रसङ्ग– काञ्चुकीय मन्त्री रुमण्वान् द्वारा आरूणि को नष्ट करने हेतु लायी गयी सेना के विषय में राजा उदयन को सूचित करता है -

अनुवाद - आपके शत्रु (साम, दाम, दण्ड, भेद इत्यादि गूढ़ उपायों से) तोड़ दिये गये हैं अर्थात् उनमें फूट डाल दी गयी है। आपके गुणों में अनुरक्त नागरिक आश्वस्त कर दिये गये हैं। (युद्ध के लिए) आपके प्रस्थान करने के समय पीछे चलने वाली सेना के भाग (पार्ष्णि) को भी व्यवस्थित कर दिया गया है। शत्रु के नाश करने वाला जो कार्य है, वह मेरे द्वारा कर दिया है और सेनाओं के द्वारा गंगानदी भी पार कर ली गयी है (अब) वत्स देश आपके हाथ में ही है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

अरिप्रमाथजननम्	-	अरीणां प्रमाथस्य जननं इति (षष्ठी तत्पुरूष)
त्रिपथगा	-	त्रयाणां पथां समाहारः (द्विगु समास)
भिन्नाः	–	भिद्+क्त
अलङ्कार	-	स्वभावोक्ति एवं अनुप्रास अलङ्कार
छन्द	-	शार्दूलविक्रीडितम् छन्द
विशेष	-	यथार्थ वर्णन होने से स्वभावोक्ति अलङ्कार है।

उपेत्य नागेन्द्रतुरंगतीर्णे तमारूणिं दारूणकर्मदक्षम्
विकीर्णबाणोग्रतरङ्गभङ्गे महार्णवाभे युधि नाशयामि॥१३॥

अन्वयः- नागेन्द्रतुरंगतीर्णे, विकीर्णबागोग्रतरङ्गभङ्गे, महावर्णवाभे, युधि उपेत्य दारूणकर्मदक्षं तम् आरूणिम् नाशयामि।

सन्दर्भ - प्रस्तुत पद्य महाकवि भास द्वारा रचित नाटक 'स्वप्नवासवदत्तम्' के पंचम अङ्क से उद्धृत है।

प्रसङ्ग - महाराज उदयन सेना की व्यवस्था सुनकर जोश से कहते हैं कि -

अनुवाद - मैं श्रेष्ठ हाथियों तथा घोड़ों से युक्त, बिखेरे हुये बाण रूपी भयंकर लहरों वाले महासागर की भाँति युद्ध में जाकर उस निष्ठुर कर्म करने में कुशल आरुणि को नष्ट कर देता हूँ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी –

नागेन्द्रतुरंगतीर्णे	-	नागेन्द्राश्च तुरंगाश्च तैः तीर्णे तृतीया तत्पुरुष)।
दारुणकर्मदक्षम्	-	दारुणेषु कर्मसु दक्षं इति तम् (सप्तमी तत्पुरुष)
उपेत्य	-	उप+इण्+ल्यप्
तीर्णे	–	तृ+क्त (सप्तमी विभक्ति,एकवचन)
अलङ्कार	–	अनुप्रास एवं रूपक अलङ्कार
छन्द	-	उपेन्द्रवज्रा छन्द

विशेष - प्रस्तुत पद्य में बाणरूपी तरङ्ग के वर्णन से रूपक अलङ्कार है। वीर रस, ओजगुण तथा आरभटी वृत्ति है। इस पद्य में राजा उदयन की वीरता का भी प्रदर्शन किया गया है।

19.4 स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठ अङ्क के श्लोकों की अन्वय सहित व्याख्या

श्रुतिसुख –

निनदे ! कथं नु देव्या स्तनयुगले जघनस्थले च सुप्ता।

विहगगणरजोविकीर्णदण्डा, प्रतिभयमध्युषितास्यरण्यवासम् ।।१।।

अन्वयः- श्रुतिसुख-निनदे ! देव्याः स्तनयुगले जघन-स्थले च सुप्ता विहगगण- रजोविकीर्ण-दण्डा प्रतिभयम् अरण्यवासं कथं नु अध्युषिता असि।

सन्दर्भ – यह श्लोक महाकवि भास रचित 'स्वप्नवासवदत्तम्' के षष्ठ अङ्क से उद्धृत है।

प्रसङ्ग– राजा उदयन सूर्यामुख नामक महल में जाते हैं और उसी समय वीणा का स्वर उनको सुनाई देता है जिसे सुनकर महाराज कहते हैं कि यह घोषवती वीणा का ही शब्द है, जिसे वासवदत्ता बजाती थी। राजा वीणा को प्राप्त कर लेने के बाद वीणा को सम्बोधित करते हुए कहते हैं -

अनुवाद - कानों के लिए सुखद निनाद वाली, देवी (वासवदत्ता) के स्तनयुगलों एवं जंघाओं पर सोयी हुई, पक्षियों के झुण्ड की मल (बींट) से युक्त दण्डवाली (हे वीणा), कैसे तुम इस भयंकर जंगल में रही ?

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

श्रुतिसुखनिननदे	-	श्रुत्योः सुखः प्रीतिकरः निनदः नादो यस्याः सा (बहुव्रीहि समास)
स्तनयुगले	-	स्तनयोः युगले तस्मिन् (षष्ठी तत्पुरुष)
सुप्ता	–	सुप्+क्त+टाप्
अध्युषिता	–	अधि+वस्+क्त
श्रुति	–	श्रु+क्तिन्
अलङ्कार	–	अनुप्रास एवं परिकर अलङ्कार
छन्द	–	पुष्पिताग्रा छन्द

विशेष - विप्रलम्भ शृंगार रस, माधुर्यगुण, कैशिकी वृत्ति तथा वैदर्भी रीति है। राजा को वीणा का स्वर सुनाई देना और वीणा प्राप्त होना एक नाटकीय संकेत है। इसी के माध्यम से राजा उदयन को प्रियतमा वासवदत्ता का स्मरण होता है।

श्रोणी-समुद्वहनपार्श्व-निपीडितानि,
खेदस्तनान्तरसुखान्युपगूहितानि।
उद्दिश्य मां च विरहे परिदेवितानि,
वाद्यान्तरेषु कथितानि च सस्मितानि ।।२।।

अन्वयः- श्रोणीसमुद्वहन-पार्श्वनिपीडितानि खेदस्तनान्तरसुखानि उपगूहितानि। माम् उद्दिश्य विरहे परिदेवितानि, वाद्यान्तरेषु सस्मितानि च कथितानि।

सन्दर्भ - प्रस्तुत श्लोक महाकवि भास द्वारा रचित नाटक 'स्वप्नवासवदत्तम्' के षष्ठ अङ्क से अवतरित है।

प्रसङ्ग- उपर्युक्त पद्य में राजा उदयन घोषवती वीणा को पुनः सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि तुम स्नेहरहित हो जो वासवदत्ता का स्मरण नहीं करती हो-

अनुवाद – (वीणावादन करते समय) गोद में धारण की जाती हुई, (वीणा के) दोनों पृष्ठभागों को दबाती हुई, थकान हो जाने पर स्तनयुगल के मध्य सुखद आलिङ्गनों को तथा विरह की अवस्था में मुझे उद्देश्य करके किये गये विलापों को एवं (वीणा वादन के) अन्तराल (अवकाश) में मुस्कुराहट के साथ कहे गये वचनों को (क्या स्मरण नहीं करती हो)।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

सस्मितानि	-	स्मितेन सहितानि (अव्ययीभाव समास)
निपीडन	–	नि+पीड्+ल्युट्
उपगूहितानि	–	उप+गुह्+क्त (द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)
उद्दिश्य	–	उत्+दिश्+ल्यप्
अलङ्कार	–	अनुप्रास तथा विशेषोक्ति अलङ्कार
छन्द	-	वसन्ततिलका छन्द

विशेष - वासवदत्ता के स्मरण के लिए समस्त कारण होते हुये भी घोषवती वीणा वासवदत्ता का स्मरण नहीं करती है, अतएव कारण के होते हुए भी कार्य न होने से विशेषोक्ति अलङ्कार है। विप्रलम्भ शृंगार तथा माधुर्य गुण है।

चिरप्रसुप्तः कामो मे वीणया प्रतिबोधितः।
तां तु देवीं न पश्यामि यस्या घोषवती प्रिया ।।३।।

अन्वयः - मे चिरप्रसुप्तः कामः वीणया प्रतिबोधितः, यस्याः घोषितवती प्रिया, तां देवीं तु न पश्यामि।

सन्दर्भ – यह श्लोक कविता कामिनी हास महाकवि भास के नाटक 'स्वप्नवासवदत्तम्' के षष्ठ अङ्क से समुद्धृत है।

प्रसङ्ग- राजा उदयन घोषवती वीणा को सुनकर एवं प्राप्त करके वासवदत्ता को और अधिक स्मरण करने लगते हैं।

अनुवाद - चिरकाल से सोये हुए मेरे (वासवदत्ता के प्रति) प्रेम को (इस) वीणा के द्वारा जगा दिया गया है, परन्तु जिसकी यह घोषवत (वीणा) प्रिय है, उस देवी वासवदत्ता को (मैं) नहीं देख रहा हूँ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

चिरप्रसुप्तः	-	चिरं प्रसुप्तः
प्रसुप्तः	-	प्र+सुप्+क्त
प्रतिबोधितः	–	प्रति+बुध्+णिच्+क्त
अलङ्कार	–	अनुप्रास अलङ्कार
छन्द	-	अनुष्टुप् छन्द

विशेष - विप्रलम्भ शृंगार, माधुर्य गुण, कैशिकी वृत्ति तथा वैदर्भी रीति है।

किं वक्ष्यतीति हृदयं परिशङ्कितं मे,
कन्या मयाप्यपहृता न च रक्षिता सा।
भाग्यैश्चलैर्महदवाप्तगुणोपघातः,
पुत्रः पितुर्जनितरोष इवास्मि भीतः।।४।।

अन्वयः- किं वक्ष्यति, इति में हृदय परिशङ्कितम् । मया कन्या अपहृता अपि, सा च न रक्षिता। चलैः भाग्यैः महदवाप्तगुणोपघातः, पितुः जनितरोषः पुत्र इव भीतः अस्मि।

सन्दर्भ – उपर्युक्त श्लोक महाकवि भासकृत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के षष्ठ अङ्क से लिया गया है।

प्रसङ्ग- जब पद्मावती यह सोचकर परेशान हो जाती है कि वासवदत्ता के माता-पिता क्या कहेंगे जब उनको राजा उदयन के दूसरे विवाह की सूचना मिलेगी, तब राजा उदयन पद्मावती की इस शङ्का को उचित बताते हुये कहते हैं -

अनुवाद - क्या कहेंगे ? यह सोचकर मेरा हृदय (भी) आशङ्कित है। मेरे द्वारा (उनकी) पुत्री का अपहरण भी किया और उसकी रक्षा भी नहीं की । चञ्चल भाग्य के द्वारा अथवा भाग्य की प्रतिकूलता के कारण गुणों पर जिसने अत्यधिक आघात प्राप्त किया है, (अतएव) पिता के क्रोध को उत्पन्न करने वाले पुत्र की भाँति डरा हुआ हूँ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

अपहृता	–	अप+हृ+क्त+टाप्
अवाप्त	–	अव+आप्+क्त
भीतः	–	भी+क्त
जनितरोषः	–	जनितः रोषः येन सः (बहुव्रीहि समास)
अलङ्कार	–	अनुप्रास तथा उपमा अलङ्कार
छन्द	-	वसन्ततिलका छन्द
सम्बन्धि	-	राज्यमिदमेत्य महान् प्रहर्षः

स्मृत्वा पुनर्नृपसुतानिधनं विषादः।
किं नाम दैव! भवता न कृतं यदि स्याद्
राज्य परैरपहृतं कुशलं च देव्याः।।५।।

अन्वयः- इदं सम्बन्धिराज्यम् एत्य महान् प्रहर्षः, पुनः नृपसुतानिधनं स्मृत्या विषादः दैव! परैः अपहृतं राज्यं देव्याः कुशलं यदि स्यात् (तर्हि) भवता किं नाम न कृतम् (स्यात्)।

सन्दर्भ – यहाँ अवतरित श्लोक महाकवि भास द्वारा रचित 'स्वप्नवासवदत्तम्' के षष्ठ अङ्क से उद्धृत है।

प्रसङ्ग- वासवदत्ता की मृत्यु की सूचना प्राप्त होने पर उसके परिजन राजा उदयन से मिलने आते हैं। इसी समय काञ्चुकीय कहता है कि - हे राजन् !

अनुवाद - इस सम्बन्धि-राज्य में आकर मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है, परंतु राजपुत्री (वासवदत्ता) की मृत्यु का स्मरण कर दुःख हो रहा है । हे दैव ! तूने क्या नहीं किया होता अर्थात् यह अतीव हर्ष का विषय होता, यदि शत्रु द्वारा छीना गया राज्य प्राप्त होता और देवी (वासवदत्ता) भी कुशलपूर्वक होती अर्थात् जीवित होती ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

सम्बन्धिराज्यम्	-	सम्बन्धिनः राज्यम् (षष्ठी तत्पुरुष)
नृपसुतानिधनम्	-	नृपस्य सुता, नृपसुता तस्याः निधनम् (षष्ठी तत्पुरुष)
एत्य	–	इण्+ल्यप्
स्मृत्वा	–	स्मृ+क्त्वा
कृतम्	–	कृ+क्त
अपहृतम्	–	अप+हृ+क्त
अलङ्कार	–	अनुप्रास तथा अर्थापत्ति अलङ्कार
छन्द	-	वसन्ततिलका छन्द

पृथिव्यां राजवंश्यानामुदयास्तमयप्रभुः।
अपि राजा स कुशली मया काङ्क्षितबान्धवः ? ।।६।।

अन्वयः- पृथिव्यां राजवंश्यानाम् उदयास्तमयः प्रभुः मया कांक्षितबांधवः स राजा अपि कुशली वर्तते।

सन्दर्भ - इस पद्य को महाकवि भास प्रणीत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के षष्ठाङ्क से लिया गया है।

प्रसङ्ग- राजा प्रद्योत द्वारा भेजे गए काञ्चुकीय का अभिवादन स्वीकार करने के पश्चात् राजा उदयन राजा प्रद्योत के विषय में पूछते हैं कि -

अनुवाद - (आर्य) पृथिवी पर राजकुलों में उत्पन्न श्रेष्ठ राजाओं के अभ्युदय तथा विनाश करने में समर्थ तथा मेरे द्वारा चाहे गये सम्बन्धी अर्थात् मेरे साथ जिनके द्वारा सम्बन्ध चाहा गया है, वे राजा (प्रद्योत) कुशल-मङ्गल तो हैं ?

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

राजवंश्यानाम्	-	राज्ञां वंशे भवाः राजवंश्याः तेषाम् (षष्ठी तत्पुरुष)
काङ्क्षितबान्धवः	–	काङ्क्षितः बान्धवः येन सः (बहुव्रीहि समास)
बान्धवः	–	बन्धु+अण्
अलङ्कार	–	अनुप्रास अलङ्कार
छन्द	-	अनुष्टुप् छन्द

विशेष - प्रस्तुत पद्य में राजा उदयन की विनम्रता तथा महाराज प्रद्योत की शक्ति का चित्रण किया गया है।

कातरा येऽप्यशक्ता वा नोत्साहस्तेषु जायते।
प्रायेण हि नरेन्द्रश्रीः सोत्साहैरेव भुज्यते ।।७।।

अन्वयः- ये कातराः अपि अशक्ताः वा तेषु उत्साहः न जायते, प्रायेण हि नरेन्द्रश्रीः सोत्साहैः एव भुज्यते।।

सन्दर्भ - प्रस्तुत श्लोक महाकवि भास के नाटक 'स्वप्नवासवदत्तम्' के षष्ठाङ्क से अवतरित किया गया है।

प्रसङ्ग – काञ्चुकीय महाराज उदयन से कायरता तथा साहस के विषय में चर्चा करते हुये कहते हैं -
अनुवाद - कायर अथवा जो असमर्थ हैं, उनमें उत्साह पैदा नहीं होता है। निश्चय ही राज्यलक्ष्मी प्रायः उत्साह वालों के द्वारा भोगी जाती है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

सोत्साहः	-	स उत्साह (गुण सन्धि)
नरेन्द्र	-	नर+इन्द्र (गुण सन्धि)
अशक्ताः	-	न शक्ताः इति (नञ् तत्पुरूष समास)
अलङ्कार	–	अनुप्रास, काव्यलिङ्ग तथा अप्रस्तुत-प्रशंसालङ्कार
छन्द	-	अनुष्टुप् छन्द

विशेष - प्रस्तुत पद्य में राजा उदयन की अप्रस्तुत प्रशंसा होने से अप्रस्तुत प्रशंसालङ्कार है तथा कार्य-कारण भाव होने से काव्यलिङ्ग अलङ्कार है। प्रस्तुत पद्य में सूक्ति का अन्त में प्रयोग किया गया है। प्रसाद, गुण शान्त रस, सात्वती वृत्ति तथा वैदर्भी रीति है।

अहमवजितः पूर्वं तावत् सुतैः सह लालितो
दृढमपहृता कन्या भूयो मया न च रक्षिता।
निधनमपि च श्रुत्वा तस्यास्तथैव मयि स्वता,
ननु यदुचितान् वत्सान् प्राप्तुं नृपोऽत्र हि कारणम् ।।८।।

अन्वयः- पूर्वं तावत् अवजितः अहं सुतैः सह ललितः दृढं मया कन्या अपहृता, भूयः च न रक्षिताः तस्याः निधनं श्रुत्वा च अपि तथैव मयि स्वता, ननु उचितान् वत्सान् प्राप्तुं यत् अत्र नृपः हि कारणम् ।
सन्दर्भ - यह पद्य महाकवि भास के नाटक 'स्वप्नवासवदत्तम्' के षष्ठांक से अवतरित है ।
प्रसङ्ग- राजा उदयन स्वयं पर महासेन की अनुकम्पा और स्नेह के बारे में काञ्चुकीय को कहते हैं -
अनुवाद – पहले उनके (राजा महासेन) द्वारा मैं जीता गया और अपने पुत्रों के साथ मेरा पालन किया गया । मैंने (उनकी) कन्या का कठोरतापूर्वक अपहरण किया और फिर रक्षा भी नहीं की। उसकी (पुत्री की) मृत्य के विषय में सुनकर भी वैसा ही मुझ पर अपनत्व है। निस्सन्देह जो उचित रूप (अधिकार के साथ) से वत्स (राज्य) को पाने में समर्थ हुआ हूँ, उसमें राजा (महासेन) ही कारण है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

अवजितः	–	अव+जि+क्त
अपहृता	–	अप+हृ+क्त+टाप्
रक्षिता	–	रक्ष्+क्त+टाप्
श्रुत्वा	–	श्रु+क्त्वा
प्राप्तुम्	–	प्र+आप्+तुमुन्
स्वता	–	स्व+तल्+टाप्
दृढः	–	दृढ्+क्त
अलङ्कार	–	अनुप्रास अलङ्कार
छन्द	-	हरिणी छन्द । हरिणी छन्द का लक्षण है – ''नसमरसला गः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी मता ।'' प्रत्येक चरण में १७ अक्षर होने चाहिये ।

विशेष - शान्त रस, प्रसाद गुण, वैदर्भी रीति तथा सात्वती वृत्ति है।

षोडशान्तः पुरज्येष्ठा पुण्या नगरदेवता।

मम प्रवासदुःखार्त्ता माता कुशलिनी ननु ? ।।९।।

अन्वयः- षोडशान्तः पुरज्येष्ठा पुण्या नगरदेवता, मम प्रवासदुःखार्त्ता माता कुशलिनी ननु।।

सन्दर्भ - उपर्युक्त पद्य महाकवि भास द्वारा प्रणीत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के षष्ठाङ्क से लिया गया है।

प्रसङ्ग- महासेन का संदेश सुनाने के पश्चात् काञ्चुकीय वसुन्धरा से देवी अङ्गारवती का सन्देश राजा उदयन को सुनाने के लिये कहता है। तब राजा भी उनका कुशल-क्षेम पूछते हैं -

अनुवाद - सोलह रानियों वाले अन्तःपुर में ज्येष्ठ, पवित्र, नगर की देवी (अर्थात् राजलक्ष्मी के समान) मेरे प्रवास के (उज्जयिनी से छिपकर चले जाने के कारण) दुःख से व्याकुल माता कुशलपूर्वक तो हैं ?

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

षोऽशान्तः पुरज्ययेष्ठाः	-	षोडशेषु अन्तःपुरेषु ज्येष्ठा (उत्तरपद बहुब्रीहि)
अलङ्कार	–	अनुप्रास अलङ्कार
छन्द	–	अनुष्टुप् छन्द

विशेष - शान्त रस व प्रसाद गुण है।

कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले,
रज्जच्छेदे के घटं धारयन्ति ।
एवं लोकस्तुल्यधर्मो वनानां
काले काले छिद्यते रूह्यते च।।१०।।

अन्वयः- कः कं मृत्युकाले रक्षितुं शक्तः। रज्जुछेदे के घटं धारयन्ति? एवं लोकः तुल्यधर्मः वनानां काले काले छिद्यते रूह्यते च।

सन्दर्भ – यह श्लोक महाकवि भास विरचित 'स्वप्नवासवदत्तम्' के षष्ठांक से समुद्धृत है।

प्रसङ्ग- राजा उदयन को काञ्चुकीय लोक-धर्म के बारे में बतलाते हुये कहता है -

अनुवाद - मृत्यु का समय आ जाने पर कौन किसकी रक्षा करने में समर्थ हो सकता है? रस्सी के टूट जाने पर घड़े को कौन धारण कर सकता है। वृक्षों के समान ही धर्म वाला (जैसे वन में वृक्ष समय-समय पर कटते और उगते हैं, उसी प्रकार) यह संसार भी समय-समय पर उत्पन्न होता है तथा नाश को प्राप्त होता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

मृत्युकाले	-	मृत्योः कालः तस्मिन् (षष्ठी तत्पुरुष समास)
रज्जुच्छेदे	-	रज्जोश्छेदः तस्मिन् (षष्ठी तत्पुरुष समास)
तुल्य धर्म	-	तुल्यः धर्मः यस्य सः (बहुव्रीहि समास)
अलङ्कार	–	अनुप्रास, दृष्टान्त एवं उपमा अलङ्कार
छन्द	-	शालिनी छन्द। शालिनी छन्द का लक्षण है – "मात्तौ गौ चेच्छालिनी वेदलोकैः।" इसके प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते हैं।

विशेष - प्रस्तुत पद्य के पूर्वाद्ध में दृष्टान्तालङ्कार तथा उत्तरार्द्ध में उपमा अलङ्कार है। शान्त रस, **प्रासद गुण, सात्वती वृत्ति तथा वैदर्भी रीति है।**

महासेनस्य दुहिता शिष्या देवी च मे प्रिया।
कथं सा न मया शक्या स्मर्तुं देहान्तरेष्वपि ।।११।

अन्वयः- महासेनस्य दुहिता मे प्रिया, शिष्या, देवी च, सा मया देहान्तरेषु अपि कथं न स्मर्त्तुं शक्या।

सन्दर्भ - इस पद्य को महाकवि भास के नाटक 'स्वप्नवासवदत्तम्' के षष्ठाङ्क से अवतरित किया गया है।

प्रसङ्ग– काञ्चुकीय के लोक धर्म बताने पर राजा उदयन वासवदत्ता के लिये अपने स्नेह को बतलाते हुये काञ्चुकीय से कहते हैं -

अनुवाद - महासेन की पुत्री, मेरी शिष्या पत्नी तथा प्रिया वह (वासवदत्ता) जन्मान्तर में (दूसरे शरीर को प्राप्त करने पर) भी कैसे स्मरण करने के योग्य नहीं है अर्थात् वह तो सदैव ही स्मरण की जायेगी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

शिष्या	–	शास्+क्यप्+टाप्
शक्या	–	शक्+ण्यत्+टाप्
अलङ्कार	-	अनुप्रास तथा अर्थापत्ति अलङ्कार
छन्द	–	अनुष्टुप् छन्द

विशेष - 'कथम्' पद प्रयोग से अन्यार्थ की प्राप्ति होने से अर्थापत्ति अलङ्कार है। शान्त रस तथा प्रसाद गुण है। काकुध्वनि के कारण उत्तम काव्य है।

वाक्यमेतत् प्रियतरं राज्यलाभशतादपि।
अपराद्धेष्वपि स्नेहो यदस्मासु न विस्मृतः॥१२॥

अन्वयः- एतत् वाक्यम्, राज्यलाभशतात् अपि प्रियतरम्। यत् अपराद्धेषु अपि अस्मासु स्नेहः न विस्मृतः।

सन्दर्भ – यह पद्य महाकवि भास द्वारा रचित नाटक 'स्वप्नवासवदत्तम्' के षष्ठ अङ्क से समुद्धृत हैं।

प्रसङ्ग - महाराज उदयन देवी अङ्गारवती का संदेश सुनकर कहते हैं कि-

अनुवाद - ये वचन सैंकड़ों राज्यों की प्राप्ति से भी अधिक प्रिय (मधुर) है, (क्योंकि) हमारे अपराधी होने पर भी हम पर उन्होंने स्नेह नहीं भुलाया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

राज्यलाभशतात्	-	राजस्य लाभः राज्यलाभः, तस्य शतम् तस्मात् (षष्ठी तत्पुरुष)
प्रियतरम्	–	प्रिय+तरप् प्रत्यय
अपराद्धेषु	–	अप+राध्+क्त (सप्तमी विभक्ति,बहुवचन)
विस्मृतः	–	वि+स्मृ+क्त
अलङ्कार	-	अनुप्रास अलङ्कार
छन्द	-	अनुष्टुप् छन्द

अस्य स्निग्धस्य वर्णस्य विपत्तिर्दारूणा कथम्।
इदं च मुखमाधुर्यं कथं दूषितमग्निना ॥१३॥

अन्वयः- अस्य स्निग्धस्य वर्णस्य दारूणा विपत्तिः कथम् ? च इदम् मुखमाधुर्यम् अग्निना कथं दूषितम् ?

सन्दर्भ - यह पद्यांश महाकवि भास प्रणीत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के षष्ठ अङ्क से उद्धृत है।

प्रसङ्ग-देवी अङ्गारवती द्वारा भेजे गए चित्रफलक में वासवदत्ता को देखकर राजा उदयन कहते हैं -

अनुवाद - इस सुन्दर रूप की ऐसी दारुण विपदा कैसे आ पड़ी ? और मुख के सौन्दर्य को अग्नि ने कैसे दूषित किया ?

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

मुखमाधुर्यम्	-	मुखस्य माधुर्यम् (षष्ठी तत्पुरुष)
स्निग्धस्य	–	स्निह्+क्त (षष्ठी विभक्ति, एकवचन)
विपत्तिः	–	वि+पद्+क्तिन्
अलङ्कार	-	अनुप्रास एवं अर्थापत्ति अलङ्कार
छन्द	-	अनुष्टुप् छन्द

विशेष - प्रस्तुत पद्य में 'कथम्' पद प्रयोग से अन्यार्थ की प्राप्ति होने से 'अर्थापत्ति' अलङ्कार है। विप्रलम्भ शृंगार, माधुर्य गुण, कैशिकी वृत्ति तथा वैदर्भी रीति है।

यदि विप्रस्य भगिनी व्यक्तमन्या भविष्यति।
परस्परगता लोके दृश्यते तुल्यरूपता ।।१४।।

अन्वयः- यदि विप्रस्य भगिनी (तर्हि) व्यक्तम् अन्या भविष्यति। लोके परस्परगता रूपतुल्यता दृश्यते।

सन्दर्भ - प्रस्तुत पद्य महाकवि भासकृत नाटक 'स्वप्नवासवदत्तम्' के षष्ठांक से समुद्धृत है।

प्रसङ्ग- राजा उदयन के द्वारा रानी अङ्गारवती के द्वारा भेजे गये चित्र को देखकर व्याकुल हो जाने पर पद्मावती कहती है कि किसी ब्राह्मण की बहिन मेरे यहाँ धरोहर के रूप में रखी गयी है वह चित्र के समान ही दिखती है तब उदयन कहता है -

अनुवाद - यदि वह ब्राह्मण की बहिन है तो स्पष्ट ही कोई अन्य होगी क्योंकि संसार में एक दूसरे में रूप सादृश्य देखा जाता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

परस्परगता	–	परं परं गता इति परस्परगता (द्वितीया तत्पुरुष)
गता	–	गम्+क्त+टाप्
भगिनी	–	भग्+इनि+ङीप्
तुल्यता	–	तुल्+यत्+तल्
तुल्यरूपं	-	तुल्यं रूपम् इति तुल्य रूपं (कर्म) तस्य भावः
अलङ्कार	–	काव्यलिङ्ग एवं अनुप्रास अलङ्कार
छन्द	-	अनुष्टुप् छन्द

विशेष - प्रस्तुत पद्य में कारण- कार्य भाव होने के कारण काव्यलिङ्ग अलङ्कार इस पद्य में शान्त-रस एवं प्रसाद गुण है।

प्रच्छाद्य राजमहिषीं नृपतेर्हितार्थम्,
कामं मया कृतमिदं हितमित्यवेक्ष्य।
सिद्धेऽपि नाम मम कर्मणि पार्थिवोऽसौ,
किं वक्ष्यतीति हृदयं परिशङ्कितं मे।।१५।।

अन्वयः- नृपतेर्हितार्थं राजमहिषीं प्रच्छाद्य, हितम् इति अवेक्ष्य मया इदं कामं कृतम्। नाम मम कर्मणि सिद्धे अपि पार्थिवः किं वक्ष्यति, इति मे हृदयं परिशङ्कितम्।

सन्दर्भ - यह पद्यांश महाकवि भास विरचित 'स्वप्नवासवदत्तम्' के षष्ठाङ्क का अंश है।

प्रसङ्ग– जब राजा उदयन पद्मावती को आर्या अवन्तिका को लाने का आदेश देते हैं तो वहीं उपस्थित मन्त्री यौगन्धरायण सोचते हैं -

अनुवाद - राजा के हित के लिए महारानी वासवदत्ता को छिपाकर, (इसी में) हित को देखकर या विचारकर मेरे द्वारा यह कार्य अपनी इच्छा से किया गया है। मेरा कार्य सिद्ध हो जाने पर भी वह राजा क्या कहेंगे, यह सोचकर मेरा हृदय सशङ्कित हो रहा है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

राजमहिषीम्	-	राज्ञः महिषी इति ताम् (षष्ठी तत्पुरुष)
प्रच्छाद्य	–	प्र+छद्+णिच्+क्त्वा (ल्यप्)
अवेक्ष्य	–	अव+ईक्ष+ल्यप्
सिद्धे	–	सिध्+क्त (सप्तमी विभक्ति, एकवचन)
अलङ्कार	-	अनुप्रास अलङ्कार
छन्द	-	वसन्ततिलका छन्द

विशेष - ध्वन्यात्मकता होने से उत्तम काव्य है।

भारतानां कुले जातो विनीतो ज्ञानवाञ्छुचिः।
तन्नार्हसि बलाद्धर्तुं राजधर्मस्य देशिः॥१६॥

अन्वयः- (त्वम्) भारतानां कुले जातः, विनीतः ज्ञानवान् शुचिः राजधर्मस्य देशिकः (असि), तत् बलात् हर्तुम् न अर्हसि।

सन्दर्भ - प्रस्तुत श्लोक महाकवि भास प्रणीत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के षष्ठ अङ्क का अवतरण है।

प्रसङ्ग- प्रस्तुत पद्य में राजा उदयन के द्वारा महासेन की पुत्री वासवदत्ता को पहचानने पर यौगन्धरायण कहते हैं -

अनुवाद - भरत वंश में उत्पन्न हुए, विनम्र, ज्ञानी, पवित्र चरित्र वाले, राजधर्म का प्रवर्तन करने वाले आप हैं। इसलिए बलपूर्वक (इस मेरी बहिन को) अपहरण करने योग्य नहीं है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

विनीतः	–	वि+नी+क्त
ज्ञानवान्	–	ज्ञान+मतुप्
हर्तुम्	–	हृ+तुमुन्
राजधर्मस्य	-	राज्ञः धर्मः तस्य (षष्ठी तत्पुरुष)
अलङ्कार	-	अनुप्रास, परिकर तथा स्वभावोक्ति अलङ्कार
छन्द	-	अनुष्टुप् छन्द

विशेष - प्रस्तुत पद्य में 'भारतानां' आदि पदों का साभिप्राय प्रयोग होने से परिकर अलङ्कार है। राजा के स्वभाव का वर्णन होने से स्वभावोक्ति अलङ्कार है। शान्तरस, प्रसाद गुण, सात्वती वृत्ति तथा वैदर्भी रीति है।

किं नु सत्यमिदं स्वप्नः सा भूयो दृश्यते मया।
अनयाप्येवमेवाहं दृष्टया वञ्चितस्तदा ॥१७॥

अन्वयः- इदं किं नु सत्यम् (अथवा) स्वप्न (वर्तते)। सा मया भूयः दृश्यते, अहं तदा अपि एवम् दृष्टया अनया वञ्चितः (जातः)।

सन्दर्भ - प्रस्तुत पद्यांश महाकवि भास रचित 'स्वप्नवासवदत्तम्' के षष्ठांक से अवतरित है।

प्रसङ्ग– राजा उदयन के द्वारा जब अवन्तिका और चित्रफलक का सादृश्य देखा जाता है तब वह कहते हैं -

अनुवाद - यह यथार्थ है अथवा स्वप्न ? उसे (समुद्र गृह में देखी गयी वासवदत्ता को) फिर से मैं देख रहा हूँ। इसी प्रकार देखी जाती हुई इस (वासवदत्ता) से मैं तब भी ठगा गया था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

दृष्टया	–	दृश+क्त+टाप् (तृतीया एकवचन)
वञ्चितः	–	वञ्च्+क्त
अलङ्कार	–	अनुप्रास, अर्थापत्ति एवं सन्देह अलङ्कार
छन्द	-	अनुष्टुप् छन्द

विशेष - व्यंग्यार्थ की प्रतीति होने से उत्तम काव्य है। 'किम्' के द्वारा अन्यार्थ की प्राप्ति होने से अर्थापत्ति अलङ्कार भी है। शृंगार रस, माधुर्य गुण, कैशिकी वृत्ति तथा वैदर्भी रीति है। भावों का उदात्त निरूपण है।

मिथ्योन्मादैश्च युद्धैश्च शास्त्रदृष्टैश्च मन्त्रितैः।
भवद्यत्नैः खलु वयं मज्जमानाः समुद्धृताः ॥१८॥

अन्वयः - मिथ्योन्मादैः च युद्धैः च शास्त्रदृष्टैः मन्त्रितैः च भवद्यत्नै मज्जमानाः वयं खलु समुद्धृताः।

सन्दर्भ - यह पद्य महाकवि भास के द्वारा विरचित 'स्वप्नवासवदत्तम्' के षष्ठाङ्क से अवतरित है।

प्रसङ्ग- यौगन्धरायण राजा उदयन और वासवदत्ता को दूर करने का कारण स्वयं को मानकर अपराधी बतलाता है और राजा से क्षमा मांगता है। तब राजा उदयन कहते हैं कि आप वास्तव में यौगन्धरायण है -

अनुवाद - मिथ्या उन्मत्त आचरण और (वीरतापूर्ण) युद्धों के द्वारा, शास्त्र-विहित मन्त्रणाओं/विचारों के द्वारा, आपके द्वारा किये गये प्रयत्नों से डूबते हुये हम निश्चय ही उद्धृत् अर्थात् निकाल लिये गये हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

मिथ्योन्मादैः	–	मिथ्या-कल्पितः उन्मादः तैः (मध्यम पदलोपी समास)
समुद्धृता	–	सम्+उद्+धृ+क्त
अलङ्कार	-	अनुप्रास अलङ्कार
छन्द	-	अनुष्टुप् छन्द

विशेष - इस श्लोक में व्यंग्यार्थ की प्रतीति होने से यह भी उत्तमकाव्य है। इस पद्य में यौगन्धरायण की प्रशंसा की गयी है। उदयन के सम्पूर्ण राज्य का भार यौगन्धरायण धारण करता है। अतः उसका **'यौगन्धरायण' यह नाम अति सार्थक है। भरतवाक्यम्**

इमां सागर पर्यन्ता हिमवद्विन्ध्यकुण्डलाम्।
महीमेकातपत्राङ्कां राजसिंहः प्रशास्तु नः ॥१९॥

अन्वय - नः राजसिंहः इमां सागरपर्यन्तां हिमवद्विन्ध्य कुण्डलाम् एकातपत्राङ्कां महीं प्रशास्तु ॥

सन्दर्भ - प्रस्तुत अन्तिम पद्य भरतवाक्य है जो भास रचित 'स्वप्नवासवदत्तम्' के षष्ठ अङ्क का अन्तिम पद्य है।

प्रसङ्ग- इस श्लोक में नाटक की समाप्ति पर भरत वाक्य का कथन किया गया है। महाराज उदयन के निर्विघ्न एकछत्र चिह्न से युक्त पुथिवी के पालन करने की कामना की गयी है।

अनुवाद - हमारे राजाओं में अत्युत्तम राजा (उदयन), सागर पर्यन्त फैली हुई, हिमालय पर्वत तथा विन्ध्य पर्वत रूपी कुण्डलों को धारण करने वाली, एक छत्र चिह्न वाली पृथ्वी का पालन करें।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

सागरपर्यन्तां	–	सागराः पर्यन्तः यस्याः सा ताम् (बहुव्रीहि समास)
एकातपत्रांकम्	-	एकम् आतपत्रम् एव अंको यस्याः सा ताम् (बहुव्रीहि समास)
हिमवत्विन्ध्य कुण्डलाम्	-	हिमवान् विन्ध्यः च कुण्डले यस्याः ताम् (बहुव्रीहि समास)
अलङ्कार	-	अनुप्रास तथा रूपक अलङ्कार
छन्द	-	अनुष्टुप् छन्द
भरतवाक्यम्	-	भरतानां नटानां वाक्यमिति भरतवाक्यम् ।

भरतमुनि से सम्बन्धित होने के कारण अभिनयकर्ता भी भरत कहलाते हैं। नाटक की समाप्ति पर सभी अभिनयकर्ता संयुक्त रूप से एक भरत वाक्य कहते हैं जिसमें राजा के लिये शुभाशीष कहे जाते हैं और मङ्गल की कामना की जाती है।

भरत वाक्य माङ्गलिक श्लोक तथा प्रशस्ति भी कहलाता है। इसे निर्वहण सन्धि का अङ्ग माना जाता है। दशरूपक में प्रशस्ति का लक्षण दिया गया है - 'प्रशस्ति शुभशंसनम्'।। इसलिये भरतवाक्य प्रशस्ति भी कहलाता है।

19.5 पारिभाषिक शब्दावली

1. **सूत्रधार** – सूत्रधार के द्वारा नाटक की प्रस्तावना प्रस्तुत की जाती है। यह अन्य पात्रों को अभिनय सम्बन्धी निर्देश देते हुए उनके मध्य सामञ्जस्य बनाये रखता है।
2. **विदूषक** – विदूषक मुख्य नायक का सहायक होता है। यह दर्शकों का मनोविनोद करने में कुशल होता है।
3. **विषकम्भक -** नाटक में अतीत और भविष्य की घटनाओं की सूचना विषकम्भक के द्वारा प्रदान की जाती है।
4. **अङ्कास्य -** अङ्क के अन्त में पात्रों के द्वारा किसी ऐसे तथ्य की सूचना दी जाये जिससे कि अगले अङ्क का आरम्भ होता है।
5. **नान्दी -** नाटक की निर्विघ्न समाप्ति के लिये सर्वप्रथम देव स्तुति की जाती है उसको नान्दी कहा जाता है। इसे मङ्गलाचरण भी कह सकते हैं। यह तीन प्रकार का होता है आशीर्वादात्मक, नमस्कारात्मक एवं वस्तुनिर्देशात्मक।
6. **प्रवेशक** – प्रवेशक के द्वारा दो अङ्कों के बीच में भूत एवं भविष्य की घटनाओं की सूचना दी जाती है परन्तु प्रवेशक पात्र अधम श्रेणी का होता है। अतएव प्रवेशक का प्रयोग अङ्क के आरम्भ में नहीं किया जाता है।

19.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

लघुरात्मक प्रश्न

1. बद्धमूल प्रेम का त्याग क्यों कठिन बतलाया गया है?
2. राजा उदयन ने अपना मुख अश्रुयुक्त होने का क्या कारण पद्मावती को बतलाया?
3. अमात्य रुमण्वान् की सैन्य प्रबन्ध कैसा था ?
4. यौगन्धरायण का हृदय क्या सोचकर आशङ्कित हो रहा है?
5. वृक्ष और लोक का कौनसा तुल्य धर्म बतलाया गया है?
6. 'विज्ञातारस्तु दुर्लभाः।' यह कथन किसका है?
7. विदूषक के द्वारा पद्मावती की क्या क्या विशेषता बतलायी जाती है ?
8. राजा उदयन मधुकरों को डराने से क्यों मना करते हैं?

9. पद्मावती को उदासीन सा क्यों लगता है?
10. राजा उदयन घोषवती वीणा को प्राप्त करके क्या विचार व्यक्त करते हैं ?
11. राजा उदयन और वासवदत्ता के सम्बन्ध पर प्रकाश डालिये?
12. कायर और साहसी व्यक्ति में क्या अन्तर बतलाया गया है?
13. छठे अङ्क का सारांश लिखिये?
14. राजा उदयन को वासवदत्ता का स्पर्श अनुभव कैसे होता है ?

निबन्धात्मक प्रश्न

1. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के रचयिता भास का काल निर्धारण कीजिये?
2. महाकवि भास की नाट्य-कला का वर्णन कीजिये।
3. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक की समीक्षा कीजिये?
4. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक का नामकरण "स्वप्नवासवदत्तम्" क्यों किया गया है? युक्तिसहित समझाइये।
5. 'स्वप्नवासवदत्तम्' का नायक उदयन की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये?
6. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के आधार पर वासवदत्ता की चारित्रिक विशेषताओं को सोदाहरण समझाइये?

19.6 सारांश

चतुर्थ अङ्क में शरद् ऋतु में पद्मावती एवं वासवदत्ता क लतकुञ्ज में प्रस्थान, उसी समय राजा उदयन का विदूषक के साथ लताकुञ्ज में प्रवेश, विदूषक के द्वारा उदयन से वासवदत्ता एवं पद्मावती के विषय में प्रश्न तथा उदयन का वासवदत्ता की स्मृति में विलाप इत्यादि वर्णित है। पञ्चम अङ्क में भाग्यवशात् वासवदत्ता का राजा उदयन को पद्मावती समझकर उनके समीप में लेट जाना, राजा उदयन का स्वप्न में वासवदत्ता को देखना, वासवदत्ता का राजा को पहचानकर वहाँ से भाग जाना तथा राजा के द्वारा उसका पीछा करने का तथा उदयन के सेनापति रूमण्यवान् के द्वारा शत्रु आरूणि पर आक्रमण का वर्णन है।

19.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. स्वप्नवासवदत्तम् व्याख्यार- डॉ. जगन्नारायण पाण्डेय, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर ,2000.
2. Svapnavasavadatta of Bhasa – M.R. Kale, MLBD publication, Delhi, 1998.
3. Svapnavasavadattam or Dream Reality of Vasavadatta, Kireet Joshi, Auroville Press, Tamilnadu 2014.
4. Thirteen Plays of Bhasa; translated into English, A.C. Woolner & Lakshman Sarup, MLBD, Delhi ,2015.
5. स्वप्नवासवदत्तम् , डॉ. रामदेव साहू, श्याम प्रकाशन, जयपुर ,1986.
6. स्वप्नवासवदत्तम् , व्याख्या०श्रीकृष्ण ओझा- अभिषेक प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर ,2005.
7. स्वप्नवासवदत्तम्, व्याख्या० प्रो. सुभाष वेदालंकार, अलंकार प्रकाशन, जयपुर, 2009.
8. भासकृत स्वप्नवासवदत्तम् , व्याख्या० डॉ. रूपनारायण त्रिपाठी, हंसा प्रकाशन, जयपुर 1996.